सं० १　　　　ओ३म्

आर्य यन्त्री

तथा

दर्शयितृ

१९०३ ई०

पञ्जाबदेशान्तर्गत कर्णाल आर्य्यसमाजेन प्रकाशिता

* * *

विनिर्मिताज्यौतिषतन्त्रतत्वं, विभाव्यपञ्चाङ्गसुरीत्यभावात् ।
त्रिखाङ्कभू(सन् १९०३)वर्षयथार्थवृत्तप्रबोधिकायन्त्रितयन्त्रिकेयम् ॥
हृद्याऽनवद्या बहुसारगर्भा, विलोकनीया च समैरवश्यम् ।
लोकोपकृत्यै प्रकटीकृताया अथार्यवर्गैः प्रगुणी कृता च ॥

[पं० भीमसेन शर्म्मा]

अजमेरस्थवैदिकयंत्रालये मुद्रिता

सर्वाधिकाराः स्वाधीन एव रक्षिताः

१००० प्रति]　　[मूल्य ।-) बिना डाकव्यय

SCERT

सस्ते पुस्तक।

सामवेदभाष्य का पूर्वार्ध समाप्त हो गया। कमीशन छोड़कर डाकसहित ४)

मनुस्मृतिभाषानुवाद १।।) सजिल्द १।।।) सुनहरी छापा ५)

श्वेताश्वतरोपनिषद्भाष्य दर्शनीयभाष्य है अबतक संस्कृत और भाषा में ऐसा भाष्य दूसरा नहीं बना है मूल्य ।-)

दयानन्दतिमिरभास्कर का उत्तर "भास्करप्रकाश" २।=) कमीशन छोड़कर २)

मूर्तिप्रकाशसमीक्षा =)

दिवाकरप्रकाश ।)

विदुरनीति भाषाटीकासह०।-)सजिल्द।≡)

श्लोकयुक्त वैदिक निघण्टु ≡)

वेदप्रकाश मासिकपत्र के प्रथम भाग १ वर्ष का ।।=)द्वितीय ।।=) तृतीय ।।=) चतुर्थ ।।=) चारोंभाग साथ कमीशन काटकर २) सजिल्द २।)

संस्कृत स्वयंसिखाने वाली संस्कृतभाषा प्रथम पुस्तक)।। द्वितीय पुस्तक -) तृतीय पुस्तक =)।। चतुर्थ ।=) चारों की कच्ची जिल्द ।।≡)पक्की जिल्द ।।।)

ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दूपरागे द्वितीयोंऽशः -)।।।

नियोगनिर्णय =)

अज्ञाननिवारण मूल्य -)।।

मुक्ति और पुनर्जन्म -)।।

सत्यार्थप्रकाशसङ्ग्रह बालकों को ≡)

वैदिकदेवपूजा प्रसिद्ध व्याख्यान -)

ईश्वर और उस की प्राप्ति -)

नमस्ते पर व्याख्यान)।

चाणक्यनीतिसार भाषा टीका -)।

प्रश्नोत्तररत्नमाला -)

भजनेन्दु-नयेछहतालीभजनोंसहित -)

नालिकाविष्कार-जिस में प्राचीन तोप बन्दूक आदि के प्रमाण हैं)।।।

आर्यसमाज के नियम नागरी ≡)। १०० सैंकड़ा, अंग्रेज़ी में ।) १०० सैंकड़ा

व्याख्यानका विज्ञापन-जो चार जगह खानापुरी करके सब उपदेशकों के काम में आता है =) १०० सैंकड़ा

पौराणिकधर्म और थियासोफ़ी)।।।

विवाह समय वर वधू के पठनीय मन्त्र अर्थसहित-इस में आर्यविवाहमङ्गलाष्टक और विवाह तथा हवन की सामग्री भी छपी है)।।

पञ्चकन्याचरित्र नियोगविषय में)।।

नागरी रीडर नं० १ मूल्य)।

नागरी रीडर नं० २ मूल्य -)

रामायण का आल्हाखन्द दूसरा भाग)।।

लावनी फूट)।

सन्ध्योपासन)। १०० का १।) ५०० का ५)

पञ्चमहायज्ञ मूल)। में दो, ।।=) के १०० और २।।) के ५०० तथा४) के १००० इकट्ठे लेकर बांटने योग्य हैं।

आर्यचर्पटपञ्जरिका प्रसिद्ध भजन)। के दो ३ आरती)। के ३ पुस्तक ।=) के १००

२।।) में ।।) और १०) में ३) कमीशन छोड़े जायंगे। सर्वसाधारण को सामवेद उपनिषद्भाष्यादि पारमार्थिक और लौकिक सुधार के पुस्तक लेने का अच्छा अवसर है॥

पता—तुलसीराम स्वामी—मेरठ

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

विषय सूचीपत्रम्।

सं०	विषयः	पृष्ठांक
१	राजकार्य्यावकाशदिवसाः	(क)
२	निवेदन	(ख)
३	दिवस तथा मास	१
	सप्ताह दिन विषयक अन्वेषण	१
	वर्षान्तर्गतमाससम्बन्धी विचार	७
४	नक्षत्र तथा राशि	१५
५	कल्प वा सृष्टि संवत्	१६
६	प्रचलित संवत्	२०
७	यंत्री १९०३ ई०	२१
८	व्यायाम	२२
९	चित्र अष्टादश मुद्गर कला	४५
१०	नव मुद्रित पुस्तकानि	४५॥
११	भारत वर्षान्तर्गत आ० प्र०नि० सभानां संक्षेप वृत्तान्तः	४६
१२	उपदेशकों की सूची	५२
१३	समाजों की सूची	५४
१४	अनाथालय	६७
१५	संस्कृत पाठशाला	७०
१६	पुत्री पाठशाला	७७
१७	वैदिक यन्त्रालय	७८
१८	आर्य्य समाचार पत्र तथा पुस्तक विक्रेता	८०
१९	आर्य्य मन्दिर तथा पुस्तकालय	८२
२०	अन्य आश्रम	८५
	१ नागरीप्रचारिणी सभा काशी	८६
	२ गान्धर्वमहाविद्यालयलाहौर	८७
	३ बालविधवा विवाह सभा	८७
	४ वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा मुम्बई—	८८
२१	महाराणी मन्दालसाका जीवन चरित्र—	९०
२२	प्राचीन वैदिक सम्बन्धिशिक्षा तथा गुणकारी औषध	११२
	१ चन्द्र प्रभा वटि	११२
	२ गर्भिणी का प्रति मास कर्तव्य	११२

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज कृत ग्रन्थों का मूल्य घट गया।

आर्य्योद्देश्य रत्नमाला	)।
पंचमहायज्ञविधि	–)॥
संस्कार विधि	॥)
ऋग्वेद भाष्य कमीशन काटकर	३०)
यजुर्वेद भाष्य कमीशन काटकर	१३॥)
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	१।)
संस्कृत वाक्य प्रबोध	–)
आर्य्याभिविनय	≡)
व्यवहारभानु	=)
भ्रान्तिनिवारण	–)
शास्त्रार्थ काशी	)॥।
शास्त्रार्थ फीरोजाबाद	–)॥
हवन मन्त्र	)।
सत्यार्थप्रकाश कागज घटिया	१॥)
” ” ” बढिया	२)
वेदान्तिध्वान्तनिवारण	)॥।
वेदाङ्ग प्रकाश	३॥।)॥।
धातुपाठ	।)
गणपाठ	≡)
निघण्टु	।)
निरुक्त	॥=)
अष्टाध्यायी मूल	≡॥
चारों मूलवेद स्वर्णाक्षर	२५)
साधारण श्वेत कागज	५)
बढिया ” ”	५॥)
चारों वेदों की अनुक्रमणिका	१॥)
शतपथ ब्राह्मण (छप रहा है)	

मिलने का ठिकाना—

प्रबन्धकर्त्ता
वैदिक यंत्रालय अजमेर

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

आर्य्ययंत्री

राजकार्य्यावकाश दिवसाः (अदालतों की छुट्टियों की सूची)

जनवरी

तिथि	दिन	छुट्टी
१	बृ	नौरोज़ व ईद छोटी
२-८	शु-बृ	दिल्ली दर्बार राज्याभिषेक
१२	चं	लोहड़ी

फ़र्वरी

तिथि	दिन	छुट्टी
२	चं	बसंत ५
२६	बृ	शिवरात्रि

मार्च

तिथि	दिन	छुट्टी
१०,११	मं, बु	बड़ीईद
११ १३	बु-शु	होली

जून

तिथि	दिन	छुट्टी
६	श	निर्जला ११
९	मं	१२ वफात

जुलाई

तिथि	दिन	छुट्टी
९	बृ	व्यास पूजा

अगस्त

तिथि	दिन	छुट्टी
	श	सलोनो
७	र	जन्म ८

सितम्बर

तिथि	दिन	छुट्टी
[illegible]	श	अनन्त १४
२१	चं	सो० अमावस

आवश्यकता

:o:

हम निम्नाङ्कित दो पुस्तक बनवाना चाहते हैं, रचयिता को योग्य पुरस्कार दिया जायगा

१ दयानन्द दिग्विजय-जिसमें संस्कृत गद्य पद्य रीति से महार्षि दयानन्द का जीवन चरित्र होगा पुस्तक रचना में परमोत्तम अत्युक्ति से रहित और सत्य वृत्त से पूरित होना चाहिये ॥

२ आर्य्य तेवहार-इसमें वर्तमान हिन्दू तेवहारों की व्युत्पत्ति प्राचीन तेवहारों का वर्णन नागरी भाषा में शास्त्रोक्त प्रमाणयुक्त किया जावेगा ॥

सूचना

आर्य्य यंत्री तथा दर्शयितृ का मूल्य विना डाकव्यय उर्दू ।) और नागरी ।-) और कमीशन १० से २५ प्रति तक १५) सैकड़ा ५० तक २०) और अधिक पर २५ सैकड़ा नियत है ॥

विज्ञापन देने के दाम एक पृष्ठ के उर्दू ४) और नागरी ५) हैं, १) से न्यून नहीं लिया जावेगा ॥

सम्पूर्ण पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें:-

कृष्ण स्वरूप मन्त्री
आर्य्यसमाज कर्णाल
(पंजाब)

अप्रेल

तिथि	दिन	छुट्टी
३१मा. से ९ अप्रेल	मं-बृ	मुहर्रम
४	श	दुर्गा ८
६	चं	राम ९
१०-१३	शु-चं	गुडफ्राइडे
१२	र	चंद्रग्रहण
१३	चं	वैशाखी
२७	चं	सो० अमावस

मई

तिथि	दिन	छुट्टी
२४	र	विक्टोरियाडे
२७	बु	आखिरीशम्बः
३०	श	एडवर्ड ७ जन्म दिन

अक्तूबर

तिथि	दिन	छुट्टी
२८सि० १अक्तू	चं-बृ	दशहरा
७	बुध	चन्द्रग्रहण
१९, २०	चं,मं	दीवाली
२२	बृ	यमद्वितीया
३१	श	देवउठान

नवेम्बर

तिथि	दिन	छुट्टी
५	बृ	टुकड़ी
६	शु	शबूबरात

दिसम्बर

तिथि	दिन	छुट्टी
१८	चं, मं	जुवलविदा
२१,२२	शुक्र	छोटी ईद
२४से ३१	बु-बृ	बड़ादिन

☞ इन से अतिरिक्त प्रति रविवार और काम कम होने पर हरमास के अन्तिम शनिवार को भी छुट्टी होगी ॥ इस वर्ष में एक सूर्य्यग्रहण और दो चन्द्रग्रहण २९ मार्च १२ अप्रेल, और ७ अक्तवर को यथाक्रम होंगे ॥

निवेदन

परम पिता परमात्मा का धन्यवाद है कि आज हम आर्य्य यंत्री को नागरी में अपने पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत करते हैं। विदित हो कि आर्य्य यन्त्री उर्दू में १८६६ ई० से मुद्रित होती है परन्तु संयुक्त प्रदेश, बङ्गाल, राजस्थान, मध्य प्रदेश, मुम्बई, गुजरात आदि प्रान्तों में अधिकतर नागरी का प्रचार होने से तत्रस्थ आर्य्य समाजों को इस से कुछ विशेष लाभ नहीं पहुंचा, अतएव बहुत से मित्रादिकों विशेष कर श्रीमान् सेठ श्यामलाल जी आगरा निवासी तथा लाला अमीचन्द दुसाज मन्त्री आर्य्य समाज बहरायच के अनुरोध से हम ने १९०२ की उर्दू आर्य्य यन्त्री में निवेदन किया था कि यदि कोई अन्य समाज नागरी यन्त्री का भार अपने ऊपर ले लेवे तो दोनों काम बहुत उत्तमता से पूरे हो सकेंगे और लिखा था कि इसकी तीन मास तक हम प्रतीक्षा करेंगे परन्तु नियत समय से भी एक मास व्यतीत हो जाने पर जब कोई समाज इस कार्य्य के लिये उद्यत नहीं हुआ तो नागरी यन्त्री का काम भी हमें ही करना पड़ा, बस यहही नागरी यन्त्री मुद्रित करने का मुख्य कारण है॥

(२) यह विचार है कि इस आवृत्ति में पिछली उर्दू यन्त्रियों के उत्तम२ लेख प्रकाशित कर दिये जावें, तथाच इस वर्ष भी "दिवस तथा मास" और "व्यायाम" विषयक लेख संग्रहीत कर के दिये गये हैं यही कारण है कि उर्दू यंत्री का "मनुस्मृति में प्रक्षिप्तता" और "डाकघर सम्बन्धी नियम" वाले लेख नागरी में नहीं छप सके शेष सब समान हैं परन्तु आगामी में एकसा करने का यत्न किया जावेगा॥

(३) यन्त्री में समाज के प्रसिद्ध पुरुषों की मरण तिथि संस्कृत गणित से लिखी गई है अतः पाठकों के सूचनार्थ तीन प्रसिद्ध पुरुषों की मरण तिथि नीचे लिखते हैं:—

महर्षि स्वा० दयानन्द सरस्वती—कार्त्तिक वदि अमावस सं० १६४० वि० (३० अकतूबर १८८३ ई०) पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए० चैत्र वदि १४ (प्रविष्टा ८) १९४७ वि० बुधवार (१६ मार्च १८९०) पं० लेखराम आर्य्य मुसाफिर—फाल्गुन सुदि ३ सं० १९५३ वि० शनिवार (६ मार्च १८६७ ई०)

(४) व्यवहार सम्बन्धी विज्ञापनादि के हम उत्तरदाता नहीं हैं परञ्च यन्त्री विषयक अन्य किसी प्रकार की अप्रसन्नता यदि किसी को हो तो सीधा हम को लिखे॥

(५) अन्त में हम भारतवर्षीय समस्त आ० प्र० नि० सभाओं तथा आर्य्य समाजों के मन्त्री महाशयों और अन्य भद्रपुरुषों का जिन्हों ने यन्त्री की पूर्त्ति में अनेक प्रकार से सहायता दी है हार्दिक धन्यवाद देते हैं॥

कर्णाल (पञ्जाब)
मिति कार्तिक वदी ५
सं० १९५९ वि० मंगलवार

कृष्णास्वरूप मन्त्री
आर्य्य समाज

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

ओ३म्

दिवस तथा मास *

(महाशय शालिग्राम आर्य्य प्रयागनिवासी लिखित)

यदि दीर्घदृष्टि से देखा जाय तो किसी भाषा के शब्द ही उस के पूर्ण वा अधूरे होने वा उस जनपद की जिसकी वह भाषा है सभ्यता के आरम्भ को सूचित करते हैं। हम इस लेख में अन्य बातों पर दृष्टि न देकर केवल सप्ताह के दिनों तथा वर्षान्तर्गत महीनों को लक्ष्य में रख कर अपने पाठकों को दिखलावेंगे कि संस्कृत से अतिरिक्त अन्य मुख्य भाषाओं में जो साम्प्रत एतद्देश में प्रचलित हैं, सप्ताह के दिनों तथा वर्षान्तर्गत महीनों का जो प्रथम नामकरण संस्कार हुआ वह कहां तक उनकी भ्रान्ति और ज्योतिषविद्या (जिसका इस से विशेष सम्बन्ध है) अनभिज्ञता को प्रकट करते हैं और इस के विरुद्ध हमारी संस्कृत पवित्र देववाणी में जिसको सारे भूगोल की विद्याओं के स्रोत होने का सन्मान और प्रतिष्ठा-प्राप्त है, दिनों तथा महीनों के जो नाम रक्खे गए हैं वे कैसे विद्यासम्बन्धी नियम से युक्त हैं और किस उत्तमता के साथ अपने नाम ही से अपने वृत्तान्त की पूरी २ सूचना देते हैं ॥

सप्ताहदिनविषयक अन्वेषण

इस विषय में आर्य्यों के नियम से केवल इतनी समानता पाई जाती है कि-
(१) प्रत्येक देशनिवासियों ने सात ही दिन माने हैं, कहीं छः वा आठ दिन नहीं होते।
(२) प्रत्येक दिन का एक २ ग्रह से सम्बन्ध है जिनके नाम उनके साथ आगे दिये जावेंगे। मानो संस्कृत नियमों का एक प्रकार से अधूरा अनुकरण किया गया है क्योंकि उनके यहां दिनों के जो नाम रक्खे गए हैं उनके अन्वेषण से उनके बनानेवालों के विचित्र विचारों का परिचय होता है जिसको हम पाठकों के ज्ञानार्थ कुछ स्फुटता से नीचे लिखते हैं ॥

---

* यह लेख दो भाग में १९०१ और १९०२ की उर्दू आर्य्य यन्त्री में प्रकाशित हो चुका है, यहां उसका उल्था कुछ न्यूनाधिक करके दिया गया है ॥ सम्पादक

SGDF

सब से पूर्व अङ्गरेज़ी दिनों के नाम और उनकी व्युत्पत्ति लिखी जाती है। ज्ञात हो कि इस का सप्ताह संस्कृत के सदृश आदित्यवार से आरम्भ होता है और सारे नाम सैक्सन † (Saxon) भाषा के नामों से ग्रहण किये गए हैं ॥

दिन का नाम	**दिन सम्बन्धी ग्रह**	**व्युत्पत्ति**
सण्डे (Sunday)	सन (सूर्य्य)	यह सन्सडे (Sun's day) का समास है अर्थात् सूर्य्य देवता की पूजा का दिन।
मण्डे (Monday)	मून (चन्द्र)	इस शब्द का प्राकृत स्वरूप मून्सडे (Moon's day) था चन्द्रमा देवता की पूजा का दिन।
ट्यूज़डे (Tuesday)	मार्स (मङ्गल)	युद्ध के देवता ट्यू की पूजा का दिन।
वेड्नेस्डे (Wednesday)	मर्क्युरी (बुध)	इस की प्रकृति वोडेन्सडे (Woden's day) है अर्थात् वायु के देवता वोडन नामक की पूजा का दिन। किसी २ ने इसे भी युद्ध का देवता लिखा है।
थर्सडे (Thursday)	ज्युपिटर (बृहस्पति)	यह शब्द थौर्सडे (Thor's day) है अर्थात् मरुत (तूफ़ान) देवता थौर की पूजा का दिन। यह देवता वोडेन का पुत्र है।
फ्राइडे (Friday)	वीनस (शुक्र)	प्राकृत स्वरूप से यह शब्द फ्रीगाज़डे (Friga's day) है अर्थात् विवाह की देवी फ्रीगा की पूजा का दिन। यह देवी वोडेन देवता की स्त्री है। कोई २ उस को फ्राया की पूजा का दिन कहते हैं जो वृक्षों में फल लाने वाली देवी कही जाती है।
सैटरडे (Saturday)	सैटर्न (शनैश्चर)	कृषी के देवता सेटर्न (Saturn) की पूजा का दिन। यह एक विशेष प्रधान देवताओं में है और कोइलस (आकाश) और टेरा (पृथिवी) के देवताओं का पुत्र है। और

---

† प्रचलित अंगरेजीभाषा (Modern English) उर्दू वा फ़ारसी के सदृश बहुत सी प्राचीन भाषाओं से मिलकर बनी है, जिस में एङ्गलो सैक्सन (Anglo Saxon) भी सम्मिलित है ॥

SGDF

ज्युपिटर का पिता कहा जाता है जो यूनानियों का देवता है ।

लेटिन, फ्रेञ्च, यूनानी, जर्मनादि सर्व पश्चिमी भाषाओं में कुछ २ अक्षर व्यत्यय करके प्रायः यही नाम हैं और ऐसे ही नियम पर निर्भर हैं ॥

पाठकगण ! इस व्युत्पत्ति से स्वतः ही निर्णय करलें कि इन नामों के रखनेवाले कैसे भ्रान्तमतावलम्बी थे और इस व्युत्पत्ति के अनुसार इन दिनों के नाम का ज्योतिष विद्या से जो उन का वास्तविक आधार है कहां तक सम्बन्ध प्रतीत होता है । इस के अतिरिक्त इन कल्पित देवता और देवियों में से कोई किसी का पिता, कोई किसी का पुत्र और कोई किसी का स्त्री कही गई है । यह ठीक इसी प्रकार है जैसे इस समय हिन्दुओं में शिव गणेश परस्पर पिता पुत्र तथा लक्ष्मी विष्णु दम्पती कहे जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत युद्ध के पश्चात् जब आर्य्यसन्तान अविद्यावश होकर ३३ क्रोड़ कल्पित देवताओं की विश्वासी हुई तो उस समय बहुत सी असभ्य पश्चिमी जातियों पर भी इन के अनुकरण का प्रभाव पड़ा, जिन की स्वभाषा के शब्द ही मुक्त कण्ठ हमारे इस विचार की पुष्टि करते हैं ॥

अब अरबी दिनों की व्युत्पत्ति सुनिये

विदित हो कि किसी २ पुस्तक में इस के सप्ताह का प्रथम दिन फार्सी दिनों के अनुबन्ध से शनैश्चर लिखा है और आदित्यवार को अन्त में । परन्तु यह क्रम अयुक्त है क्योंकि इस में आदित्यवार का नाम ही "यौमुल अहद" अर्थात् "प्रथम दिवस" है॥

दिन का नाम	दिन सम्बन्धी ग्रह	व्युत्पत्ति
यौमुल अहद	शम्स (सूर्य्य)	सप्ताह का प्रथम दिन
„ अस्नैन	क़मर (चन्द्र)	„ „ दूसरा „
„ सुल्स	मिर्रीख़ (मङ्गल)	„ „ तीसरा „
„ अर्बः	अतारद (बुध)	„ „ चौथा „
„ ख़म्स	मुशतरी (बृहस्पति)	„ „ पांचवां „
„ जुमअः	ज़ोहरा (शुक्र)	जुम्मे का अर्थ जमा (एकत्र) होना है । इस दिन अरब निवासी एकत्र होकर इबादत (उपासना) किया करते थे तथा स्वमतसम्बन्धी व्याख्यान सुना करते थे इस कारण यह नाम रक्खा गया ।

SGDF

यौमुल सब्त्	ज़ुहल (शनैश्चर)	सब्त के अर्थ अरबी कोश में जो पाए जाते हैं वह ऐसे असम्बद्ध हैं कि तदनुकुल इस नाम की व्युत्पत्ति का निश्चय करना अतिकठिन है । सब्त शब्द इब्रानी भाषा का है जिस का धात्वर्थ " विश्राम करना " है, जिस कारण ईश्वर ने ६ दिन में सृष्टि को रचकर सातवें दिन विश्राम किया था अतः उसको मुबारिक (शुभ) दिन समझा जाता है। यहूदी लोग सब्त का दिन शनिवार को समझते हैं, परन्तु ईसाई आदित्यवार को " योमुल सब्त " मानते हैं । जिस प्रकार मुहम्मद साहिब ने अपने पुस्तक (क़ुरान) के लिखने में बहुधा यहूदी लेखों से सहायता ली है उसी प्रकार अरबी दिनों में यौमुलसब्त को शनैश्चर का दिन ठहराना यहूदियों के अनुकरण का दूसरा प्रमाण है । मैडम ब्लैवट्स्की (Madam Blavatsky) यौमुलसब्त का अर्थ सातवां दिन नहीं मान्ती किन्तु सातों दिनों का नाम यौमुलसब्त कहती है अर्थात् विचारानुसार यदि इस सिद्धान्त को यथार्थ चरितार्थ किया जावे तो ७ दिन काम करके सात ही दिन विश्राम करना चाहिये॥

उपर्युक्त कथन से प्रकट है कि इन नामों के नियत करने वाले भी ज्योतिष विद्या से सर्वथा शून्य थे। केवल कार्य्यसिद्ध्यर्थ कुछ नाम तो यथासंख्य रखलिये थे और एक का नाम मनुष्यों के एकत्र होने पर रक्खा गया और अन्तिम दिन यहूदियों के अनुकरण में " विश्राम का दिन " शब्द मात्र रखलिया यद्यपि उसको चरितार्थ नहीं किया गया ॥

अब फ़ारसी दिनों पर विचार किया जाता है:—

फ़ारिसनिवासी समस्त भूगोल के नियम से विरुद्ध सप्ताह का आरम्भ शम्बः अर्थात् शनैश्चर से करते हैं। उनके दिनों के नाम और व्युत्पत्ति नीचे लिखी जाती है ॥

SGDF

दिन का नाम	दिन सम्बन्धी ग्रह	व्युत्पत्ति
शम्बः	कैवान (शनिश्चर)	शम्बः के धात्वर्थ का कोश में कहीं पता नहीं लगता, केवल इतना लिखा है कि सप्ताह का प्रथम दिन वा शनैश्चर। यह ज्ञात होता है कि यह शब्द संस्कृत के शनिवार का अपभ्रंश है जिसका अर्थ शनैश्चर का दिन है क्योंकि उभय शब्दों का उच्चारण प्रायः समान ही है अथवा कदाचित् इब्रानी भाषा के "सब्त" शब्द से बनाया गया हो।
यक शम्बः	खुर्शीद (सूर्य्य)	शम्बः अर्थात् शनिश्चर के अनन्तर प्रथम दिन।
दो शम्बः	माह (चन्द्र)	अनन्तर प्रथम दूसरा दिन
सेह ,,	बहराम (मङ्गल)	,, ,, तीसरा ,,
चहार ,,	तीर (बुध)	,, ,, चौथा ,,
पञ्ज ,,	बर्जीस (बृहस्पति)	,, ,, पांचवां ,,
अदीनः	नाहीद (शुक्र)	इस शब्द के धात्वर्थ का भी कोश में खोज नहीं मिलता अतः इसकी व्युत्पत्ति निश्चय न हो सकी।

गत यंत्र से प्रतीत होता है कि उन्हों ने भी अरबनिवासियों के अनुसार पांच दिन तो यथासंख्य रक्खे हैं, एक दिन संस्कृत अथवा इब्रानी से लिया है और एक की व्युत्पत्ति का पता नहीं ॥

अब संस्कृत दिनों के नाम और व्युत्पत्ति वर्णन की जाती है ॥

विदित हो कि संस्कृत में दिनों के नाम सात ग्रहों के नाम पर रक्खे गये हैं और यही कारण है कि सात दिन होते हैं, ६ वा ८ नहीं हो सकते। उन के नाम यह हैं:— (१) रवि, सूर्य्य, वा आदित्य (२) चन्द्र वा सोम (३) मङ्गल (४) बुध (५) बृहस्पति (६) शुक्र (७) शनि वा शनैश्चर ॥

ज्योतिष विद्या के वेत्ताओं ने अपनी गणितप्रक्रियानुसार दिन और रात्रि के २४ घंटों में से प्रत्येक घण्टे* को क्रमपूर्वक इन सातों ग्रहों में से प्रत्येक ग्रह के साथ उनके

---

* घण्टे को संस्कृत में होरा कहते हैं, होरा राशि के अर्ध भाग का नाम है, दिन रात (६० घड़ी) में १२ लग्न (राशि) बीतती हैं। प्रत्येक राशि ५ घड़ी की हुई अतः होरा अर्धराशि अर्थात् ढाई घड़ी अथवा एक घण्टा हुआ ॥

SGDF

दैवी नियत गत्यनुसार सम्बद्ध किया है और उस समय वह ग्रह अधिपति वा स्वामी कहलाता है। इस गणित से प्रत्येक ६ घण्टे के पश्चात् पुनः वही ग्रह अधिपति होता है और यह शृङ्खला सदैव रात्रि दिवस चली जाती है। हम लोग दिन का आरम्भ सूर्य्य के उदय होने के काल से लेते हैं, इसलिये उस काल में जो ग्रह अधिपति होता है उसी के नाम से उस दिन का नाम पड़ता है। कल्पना करो कि आज सूर्य्योदय समय सूर्य्य ही अधिपति था तो इस कारण आज का दिन रविवार वा आदित्यवार कहलायगा। पुनः उस दिन के २५ वें घण्टे में अर्थात् कल सवेरे गणितानुसार (जिसको हम विस्तार पूर्वक आगे लिखेंगे) चन्द्र अथवा सोम अधिपति होगा, अतः कल का दिन चन्द्रवार वा सोमवार कहलायगा, इत्यादि।

प्रकट हो कि संस्कृत में ज्योतिष के विद्वानों ने इन ग्रहों का क्रम इस प्रकार नियत किया है।

मन्दामरेज्यभूपुत्र—सूर्य्यशुक्रेन्दुजेन्दवः।

(१) शनैश्चर (२) बृहस्पति (३) मङ्गल (४) सूर्य्य (आदित्य) (५) शुक्र (६) बुध (७) चन्द्र (सोम)

कल्पना करो कि आज के पहिले घण्टे में अर्थात् सूर्य्योदय समय सूर्य्य अधिपति था तो अब प्रत्येक घण्टे के क्रम से उन का निम्नलिखित विभाग होगा।

नाम ग्रह	दिन और रात के घण्टे				
आदित्यवार	पहले घण्टे में	८	१५	२२	
शुक्र	२	९	१६	२३	
बुध	३	१०	१७	२४	
चन्द्र	४	११	१८	२५	आदित्यवार का पहिला घंटा अथवा दूसरे दिन का पहिला घण्टा ॥
शनैश्चर	५	१२	१९		
बृहस्पति	६	१३	२०		
मङ्गल	७	१४	२१		

गत यंत्र से प्रकट है कि आदित्यवार को सूर्य्य पहिले आठवें पन्द्रहवें तथा २२ वें घण्टे में अधिपति रहता है। २३ वें शुक्र और २४ वें बुध होता है और दिन

SGDF

रात्रि में २४ ही घण्टे होने के कारण २५ वें घण्टे अर्थात् आदित्यवार से अगला जो दिन आवेगा उसके पहिले घण्टे में चन्द्र वा सोम अधिपति होगा अतः आदित्यवारानन्तर दिन चन्द्रवार वा सोमवार कहलावेगा। अब इसी प्रकार चन्द्र को पहिले स्थित करो और पुनः क्रमपूर्वक अन्य ग्रहों को, यथा—(१) चन्द्र (२) शनि (३) बृहस्पति (४) मङ्गल (५) आदित्य (६) शुक्र (७) बुध; और इस में उपर्युक्त रीति से क्रमपूर्वक घण्टे के अङ्क स्थित करो तो २५ वें घण्टे में मङ्गल पड़ेगा। इसलिये उस (सोमवार) से अगला दिन मङ्गलवार कहलायगा। यदि समस्त ग्रहोंके लिये यही प्रक्रिया करते चले जाओ तो उन का भी वही क्रम स्थित होजायगा जैसा हमारे सप्ताह के दिनों का है।

अब पाठकगण विचारें कि संस्कृत में जो नाम दिनों के नियत किये गए हैं वह कैसे विद्यासम्बन्धी नियम पर स्थिर हैं और उनके नियत करनेवालों ने कैसे लघु और सारगर्भित नाम रक्खे हैं और इस के विरुद्ध अन्य भाषाओं के जो नाम हैं वह किस भाव को प्रकट करते हैं ॥

वर्षान्तर्गत माससम्बन्धी विचार

प्रथम अङ्गरेज़ी महीनों के नाम तथा उनकी व्युत्पत्ति वर्णन की जाती है।

ज्ञात हो कि यह सब सौर मास कहलाते हैं और इन के नाम लेटिन भाषा से लिये गये हैं, जो रोमियों वा इटली देशनिवासियों की पूर्व भाषा है। उस देश में प्राचीन समय में वर्ष का आरम्भ मार्च मास से गिना जाता था अर्थात् उन के महीनों के नाम क्रमपूर्वक इस प्रकार थेः—

(१) मार्च (२) अप्रेल (३) मई (४) जून (५) जुलाई (६) अगस्त (७) सितम्बर (८) अक्टूबर (९) नवम्बर (१०) दिसम्बर (११) जनवरी (१२) फर्वरी ॥

इस क्रम को मन में स्थिर कर लेने से निम्नलिखित यंत्र जिस में वर्तमान* क्रम रक्खा गया है भली भांति समझ में आजावेगा।

१ जनवरी—यह लेटिन भाषा के "जेनस" शब्द से बना है जो पूर्व रोमियों का सूर्य्य और वर्ष का देवता था, यह मास उस की प्रतिष्ठा के लिये नियत था।

२ फर्वरी—यह शब्द लेटिन भाषा के शब्द "फेब्रुवेरियस" से निकला है जिस का अर्थ "कफ़्फ़ारा" (प्रायश्चित्त) है, अर्थात् पापों का प्रतीकार करके उन से

---

* अंगरेजी महीनों का वर्त्तमान क्रम (जन्वरी आदि दिसम्बरान्त) रोम (इटली) के प्रसिद्ध नृपति क़ैसर जूलियस ने ४६ वर्ष ख़ीष्टाब्द से पूर्व नियत किया था ॥

SGDF

शुद्ध होना। इटली के पूर्वनिवासी इस मास के मध्य में एक बड़ा उत्सव करके पापों के निवृत्त्यर्थ "कफ़्फ़ारा" दिया करते थे इस कारण इस मास का यह नाम हुआ।

३ मार्च—इस महीने का नाम पूर्व रोमियों के युद्ध सम्बन्धी देवता "मार्स" के नाम पर रक्खा गया है।

४ अप्रैल—यह नाम लेटिन भाषा के शब्द "एप्रिलिज़" से निकला है। एप्रिल का अर्थ उस महीने का है जिस में वनस्पति अपनी उद्भेदक शक्ति से ऋतु के परिवर्त्तन होने को सूचित करती है अर्थात् वसन्त (बहार) मास। एप्रिल (अप्रैल) वसन्त ऋतु की आदि में होता है, अतः यह नाम रक्खा गया।

५ मई—यह महीना रोमियों की देवी "मैया" के नाम पर आदरार्थ रक्खा गया है, जो "अटलस" देवता की कन्या और मर्क्युरी देवताकी माता मानी जाती थी।

६ जून—इस में अनेक मत हैं। लिखा है कि यह महीना या तो रोमियों के प्रसिद्ध सम्प्रदाय "जेन्ज़" के नाम पर रक्खा गया है अथवा "जुनो" देवी के नाम पर।

७ जुलाई—यह महीना रोम के प्रसिद्ध नृपति "जूलियस क़ैसर" के नाम पर स्मारक रुप से रक्खा गया था, जिसका इसी मास में जन्महुआ था। इस से पूर्व इसका नाम लेटिन भाषा में "क्विन्टिलिस" था अर्थात् पांचवां महीना (देखो पूर्व रोमियों के महीनों का क्रम)

८ अगस्त—यहनाम रोम के प्रसिद्ध महाराजा "औगस्टस" ने जो ईसाई संवत् से कुछ पहिले और उसके आदि में हुआ है, अपने विजय और जूलियस के स्थापित "जूलियन कैलेण्डर" (यंत्री) के परिवर्तन के स्मरणार्थ अपने नाम पर रक्खा है। इस से पूर्व इस मास का नाम लेटिन भाषा में "सेक्स्टालिस" था अर्थात् पूर्व "रोमन कैलेण्डर" (यंत्री) का छठा महीना।

९ सितम्बर—यह शब्द लेटिन भाषा के "सेप्टेम" शब्द से निकला है जिसका अर्थ "सात" है अर्थात् प्राचीन इटलीवालोंका सप्तम मास (सातवां महीना)। अनुमान है कि यहशब्द संस्कृत शब्द "सप्तम" से लिया गया है जिसका अर्थ सातवां है।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

१० अक्तूबर—यह शब्द लेटिन भाषा के शब्द "ऑक्टो" से बना है, जिस्का अर्थ आठ है, अर्थात् प्राचीन रोमियों का ८ वां महीना। अनुमान है कि यह शब्द संस्कृत के "अष्टम" से बना है।

११ नवेम्बर—यह लेटिन भाषा के "नवेम" शब्द से बना है जिसका अर्थ नौ है, अर्थात् प्राचीन इटली वालों का नवां महीना। यह शब्द भी संस्कृत "नवम" से बना अनुमान होता है।

१२ दिसम्बर—इस महीने का नाम लेटिन भाषा के "डिसेम" शब्द से बना है जिसका अर्थ १० है, अर्थात् प्राचीन रोमियों का दशवां महीना। यह शब्द भी संस्कृत "दशम" की प्रतिध्वनि है।

उपर्युक्त यंत्र से भली भांति प्रकट होगा कि कतिपय नामों का तो कल्पित देवताओं से सम्बन्ध है और कतिपय रोमियों के प्राचीन प्राकृत गणित क्रम पर। ज्योतिष् विद्या से इन नामों का किञ्चिन्मात्र सम्बन्ध नहीं है, तथापि किसी २ नाम से यह अवश्य सूचित होता है कि योरोप के अत्यन्त प्राचीन तथा "क्लासिकल लैङ्गवेज" (साहित्य) का भी अन्त में संस्कृत ही स्रोत है और इस कारण यह नाम उस (संस्कृत) की प्राचीनता को एक प्रकार प्रकाशित करते हैं॥

अब अरबी महीनों की व्युत्पत्ति सुनिये

यह सब चान्द्र मास कहलाते हैं और उनकी व्युत्पत्ति निम्नलिखित है:—

१ मुहर्रम—इस शब्द का अर्थ "हरामशुदा" त्याज्य है। प्राचीन अरबवालों में इस मास में बध वा घात करना हराम था इस लिये यह नाम रक्खा गया।

२ सफ़र—इस के विषय में विविध सम्मति हैं। लिखा है कि सफ़र (सादि) सिफर (सि आदि) से बना है, जिसका अर्थ ख़ाली (शून्य) है। इस से पूर्व मास (मुहर्रम) में बध हराम था, इस कारण इस मास में अरब वाले बधादि के लिये बाहर निकल जाया करते थे और अपने २ घरों को ख़ाली (निर्जन) छोड़ जाया करते थे, इसलिये इस महीने का सफ़र नाम हुआ। किसी का मत है कि इस मास का नाम सुफ़र (सुआदि) से बना है जिस का अर्थ ज़र्द (पीत) है, इस नाम के नियत करते समय शिशिरऋतु थी तथा वृक्षों के पत्ते ज़र्द (पीतवर्ण) थे इसलिये यह नाम रक्खा गया।

SGDF

३ रबीउलअव्वल–इस महीने का नाम नियत करते समय वसन्तऋतु का आरम्भ था इस कारण यह नाम नियत हुआ।

४ रबीउलाखिर—इस का नाम वसन्तऋतु के अन्त में रक्खा गया, इसलिये यह नाम हुआ।

५ जमादिउल्अव्वल–"जमाद" का अर्थ "जमाहुआ" है, इस मास का नाम ऐसी ऋतु की आदि में रक्खागया था, जिस समय नदियोंका जल जम गया था अतः यह नाम हुआ।

६ जमादिउलाख़िर—यह महीना उपर्युक्त ऋतु के अन्त में नियत कियागयाथा, इसलिये यह नाम हुआ।

७ रजब—यह शब्द " तर्जीब " से बना है, जिसका अर्थ ताज़ीम (सत्कार) है। अरब वाले इस मास को ख़ुदा (ईश्वर) का मास कहते हैं, इसलिये यह नाम हुआ। दूसरा हेतु इस का यह भी कहाजाता है कि मुहम्मद साहिब की ओर से यह कहावत है कि (रजब) स्वर्गलोक की एक नहर का नाम है जिसका जल बहुत उत्तम है, इस महीने के रोज़ेदारों (व्रतधारियों) को इस से जल मिलेगा।

८शाबान— यह शब्द "शाबा" से बना है जिसका रूढ्यर्थ हिस्सा (भाग) है। इस मास में अरब वालों के मन्तव्यानुसार वर्ष भर के लिये बन्दों (मनुष्यों)को रोज़ी (अन्नोदक) बांटी जाती है इस लिये यह नाम हुआ।

९रम्ज़ान— यह शब्द "रम्ज़" से बना है जिसका अर्थ " जलना " है। मुसलमानों के मन्तव्यानुसार इस महीने में पाप भस्म होते हैं और भूक तथा पिपासा से भी अपने प्राण को एक प्रकार से जलाया जाता है, इस कारण यह नाम रक्खा गया।

१०शव्वाल—यह शब्द अरब की "शवल" धातु से बना है जिसका अर्थ "उठना" है। इस मास में अरबवाले मृगयादि के लिये उठते थे इसलिये इस नामसे विख्यात हुआ।

११ज़िल्क़ाद— इस का प्राकृत अर्थ " बैठने वाला" है। अरबवालों में इस मास में भी मुहर्रम के सदृश लड़ाई झगड़ा हराम था और घरों में बैठे रहते थे, इस लिये यह नाम हुआ।

SGDF

१२जिलहिज्ज—" हिज " का अर्थ " एक बार हज करना " है। इस मास में मुसलमानों के मतानुसार एक वार हज किया जाता है इस लिये यह नाम रक्खा गया। दूसरा हेतु यह भी कहा जाता है कि" हिज" (हि आदि) का अर्थ "वर्ष " भी है और वर्ष इस मास पर समाप्त हो जाता है, अर्थात् यह मास वर्ष का साहिबेसाल (शिरोमणि) है, इस लिये यह नाम रक्खा गया।

इन महीनों की व्युत्पत्ति का हमें कुछ विशेष विवरण करने की आवश्यकता नहीं है। पाठकगण स्वयं ही विचार सकते हैं कि कैसे ऊटपटांग नियम पर स्थापित है और उनका ज्योतिष विद्या से कुछ भी सम्बन्ध नहीं ॥

अब फ़ारसी महीनों के नाम और उन की व्युत्पत्ति लिखी जाती है।

यह सब सौर मास समझे जाते हैं ॥

महीनों के नामः---(१) फ़रवरदीन, (२) उर्दीबाहिश्त, (३) ख़ुर्दाद, (४) तीर, (५) मर्दाद, (६) शहरयार, (७) महर, (८) आबान, (९) आज़र, (१०) दे, (११) बहमन, (१२) अस्फ़न्द्यार ॥

व्युत्पत्तिः- ज्ञात हो कि प्राचीन ईरान निवासियों ने प्रत्येक मास का नेता एक२ कल्पित फ़रिश्ता (देवता) नियत कररक्खा था, अतः यह १२ महीने भी उन्हीं देवताओं के नाम पर स्थापित हैं ॥

इन महीनों के नाम स्वयम् ही प्रकट हैं कि इन के नियत करने वाले कैसे असत्य सिद्धान्त के अनुयायी थे और वे सर्वथा अनभिज्ञ थे कि वस्तुतः महीने क्या हैं ? और उन का मूल किस नियम पर स्थिर होना चाहिये ? ॥

अब हम संस्कृत महीनों के नाम और उन की व्युत्पति लिखेंगे, जिस से पाठकगण स्वयमेव विचार लेंगे कि वे उपर्युक्त नामों की अपेक्षा कैसे उत्तम हैं।

ज्ञात हो कि काल विभाग भचक्र के आश्रित है। संस्कृत भाषा में यह विभाग प्रायः ४ प्रकार से है। (१) चन्द्रमान (२) सौरमान (३) सावन (४) नाक्षत्र मान, परन्तु सूर्य्यसिद्धान्त के मानाध्याय में काल विभाग नव प्रकार से वर्णित है। यथाः—

ब्राह्मं पित्र्यं तथा दिव्यं प्राजापत्यञ्च गौरवम्।
सौरञ्च सावनं चान्द्रमार्क्षं मानानि वै नव॥ १ ॥

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

अर्थात् (१) ब्राह्म (२) पित्र्य (३) दिव्य (४) प्राजापत्य (५) वार्हस्पत्य (६) सौर (७) सावन (८) चान्द्र (९) नाक्षत्र वा आर्क्ष । पुनः लिखा है कि:-

चतुर्भिर्व्यवहारोऽत्र सौरचान्द्रार्क्षसावनैः ।
वार्हस्पत्येन षष्ट्यब्दं ज्ञेयं नान्यैस्तु नित्यशः ॥ २ ॥

प्रायः ४ मानों से कार्य्य पड़ता है और वार्हस्पत्य मान से षष्ट्यब्द (६० वर्ष) समझना चाहिये । और इतर मानों के सर्वदा जानने की आवश्यकता नहीं है ।

प्रचलित ४ मानों में से (१) सौर मान वह है जो सूर्य्य के भ्रमण से लिया जाता है उसका एक पूर्ण चक्र वर्ष भर और उस के एक राशि में प्रवेश करने से नये महीने का आरम्भ होता है । यह मान संक्रान्ति वा प्रविष्ठा का हिसाब कहलाता है और इस विधि से १२ राशि ही १२ महीने हैं ॥

(२) चान्द्रमान चन्द्रमा के भ्रमण पर निर्भर है । चन्द्रमा का एक चक्र एक मास में पूर्ण होता है और उस के १२ चक्रों का एक चान्द्र वर्ष होता है । चन्द्रमा की कक्षा छोटी होने के कारण उसका एक चक्र सूर्य्य की एक राशि भोग काल से न्यून रहता है अतः इस न्यूनता को पूरा करने के लिये प्रति तीसरे वर्ष एक मलमास (लौंद का महीना) बढ़ाया जाता है ॥

(३) सावन मान में सूर्य्य के एक बार उदय होने से दूसरी बार उदय होने तक एक दिन माना जाता है और तदनुसार जो ३० दिन का महीना और ३६० दिन का वर्ष होता है वह सावन मास और सावन वर्ष कहलाता है ।

(४) नाक्षत्र मान नक्षत्र मण्डल के भ्रमण पर स्थिर है और इसी कारण पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है उस के नाम पर महीने का नाम रक्खागया है अर्थात् महीनों के नाम नक्षत्रों के नाम पर हैं ॥

इस से प्रकट है कि जिस ग्रह का चक्र पूरे एक मास में होता है वह चन्द्रमा है और इसी कारण उसे मासकृत अर्थात् मास बनाने वाला भी कहते हैं, अतः लोक में प्रचलित महीनों का चन्द्र मान के अनुकूल होना अत्यन्त बुद्धियुक्त नियम है क्योंकि यदि और मास लिया जाता और तिथि में एक दिन का भी संदेह हो जाता तो सर्व साधारण में उसकी शुद्धि अकस्मात् असम्भव थी और इसके विरुद्ध चन्द्रमा का एक नियत समय पर उदय, घटना, बढ़ना तथा अस्त हो जाना एक ऐसी प्रत्यक्ष बात है जिसके नियम पर

SGDF

महीनों के नियत करने में गणितादि की अशुद्धि का संदेह दर्शन द्वारा सरलता से निवृत्त हो सकता है, मानो जगद्रूपी कार्य्यालय में आकाश एक बड़ी घड़ी के समान है और उस में चन्द्रमा एक ऐसी वस्तु है जो घड़ी की उभय सुइयों तथा अंकों का पूरा २ कार्य्य देता है अर्थात् प्रतिदिन अपने स्थान तथा रूप से सूचित करता जाता है कि हमारे तिथि पत्र की नियत की हुई तिथि शुद्ध हैं वा नहीं और आश्चर्य्य यह है कि यद्यपि यह प्राचीन घड़ी क्रोडों वर्षों से विना सुधारने तथा कूकने के चल रही है तथापि नियम विरुद्ध कदापि एक सेकण्ड मात्र फास्ट (आगे) अथवा स्लो (पीछे) नहीं होती। इसी कारण संस्कृत में समस्त महीनों का मूल चान्द्र मान पर निर्भर है जिसकी सिद्धि में गणित के अतिरिक्त उस के नाम ही प्रमाण हैं जो चन्द्रमा के उन स्थानों के नाम पर रक्खे गए हैं जो उसे पृथिवी के परिभ्रमण में भोगने पड़ते हैं और जो सङ्ख्या में २७ हैं। संस्कृत ज्योतिष विद्या में उनकी संज्ञा नक्षत्र है, किन्तु यदि महीनों को केवल चान्द्रमान पर ही निर्भर रक्खा जाता तो यह अनर्गल दोष आता कि वर्ष की ऋतु कदाचित् महीनों के अनुकूल न होतीं और वही डांवाडोल दशा होती जो अरबी महीनों की है। अतः संस्कृत में सौर मास भी माने जाते हैं और उनके वही नाम समझने चाहियें जो मेष वृषादि १२ राशियों के नाम हैं क्योंकि उन का आरम्भ संक्रान्ति से माना जाता है अर्थात् जिस दिन सूर्य्य एक राशि से दूसरी में प्रवेश करता है। उभय प्रकार के मास के दिनों की संख्या परस्पर समान न होने के कारण प्रायः आधे दिन का भेद रहता है इसलिये इन से जो दो प्रकार के छोटे बड़े चान्द्र तथा सौर वर्ष उत्पन्न होते हैं उन की परस्पर समानता के लिये प्रति तीसरे वर्ष एक महीना लौंद का बढ़ाकर न्यूनता पूरी कर लेते हैं। यही कारण है कि यद्यपि इन का मूल चन्द्रमा की गति पर है तथापि ऋतु नियत महीनों से अनुकूल रहा करती हैं अर्थात् गणित की शुद्धि में सुगमता के कारण इनका मूल चान्द्रमान है किन्तु ऋतु की समानता के लिये सौरमान भी त्यागा नहीं जाता ॥

अब संस्कृत में १२ महीनों के जो नाम प्रसिद्ध हैं उन की व्युत्पत्ति लिखी जाती है।

यह सब महीने नक्षत्रों के नाम पर धरे गये हैं।

चन्द्रमा पृथिवी का परिभ्रमण एकवार समाप्त करता हुआ जिस महीने में जिस नक्षत्र पर होता है उसी नक्षत्र के नाम से उस महीने का नाम रक्खा गया है, अर्थात्

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

पौर्णमासी के दिन जिस नक्षत्र में चन्द्रमा होता है उस नक्षत्र के नाम पर उस महीने का नाम होता है। यथाः-

चित्रा से चैत्र, विशाखा से वैशाख, ज्येष्ठा से ज्यैष्ठ, पूर्वा वा उत्तराषाढा से आषाढ, श्रवण से श्रावण, पूर्वा वा उत्तरा भाद्रपद से भाद्रपद, अश्विनी से आश्विन, कृत्तिका से कार्तिक, मृगशिरा से मार्गशीर्ष, पुष्य से पौष, मघा से माघ, पूर्वा वा उत्तराफाल्गुनी से फाल्गुन ॥

संस्कृत में प्रत्येक मास की उस तिथि को जिस दिन प्रथम (कृष्ण) पक्ष समाप्त होता है अमावास्या वा दर्श कहते हैं। यह अमा (साथ) वस (रहना) इन दो शब्दों का समास है अर्थात् " दर्शः सूर्य्येन्दुसङ्गमः " सूर्य्य और चन्द्रमा के एक राशि में साथ रहने का दिन।

अब पाठकगण ध्यान देवें कि अन्य भाषाओं में महीनों तथा दिनों के नाम कैसे अनर्गल तथा भ्रान्तिमूलक हैं और संस्कृत के नाम कैसे विद्यासम्बन्धी नियम को प्रकट करते हैं जिस से यह निर्णय करना दुस्तर नहीं है कि अन्य भाषाओं के नामों के नियत करनेवाले सर्वथा ज्योतिष विद्या से अनभिज्ञ थे जिस के कारण उनकी सभ्य जनों में गणना नहीं हो सकती और पूर्वज आर्य्य जिन्हों ने संस्कृत नाम नियत किये थे निर्विवाद प्राचीन काल से सभ्यतायुक्त और इस गूढ़ तथा आवश्यक विद्या के नियमों से से यथावत् सुज्ञ थे और यही सिद्ध करना हमारे इस लेख का उद्देश था ॥

॥ ओ३म् शम् ॥

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

नक्षत्र तथा राशि

राशि वास्तव में क्रान्तिवृत्त के (जिस्में सूर्य्य भूमि की परिक्रमा करता दिखलाई देता है) १२ कल्पित भाग हैं। यथाहः–

अथ कल्प्या मेषाद्या अनुलोमक्रान्तिपाताङ्कात्।
(२८ सि० शिरोमणि० गो० अ०)

जैसे आकाश में बहुधा मेघों से मनुष्य, पर्वत, गज, अश्वादि के आकार बनजाते हैं, ऐसे ही तारों के समूह से भी मेष (मेंढा) वृष (बैल) आदि के आकार बनजाते हैं। इन ही भपञ्जरों के आकार पर राशियों के मेषादि नाम रक्खे गये हैं। परन्तु इनका किसी विशेष नामवाले प्राणि आदि से किञ्चिन्मात्र सन्बन्ध नहीं है॥

इसी प्रकार यह आकाशवृत्त २७ नक्षत्रों में भी विभक्त है जो राशियों के सदृश अनेक तारागणों के समूह से अश्वमुखादि आकारों में दृष्टिगोचर होते हैं, और जिन के तारों की संख्या भी नियत है॥

प्रत्येक राशि में २ $\frac{\text{१}}{\text{४}}$ नक्षत्र होते हैं और एक २ नक्षत्र के ४ भाग होते हैं, जिन्हें चरण कहते हैं। चन्द्रमा प्रतिदिन एक नक्षत्र चलता है।

राशि और नक्षत्रों के नाम तथा आकारादि निम्नालिखित हैं:—

राशि— मेष, (मेंढा) वृष, (बैल) मिथुन. (पुरुष स्त्री का जोड़ा) कर्क, (केकड़ा) सिंह, (शेर) कन्या, (लड़की) तुला, (तराजू) वृश्चिक, (बिच्छू) धन, (तीर चलाने वाला) मकर, (मगर मच्छ) कुम्भ, (घड़ा) मीन, (मछली)॥

नक्षत्र— $\frac{\text{अश्विनी}}{\text{३ तारे}}$ (घोड़े का मुख) $\frac{\text{भरणी}}{\text{३ तारे}}$ (त्रिकोण) $\frac{\text{कृत्तिका}}{\text{६}}$ (अग्निशिखा) $\frac{\text{रोहिणी}}{\text{५}}$ (गाडी) $\frac{\text{मृगशिरा}}{\text{३}}$ (हरिण) $\frac{\text{आर्द्रा}}{\text{१}}$ $\frac{\text{पुनर्वसु}}{\text{२ वा ४}}$ (घर) $\frac{\text{पुष्य}}{\text{३}}$ (तीर) $\frac{\text{अश्लेषा}}{\text{५}}$ (वर्तुल) $\frac{\text{मघा}}{\text{५}}$ (हल) $\frac{\text{पूर्वाफाल्गुनी}}{\text{२}}$ (शय्या) $\frac{\text{उत्तराफाल्गुनी}}{\text{२}}$ (शय्या) $\frac{\text{हस्त}}{\text{५}}$ (हाथ) $\frac{\text{चित्रा}}{\text{१}}$ (मोती) $\frac{\text{स्वाति}}{\text{१}}$ (मूंगा) $\frac{\text{विशाखा}}{\text{२}}$ (कमान)

SGDF

अनुराधा ४ (सर्प) ज्येष्ठा ३ (शूकर) मूल ११ (शङ्ख) पूर्वाषाढा २ (चौकी) उत्तराषाढा ३ (हाथी के दांत) श्रवण ३ (तीर) धनिष्ठा ४ (मृदङ्ग) शतभिषा १०० (गोल) पूर्वाभाद्रपद २ (दो शिरवाला मनुष्य) उत्तराभाद्रपद २ (जहाज़ का लङ्गर) रेवती २३ (मछली) ॥

कल्प वा सृष्टि संवत्

शतं तेऽयुतं हायनान्द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः ।

अथर्व काण्ड ८ अनु० १ मं० २१

अर्थ– इससे पूर्व सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन करते हुए परब्रह्म उपदेश करते हैं कि–
“सृष्टि की स्थिति का हिसाब समझने के लिये इस प्रकार जानो कि वे वर्ष दशहज़ार सैंकड़ा अर्थात् दश लाख तक शून्य देने के पश्चात् २, ३, ४, क्रम से लगाने से प्राप्त होते हैं, ४३२०००००००॥

इस से स्पष्ट सिद्ध है कि सृष्टि (दुनिया) चार अर्ब बत्तीस क्रोड़ वर्ष तक विद्यमान रहेगी । इसी को कल्प वा ब्राह्मदिन भी कहते हैं । एक कल्प में १४ मन्वन्तर होते हैं और एक मन्वन्तर ७१ चतुर्युगी (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग) का होता है, और प्रतिकल्प के आदि और प्रति मन्वन्तर के अन्त में १७२८००० वर्ष की एक संधि होती है, और प्रत्येक युग की आदि में संध्या और अन्त में संध्यांश होता है जिस्का सविस्तर गणित नीचे लिखा जाता है । जितना समय एक कल्प वा ब्राह्मदिन का होता है उतना ही एक ब्रह्मरात्रि का होता है, जिसके अन्त पर पुनः सृष्टि रची जाती है। इस कल्प के समय को सृष्टि के आदि से प्रचलित होने से “ सृष्टि संवत् ” और वेदों का ज्ञान भी चारों ऋषियों को आदि सृष्टि में होने के कारण “ वैदिक संवत् ” और आर्य्य धर्म्म के वेदोत्पत्ति समय अथवा आदि सृष्टि से प्रचलित होने से “आर्य्य संवत्” कहते हैं ॥

SGDF

भुक्त काल

कल्पादि संधी ... ... =१७२८०००

१ स्वायम्भुवमनु सत् =संध्या १४४०००+मूल १४४००००+सध्यांश १४४००० =एकत्रमान १७२८०००

त्रेता =संध्या १०८०००+मूल १०८००००+संध्यांश १०८००० =एकत्रमान १२९६०००

द्वापर =संध्या ७२०००+मूल ७२००००+संध्यांश ७२००० =एकत्रमान ८६४०००

कलि =संध्या ३६०००+मूल ३६००००+संध्यांश ३६००० =एकत्रमान ४३२०००

= एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + संधी १७२८००० =३०८४४८०००

२ स्वारोचिष ... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + संधी १७२८००० =३०८४४८०००

३ औत्तम ... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + संधी १७२८००० =३०८४४८०००

४ तामस ... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + संधी १७२८००० =३०८४४८०००

५ रैवत ... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + संधी १७२८००० =३०८४४८०००

६ चाक्षुष ... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + संधी १७२८००० =३०८४४८०००

७ वैवस्वत कीर२७वीं चतुर्युगी ४३२००००× २७ = ११६६४०००० ... ... =११६६४००००

इसकी ...२८वीं त्रियुगीके १७२८०००+ १२९६०००+८६४००० ... ... =३८८८००० } १२०५३३००४

इसके ...२८वां कलि शालिवाहन शक१८२४ विक्रमी १९५९ ईसवी १९०२ = ५००४

१९७२९४९००४

SGDF

भोग्य काल

७	वैवस्वत	.... के २८वें भविष्य कलि ४२६९९९	....	१८७९१४९९९
	इसकी	....४३ चतुर्युगी	४३२००००×४३ = १८५७६००००	
	इसकी	....अंत संधी	१७२८०००	
८	सावर्णि	....एक चतुर्युगी	४३२००००×७१ = ३०६७२००००+संधी १७२८०००	= ३०८४४८०००
९	दक्षसावर्णि	....एक चतुर्युगी	४३२००००×७१ = ३०६७२००००+संधी १७२८०००	= ३०८४४८०००
१०	ब्रह्म सावर्णि	....एक चतुर्युगी	४३२००००×७१ = ३०६७२००००+संधी १७२८०००	= ३०८४४८०००
११	धर्म्म सावर्णि	....एक चतुर्युगी	४३२००००×७१ = ३०६७२००००+संधी १७२८०००	= ३०८४४८०००
१२	रुद्र सावर्णि	....एक चतुर्युगी	४३२००००×७१ = ३०६७२००००+संधी १७२८०००	= ३०८४४८०००
१३	रौच्य	....एक चतुर्युगी	४३२००००×७१ = ३०६७२००००+संधी १७२८०००	= ३०८४४८०००
१४	भौत्य	....एक चतुर्युगी	४३२००००×७१=३०६७२००००+संधी१७२८०००	=३०८४४८०००=२३४७०५०९९९

ब्राह्म दिन अर्थात् कल्प ४३२०००००००

ब्राह्म रात्री अर्थात् प्रलय काल ४३२०००००००

एक ब्राह्म अहोरात्र ८६४०००००००

महाकल्प = १ अहोरात्र×३०×१२×१०० = ... ३११०४००००००००००

SGDF

ओ३म्

भूगोलस्यानेकखण्डेषु प्रचलितानां संवत्सराणां सूची

साम्प्रतिकसंवत्संख्यासहिता ॥

संख्या	नाम संवत्	कबसे प्रचलित है	वर्ष संख्या	संख्या	नाम संवत्	कब से प्रचलित है	वर्ष संख्या
१	सृष्टि	आदि सृष्टि से	१९७२९४९००४	१६	इब्राहीमी	इब्राहीम से	३८२३
२	वैदिक	"	"	१७	स्पार्टा	स्पार्टा नगर के समय से	३६०६
३	आर्य्य	"	"	१८	मूसवी	मूसा के समय से	३४७५
४	चीनी	चीन देशके प्रथम नृपति से	९६००२४०२	१९	दाऊदी	दाऊद के समय से	२९३७
५	ख़ताई	ख़ताके आदि पूर्वसानेवालेसे	८८८४०२७५	२०	यूनानी	ओपमिया के अखाड़े से	२६७८
६	पार्सी	ईरान के प्रथम नृपति से	१८९८७२	२१	रूमी	रूमनगर के समय से	२६५५
७	काल्डिया	पूर्वज के नाम से	१५१९०२	२२	नावोसारी	बाबल के प्रथम नृपति से	२६४९
८	मिस्री	मीनस नृपति से	२७५५६	२३	बौध	बुध के ५० वें वर्ष से	२४७६
९	कुस्तुन्तुन्या	०	७५११	२४	सिकन्दरी	सिकन्दर के समय से	२२५६
१०	अन्ताकिया	०	७३९५	२५	विक्रमी	महाराजा विक्रम के अभिषेक से	१९५९
११	ईसाई सृष्टि	०	५९०७	२६	ईसवी	ईसा की उत्पत्ति से ४ वर्ष पश्चात्	१९०३
१२	इब्रानी	आदम हव्वा की उत्पत्ति से	५९०७	२७	शालिवाहन	राजा शालिवाहन से	१८२५
१३	कलियुगी	कलि के आदि से	५००४	२८	मुहम्मदी	मुहम्मदके मक्केसे मदीने जाते समय	१३२०
१४	युधिष्ठिरी	महाराजा युधिष्ठिर से	४३५१	२९	नानकशाही	गुरु नानक के समय से	४३३
१५	नूह	नूह के समय से	५००४	३०	दयानन्दी	महर्षिदयानंदसरस्वती स्वर्गवाससे	२०

SGDF
Sri Gangeshwari Dayal Foundation

दिन ३१	जनवरी १९०३ई०	शव्वाल १३२०हि०	पौष १३१०फ़सली	पौष १९५९ वि० आर्य१९७२९४९००४				नक्षत्र			चन्द्र राशि		दिन मान	ग्रह उदय अस्त तथा तेवहारादि
				संक्रांतिप्रविष्टि०	वदि सुदि									
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घड़ी पल	घड़ी पल	
बृ	१	१	१७	१८	सु३	६०	०	श्र	५८	१०	मकर		२५ ५८	छोटीईद अंग्रेज़ी वर्षारम्भ दिन
शु	२	२	१८	१९	३	१	१९	ध	६०	०	कुम्भ	२० १७	२६ ०	
श	३	३	१९	२०	४	४	१६	ध	२	२५	कुम्भ		१	
र	४	४	२०	२१	५	५	१८	श	५	२२	मीन	५१ ३८	३	
चं	५	५	२१	२२	६	६	२२	पू	७	४	मीन		५	
मं	६	६	२२	२३	७	५	२४	उ	७	३१	मीन		६	
बु	७	७	२३	२४	८	३	१७	रे	६	५०	मेष	६ ५०	७	
बृ	८	८	२४	२५	९ १०	० ५६	१७	अ	४	५६	मेष		८	
शु	९	९	२५	२६	११	५१	१६	भ कृ	२ ५९	३१ १५	वृषभ	१६ ४२	९	
श	१०	१०	२६	२७	१२	४६	२	रो	५५	३०	वृषभ		१०	
र	११	११	२७	२८	१३	४०	१५	मृ	५१	२६	मिथुन	२३ २८	१२	
चं	१२	१२	२८	२९	१४	३४	२२	आ	४७	१६	मिथुन		१३	लोहड़ी
मं	१३	१३	२९	मा१	पू	२८	३५	पु	४३	७	कर्क	२९ ९	१४	संक्रांति मकर ३९.३२
बु	१४	१४	मा१	२	मा० व०१	२३	१	पु	३९	२४	कर्क		१६	
बृ	१५	१५	२	३	२	१७	५०	अ	३६	१०	सिंह	१६ १०	१७	
शु	१६	१६	३	४	३	१३	१८	म	३३	३८	सिंह		१८	
श	१७	१७	४	५	४	९	३३	पू	३१	५७	कन्या	४६ ४८	२०	शकट
र	१८	१८	५	६	५	६	४७	उ	३१	२०	कन्या		२१	
चं	१९	१९	६	७	६	५	७	ह	३१	५०	कन्या		२२	
मं	२०	२०	७	८	७	४	४२	चि	३३	३४	तुला	२ ४२	२४	
बु	२१	२१	८	९	८	५	३५	स्वा	३६	३१	तुला		२७	
बृ	२२	२२	९	१०	९	७	४६	वि	४०	४४	वृश्चिक	२४ ४१	३०	
शु	२३	२३	१०	११	१०	११	८	अ	४६	१	वृश्चिक		३३	
श	२४	२४	११	१२	११	१५	२९	ज्ये	५२	०	धन	५२ ०	३६	अस्त बुध १२.४
र	२५	२५	१२	१३	१२	२०	३२	मू	५८	२६	धन		४०	
चं	२६	२६	१३	१४	१३	२५	४९	पू	६०	०	धन		४३	
मं	२७	२७	१४	१५	१४	३१	२	पू	४	५२	मकर	२१ २३	४६	
बु	२८	२८	१५	१६	अमा	३५	४८	उ	१०	५७	मकर		४९	
बृ	२९	२९	१६	१७	सु१	३९	४३	श्र	१६	२४	कुम्भ	४८ ३५	५२	
शु	३०	३०	१७	१८	२	४२	३२	ध	२०	४६	कुम्भ		५६	चन्द्रदर्शन
श	३१	ज़ि१	१८	१९	३	४४	६	श	२४	०	कुम्भ		५९	

SGDF

जनवरी १९०३ ई०	आन्हिकवृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

व्यायाम*

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः॥ य०अ०४०मं०२॥

परमेश्वर आज्ञा देता है कि "हे मनुष्यो ! तुम सौ वर्ष पर्यन्त अर्थात् जब तक जीवो तब तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करो, आलसी कभी न हो" ॥

शरीर की बनावट स्वयमेव उक्त वचन की साक्षी देती है और शरीर में संधियों के होने तथा अवयवों के स्थूल सूक्ष्म कठोर कोमल होने से यह सर्वथा सिद्ध है कि जगन्नियन्ता ने मानुष देह को प्रत्येक कार्य्य की पूर्त्ति के लिये यथोचित अनुकूल निर्माण किया है इसलिये शरीर से श्रमादि करना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। जिस प्रकार कार्य्य में न लाने से महतीक्ष्ण शस्त्र भी कुण्ठित होकर कार्य्य साधन में अशक्त होजाता है। इसी प्रकार जो मनुष्य अपने शरीर से काम नहीं लेते उनका शरीर भी किसी काम का नहीं रहता जैसे बहुधा भिक्षुकों के हस्तादि शुष्क देखने में आते हैं। एतद्देशीय धनाढ्य पुरुष दुकानदार आदि जिनको बैठे वा लेटे रहने के विना कुछ अन्य कार्य्य नहीं कैसे भद्दे और बेडौल होजाते हैं, पेट बढ़जाता है।

---

* वार्जिश या कसरत। यह शब्द "वि" पूर्वक आयाम शब्द से बना है जिस के अर्थ फैलाव, तनाव, निग्रह, गठन और वृद्धि आदि हैं॥

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

दिन २८	फरवरी ई०	जिल्काद १३२० हि	माघ १३१० फ०	माघ १९५९ वि० आर्य्य१९७२९४९००४				नक्षत्र			चन्द्र राशी		दिन मान	ग्रह उदय अस्त तथा तेवहारादि
				सं० प्रविष्ठ	वदि सुदि									
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घ० प०	घ० प०	
र	१	२	१९	२०	सु ४	४४	२४	पू	२६	२	मीन	१० ३१	२७ २	उदय शनि ५७। १२
चं	२	३	२०	२१	५	४४	२३	उ	२१	४७	मीन		५	वसन्त पञ्चमी
मं	३	४	२१	२२	६	४१	१२	रे	२६	२३	मेष	२६ २३	९	
बु	४	५	२२	२३	७	३८	११	अ	२४	५२	मेष		१२	
बृ	५	६	२३	२४	८	३४	१	भ	२२	३०	वृषभ	२६ ४२	१५	उदय बुध प्रक ७ ८ अस्तगुरु ४६ २८
शु	६	७	२४	२५	९	२९	१०	कृ	१९	२४	वृषभ		१८	
श	७	८	२५	२६	१०	२३	४७	रो	१५	४५	मिथुन	४२ ४५	२१	
र	८	९	२६	२७	११	१८	३	मृ	११	४६	मिथुन		२४	
चं	९	१०	२७	२८	१२	१२	११	आ	७	३६	कर्क	४५ ३२	२८	
मं	१०	११	२८	२९	१३	६	२२	पु पु	३ ५९	२० ४२	कर्क		३१	
बु	११	१२	२९	३०	१४ पू	० ५५	४९ २९	अ	५६	२१	सिंह	५६ २७	३४	
बृ	१२	१३	फा १	फा १	फा व० १	५१	९	म	५३	३९	सिंह		३७	संक्रान्ति कुम्भ ६। १९
शु	१३	१४	२	२	२	४७	२८	पू	५१	४७	सिंह		४०	
श	१४	१५	३	३	३	४४	४५	उ	५०	५४	कन्या	६ ३३	४४	
र	१५	१६	४	४	४	४३	११	ह	५१	९	कन्या		४७	
चं	१६	१७	५	५	५	४२	५१	चि	५२	३७	तुला	२१ ५३	५०	
मं	१७	१८	६	६	६	४३	४९	स्वा	५५	२२	तुला		५३	
बु	१८	१९	७	७	७	४६	३	वि	५९	२०	वृश्चिक	४ २०	५७	
बृ	१९	२०	८	८	८	४९	३०	अ	६०	०	वृश्चिक		२८ ०	
शु	२०	२१	९	९	९	५३	५१	अ	४	२०	वृश्चिक		४	
श	२१	२२	१०	१०	१०	५८	५५	ज्ये	१०	१२	घन	१० १२	८	
र	२२	२३	११	११	११	६०	०	मू	१६	३३	घन		१२	
चं	२३	२४	१२	१२	११	४	१४	पू	२३	१२	मकर	३९ ४२	१६	
मं	२४	२५	१३	१३	१२	९	२४	उ	२९	१६	मकर		२०	
बु	२५	२६	१४	१४	१३	१३	२५	श्र	३४	५२	मकर		२४	शिवरात्रि
बृ	२६	२७	१५	१५	१४	१७	५३	ध	३९	३३	कुम्भ	६ १२	२८	
शु	२७	२८	१६	१६	अमा	२०	३९	श	४३	६	कुम्भ		३२	
श	२८	२९	१७	१७	सु १	२२	६	पू	४५	२५	मीन	२९ ५१	३६	चन्द्रदर्शन

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

फ़र्वरी १९०३	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	

टांगे और भुजाएं पतली होजाती हैं, शरीर की त्वचा ढीली होकर लटकने लगती है प्रतिदिन नाना प्रकारके रोगों में ग्रस्त रहते हैं, दश पग चलने से हांपने लगते हैं, भूख और नींद बहुत कम होजाती है, पाचन शक्ति नष्ट होकर सदा मन्दाग्नि से पीडित रहते हैं और यही कहा करते हैं कि हम किसी प्रकार का कुपथ्य नहीं करते, मूंग की दाल और चपाती के अतिरिक्त कुछ नहीं खाते फिर भी न जाने भूख क्यों नहीं लगती, पेट सदा भरा सा ही रहता है, परन्तु इन मूर्खों को यह ज्ञान नहीं कि वह वस्तुतः एक बड़ा अपथ्य कर रहे हैं अर्थात् परमात्मा की आज्ञा से विरुद्ध अपने शरीर से काम नहीं लेते । इस के प्रतिकूल कृषाण और मेहनत मज़दूरी करने वाले इत्यादि मनुष्यों को देखो उनके शरीर लोहे के समान दृढ, सुडौल, हृष्ट पुष्ट बने दृष्टि आते हैं, कठिन से कठिन भोजन को पचालेते हैं, कोई रोग समीप नहीं आता। २०-२५ क्रोश पैदल चलना उनके लिये सहज सी बात है । नींद ऐसी आती है कि क्षेत्र के मोटे २ लोष्टादि पर भी धूप में पड़े घुरघुराते रहते हैं । यह सब शरीर से काम लेने का ही फल है । उपर्युक्त संक्षिप्त लेख से ज्ञात होगा कि शरीर से मेहनत (श्रम) अवश्य करना

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

दिन-३१	मार्च १९०३ ई०	ज़िलहिज १३२० हि०	फाल्गुन १३२० फ०	फाल्गुन १९५९ वि० आर्य्य१९७२९४९००४				नक्षत्र			चन्द्र राशि		दिन मान	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
				सं० प्रविष्ठा	बदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घ० प०	घ० प०	
र	१	१	१८	१८	सु२	२२	१७	उ	४९	३०	मीन		२८ ४०	
चं	२	२	१९	१९	३	२१	११	रे	४६	२०	मेष	४६ २०	४४	पं०लेखरामपरलोकगमन
मं	३	३	२०	२०	४	१८	५५	अ	४५	७	मेष		४८	
बु	४	४	२१	२१	५	१५	३५	भ	४२	५७	वृषभ	५७ १३	५२	
बृ	५	५	२२	२२	६	११	२१	कृ	४०	०	वृषभ		५६	
शु	६	६	२३	२३	७	६	३३	रो	३६	२९	वृषभ		२९ ०	
श	७	७	२४	२४	८ ९	१ ५५	७ २१	मृ	३२	३५	मिथुन	४ ३२	४	उदय गुरु २४
र	८	८	२५	२५	१०	४९	२३	आ	२८	२९	मिथुन		८	
चं	९	९	२६	२६	११	४३	३२	पु	२४	३०	कर्क	१० २६	१२	आमला (खट्टा)एकादशी
मं	१०	१०	२७	२७	१२	३७	५५	पु	२०	३८	कर्क		१६	बड़ी ईद
बु	११	११	२८	२८	१३	३२	४९	अ	१७	११	सिंह	१७ ११	२०	
बृ	१२	१२	२९	२९	१४	२८	१८	म	१४	२०	सिंह		२४	होली
शु	१३	१३	३०	चैत्र १	१५	२४	३८	पू	१२	१७	कन्या	२७ ४	२८	संक्रान्ति मीन ५५।१०
श	१४	१४	चै०१	२	पू	२१	३६	उ	११	९	कन्या		३२	
र	१५	१५	२	३	चैत्र व १	२०	२५	ह	११	१०	तुला	४१ ५०	३६	
चं	१६	१६	३	४	२	२०	२	चि	१२	३१	तुला		४०	
मं	१७	१७	४	५	३	२१	३	स्वा	१४	४९	तुला		४४	
बु	१८	१८	५	६	४	२४	१७	वि	१८	३२	वृश्चिक	२ ३६	४८	
बृ	१९	१९	६	७	५	२६	४३	अ	२३	२०	वृश्चिक		५२	
शु	२०	२०	७	८	६	३१	५	ज्ये	२९	२	धन	२९ २	५६	
श	२१	२१	८	९	७	३५	५	मू	३५	२०	धन		३० ०	
र	२२	२२	९	१०	८	४१	२१	पू	४१	४९	मकर	५८ २४	४	अस्त बुधप्राक्४७।१२
चं	२३	२३	१०	११	९	४६	२८	उ	४८	१०	मकर		८	
मं	२४	२४	११	१२	१०	५१	३	श्र	५३	५७	मकर		१२	
बु	२५	२५	१२	१३	११	५४	४५	ध	५८	५४	कुम्भ	२६ २९	१६	
बृ	२६	२६	१३	१४	१२	५७	२३	श	६०	०	कुम्भ		२०	
शु	२७	२७	१४	१५	१३	५८	४५	श	२	४४	मीन	४९ ४२	२४	पं०गुरुदत्तपरलोकगमन
श	२८	२८	१५	१६	१४	५८	५०	पू	५	२२	मीन		२८	
र	२९	२९	१६	१७	अमा	५७	३९	उ	६	४५	मीन		३२	संवत्सर प्रारम्भ
चं	३०	३०	१७	१८	सु१	५५	१८	रे	६	५३	मेष	६ ५३	३६	चन्द्र दर्शन
मं	३१	१मु०	१८	१९	२	५१	५१	अ	५	५५	मेष		४०	गणगौर तीज

SGDF

मार्च १९००	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

चाहिये। इस के बिना शरीर स्वस्थ नहीं रहता॥

जो मनुष्य कृषाण हैं खुले वायु में फावड़ा चलाते, दिन भर हल जोतते और धूप में काम करते हैं अथवा अन्य प्रकार की मेहनत मज़दूरी करते हैं, जिस से शरीर को अधिकतर मेहनत पड़ती है उनको अन्य रीति से व्यायाम करने की अपेक्षा नहीं परन्तु जो लोग ऐसी मिहनत नहीं करते उनके लिये विद्वानों ने कृत्रिम व्यायाम की विधि रक्खी है। इस विषय में संस्कृत वैद्यक के सुप्रसिद्ध प्रामाणिक ग्रन्थ सुश्रुत से कतिपय श्लोक उद्धृत करके नीचे लिखे जाते हैं:—

शरीरायासजननं कर्म्म व्यायामसंज्ञितम्।
तत्कृत्वा तु सुखं देहं मर्दयेच्च समन्ततः॥१॥

※ जिस कर्म से शरीर में थकावट उत्पन्न हो उसे "व्यायाम" कहते हैं। व्यायाम के पश्चात् शरीर को सब ओर से धीरे २ मलना चाहिये॥ १॥

※ ज्ञात हो कि अनेक प्रकार के कुत्सित कर्म हैं कि जिन से थकावट होती है परन्तु वह आत्मिक वा शारीरिक बल को हानिकारक होने के कारण व्यायाम संज्ञान्तर्गत कदाचित् नहीं होसकते॥

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता।
दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा॥ २॥

SGDF

अप्रैल १९०३ ई० शाके

दिन ई०	अप्रैल १९०३ ई०	मुहर्रम १३२१ हि०	चैत्र १३१० फ०	चैत्र १९५९ वि० आर्य्य१९७२९४९००५				नक्षत्र			चन्द्र राशि		दिन मान घ० प०	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
				सं०प्रविष्ठा	वदि सुदि									
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घ० प०		
बु	१	२	१९	२०	४	४७	४१	भ	३	५८	वृषभ	१८ १६	३० ४४	
बृ	२	३	२०	२१	५	४२	४१	कृ रो	३ १२	५७ ४९	वृषभ		४८	
शु	३	४	२१	२२	६	३७	१३	मृ	५४	०	मिथुन	२५ ५५	५२	
श	४	५	२२	२३	७	३१	१३	आ	४९	५७	मिथुन		५६	
र	५	६	२३	२४	८	२५	१०	पु	४५	५०	कर्क	३१ ५१	३१ ०	दुर्गा अष्टमी
चं	६	७	२४	२५	९	१९	१४	पु	४१	५५	कर्क		४	श्री महाराजा रामचंद्र
मं	७	८	२५	२६	१०	१३	३४	अ	३८	२१	सिंह	३८ २१	८	जन्मोत्सव-रामनवमी
बु	८	९	२६	२७	११	८	२२	म	३५	२१	सिंह		१२	मुहर्रम
बृ	९	१०	२७	२८	१२	३	४८	पू	३३	५	कन्या	४७ ४५	१६	
शु	१०	११	२८	२९	१३ १४	० ५७	३ १९	पु	३१	४४	कन्या		२०	गुड फ्राइडे
श	११	१२	२९	३०	पू०	५५	४२	ह	३१	२८	कन्या		२४	चन्द्रग्रहण विश्वा २०।५
र	१२	१३	वै०१	३१	वै० ब१	५५	१९	चि	३२	३२	तुला	२ ०	२८	
चं	१३	१४	२	वै०१	२	५६	१४	स्वा	३४	३३	तुला		३२	मेषेऽर्क१६।३७ वैशाखी
मं	१४	१५	३	२	३	५८	२२	वि	३७	५८	वृश्चिक	२२ ७	३६	आर्य्य तथा सौर वर्ष प्रा०
बु	१५	१६	४	३	४	६०	०	अ	४२	३७	वृश्चिक		४०	
बृ	१६	१७	५	४	४	१	३६	ज्ये	४८	९	धन	४८ ६	४४	
शु	१७	१८	६	५	५	५	५३	मू	५४	२०	धन		४८	
श	१८	१९	७	६	६	१०	४५	पू	६०	०	धन	१७ २९	५२	
र	१९	२०	८	७	७	१५	५०	पू	०	५०	मकर		५६	
चं	२०	२१	९	८	८	२०	४९	उ	७	१५	मकर	४५ ४७	३२ ०	
मं	२१	२२	१०	९	९	२५	१६	श्र	१३	१२	कुंभ		३	उदय बुध पाश्चिमे ४१।१८
बु	२२	२३	११	१०	१०	२८	५०	ध	२८	२१	कुंभ	९ ३९	६	
बृ	२३	२४	१२	११	११	३१	२०	श	२२	२९	मीन		९	
शु	२४	२५	१३	१२	१२	३२	३४	पू	२५	२२	मीन	२७ २५	१२	
श	२५	२६	१४	१३	१३	३२	३१	उ	२७	२	मेष		१५	
र	२६	२७	१५	१४	१४	३१	१२	रे	२७	२५	मेष	३९ २२	१८	सौमवतीअमावसचंद्रदर्शन
चं	२७	२८	१६	१५	अमा	२८	४५	अ	२६	४५	वृषभ		२१	
मं	२८	२९	१७	१६	१	२५	१३	भ	२५	१	वृषभ	४३ ४९	२४	
बु	२९	स०१	१८	१७	२	२०	५१	कृ	२२	२५	मिथुन		२७	
बृ	३०	२	१९	१८	३	१५	४३	रो	१९	११			३०	

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

अप्रैल १९०३ ई०	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता ।
दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा॥१॥

व्यायाम से शरीर का बढ़ना, अङ्गों की कान्ति तथा सुडौलपन, पाचन शक्ति की वृद्धि, आलस्य रहित और शरीर में दृढता, हलकापन तथा शोभा (सौन्दर्य्य) बढ़ती है ॥ २ ॥

श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता ।
आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते॥३॥

मनुष्य व्यायाम करने से मेहनत, थकावट, प्यास, गर्मी शीतादि को सहन कर सक्ता है । और परम आरोग्यता भी इसी से प्राप्त होती है ॥ ३ ॥

न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणम् । न च व्यायामिनं मर्त्यं मर्दयन्त्यरयो भयात् ॥ ४ ॥

शरीर की स्थूलता को हटाने के लिये इस के सदृश अन्य उपाय नहीं है और वैरी भी व्यायाम करने वाले को भय दिखलाकर जीत नहीं सक्ता ॥ ४ ॥

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति ।
स्थिरीभवति मांसञ्च व्यायामाभिरतस्य च ॥ ५ ॥

न उसको बुढ़ापा झट पट आकर बलात्कारसे दबा सक्ता है । और व्यायामी के शरीर का मांस स्थिर हो जाता है ॥ ५ ॥

व्यायामक्षुण्णगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्त्तितस्य च । व्याधयो नोपसर्पन्ति सिंहं क्षुद्रमृगा इव ॥ ६ ॥

व्यायाम से गठे हुए शरीर पर और चलने फिरने वाले मनुष्य के समीप रोग

SGDF

दिन-ई०	मई १९०३ ई०	सफर १३२१ हि०	वैशाख १३१० फ०	वैशाख १९६० वि० आर्य्य१९७२९४९००५				नक्षत्र			चन्द्रराशि		दिन मान	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
					बदि सुदि									
				प्रविष्टा	तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घ० प०	घ० प०	
शु	१	३	२०	१९	४	१०	११	मृ	१४	२६	मिथुन		३२ ३३	
श	२	४	२१	२०	५ ६	४ ५८	१९ १५	आ	११	२४	कर्क	५३ २०	३६	
र	३	५	२२	२१	७	५२	१७	पु	७	१८	कर्क		३९	
चं	४	६	२३	२२	८	४६	३४	पुश्ले	३ ५९	१८ ५९	सिंह	५९ २९	४२	
मं	५	७	२४	२३	९	४१	१८	म	५६	३३	सिंह		४५	
बु	६	८	२५	२४	१०	३६	३९	पू	५४	४	सिंह		४८	
बृ	७	९	२६	२५	११	३२	५०	उ	५२	१८	कन्या	८ ४०	५१	
शु	८	१०	२७	२६	१२	२९	५९	ह	५१	५६	कन्या		५४	
श	९	११	२८	२७	१३	२८	१६	चि	५२	३४	तुला	३२ १५	५७	
र	१०	१२	२९	२८	१४	२७	४७	स्वा	५४	२७	तुला		३३ ०	नृसिंह चौदश
चं	११	१३	३०	२९	पू०	२८	३७	वि	५७	३४	वृश्चिक	४१ ४८	३३ ३	
मं	१२	१४	ज्ये१	३०	ज्ये. व१	३०	४१	अ	६०	०	वृश्चिक		६	
बु	१३	१५	२	३१	२	३३	५५	अ	१	५४	वृश्चिक		९	
बृ	१४	१६	३	ज्ये१	३	३८	४	ज्ये	७	१०	धन	० १०	१२	संक्रान्ति वृष १३।३२
शु	१५	१७	४	२	४	४२	५०	मू	१३	१३	धन		१५	
श	१६	१८	५	३	५	४७	४९	पू	१९	४०	मकर	२६ १७	१८	
र	१७	१९	६	४	६	५२	४३	उ	२६	७	मकर		२१	
चं	१८	२०	७	५	७	५७	७	श्र	३२	११	मकर		२४	अगस्त्यास्त ७।१
मं	१९	२१	८	६	८	६०	०	ध	३७	३२	कुम्भ	४ ५१	२७	
बु	२०	२२	९	७	९	०	३९	श	४१	५४	कुम्भ		२९	
बृ	२१	२३	१०	८	१०	३	७	पू	४५	४	मीन	२९ १७	३२	अस्तबुध पश्चिमे२५।३७
शु	२२	२४	११	९	११	४	१८	उ	४७	०	मीन		३४	
श	२३	२५	१२	१०	१२	४	१३	रे	४७	४२	मेष	४० ४२	३६	
र	२४	२६	१३	११	१३	२	५२	अ	४७	१३	मेष		३८	विक्टोरिया जन्मदिन
चं	२५	२७	१४	१२	१४	० ५६	२१ ४८	भ	४५	४०	मेष		४०	
मं	२६	२८	१५	१३	अमा	५२	२१	कृ	४३	१५	वृषभ	० ४	४१	वट पूजनम् बड़सायत
बु	२७	२९	१६	१४	सु१	४७	११	रो	४०	७	वृषभ		४२	आखरी चहारशम्बः
बृ	२८	३०	१७	१५	२	४१	३२	मृ	३६	२८	मिथुन	८ ३७	४४	चन्द्र दर्शन
शु	२९	र०१	१८	१६	३	३५	३३	आ	३२	२९	मिथुन		४५	
श	३०	२	१९	१७	४	२९	२७	पु	२८	१८	कर्क	१४ २०	४६	
र	३१	३	२०	१८	५	२३	२३	पु	२४	१८	कर्क		४७	

मई १९०३ ई०	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

नहीं आता जैसे सिंह के सामने कोई छोटा मोटा मृगादि ॥ ६ ॥

वयोरूपगुणैर्हीनमपि कुर्यात्सुदर्शनम् । व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ॥ ७ ॥

विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते । व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्य ने अपनी जवानी नष्ट कर दी है वा जो रूप तथा अन्य गुणों से हीन है, व्यायाम उस को भी एक वार दर्शनीय बना देता है और व्यायामी विरुद्धानुकूल कच्चे वा पक्के प्रत्येक भोजन को निर्दोष पचा सक्ता है, बलवानों और स्निग्ध (चिकना घृतादि) भोजन करनेवालों के लिये व्यायाम सदा पथ्य (गुणकारक) है ॥ ७ । ८ ॥

स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः ।
सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुम्भिरात्महितैषिभिः॥९॥

वसन्त और शरद ऋतु में तो वह उनके लिये अत्यन्त गुणकारी है । सब मनुष्यों को जो अपना हित चाहते हैं नित्य प्रति सब ऋतुओं में अवश्य करना चाहिये॥९॥

बलस्यार्द्धेन कर्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ॥ १० ॥

व्यायाम बलस्यार्ध (आधे बल) तक करना चाहिये अन्यथा हानिकारक है॥१०॥

हृदिस्थानस्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते । व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्द्धस्य लक्षणम् ॥ ११ ॥

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

दिन ई०	जून १९०३ ई०	रबिउलअव्वल हि०	ज्येष्ठ १३१० फ०	ज्येष्ठ १९६० वि० आर्य्य१९७२९४९००५				नक्षत्र			चन्द्रराशी		दिन मान घ० प०	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
					वदि सुदि									
				सं० प्रविष्टा	तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घ० प०		
चं	१	४	२१	१९	६	१७	२९	ऽश्ले	२०	३३	सिंह	३० ३३	३३ ४८	
मं	२	५	२२	२०	७	१२	१३	म	१७	७	सिंह		४९	
बु	३	६	२३	२१	८	७	२८	पु	१४	३५	कन्या	२९ ८	५०	उदय बुध प्राक् १० ३९
बृ	४	७	२४	२२	९	३	३२	उ	१२	४७	कन्या		५२	
शु	५	८	२५	२३	१० ११	० ५८	३२ ४३	ह	११	५९	तुला	४२ १०	५३	गंगा स्नान दशहरा
श	६	९	२६	२४	१२	५८	६	चि	१२	१९	तुला		५४	निर्जला एकादशी व्रत
र	७	१०	२७	२५	१३	५८	४७	स्वा	१३	५२	तुला		५६	
चं	८	११	२८	२६	१४	६०	०	वि	१६	४२	वृश्चिक	० ५९	५८	
मं	९	१२	२९	२७	१४	०	४४	अ	२०	४५	वृश्चिक		३४ ०	१२ वफ़ात
बु	१०	१३	३०	२८	पू०	३	५०	ज्ये	२५	४९	घन	२५ ४९	३४ १	
बृ	११	१४	आ० १	२९	आ० व० १	७	५५	मू	३१	४२	घन		२	
शु	१२	१५	२	३०	२	१२	३७	पू	३८	४	मकर	५४ ४१	३	
श	१३	१६	३	३१	३	१७	२६	उ	४४	३२	मकर		४	
र	१४	१७	४	आ० १	४	२२	१८	श्र	५०	४२	मकर		५	सं० मिथुन ३८।५२
चं	१५	१८	५	२	५	२६	४०	ध	५६	१४	कुंभ	२३ २८	६	
मं	१६	१९	६	३	६	३०	१३	श	६०	०	कुंभ		७	
बु	१७	२०	७	४	७	३२	२६	श	०	४९	मीन	४८ २५	९	
बृ	१८	२१	८	५	८	३३	५४	पू	४	१६	मीन		११	
शु	१९	२२	९	६	९	३३	५१	उ	६	२९	मीन		१३	
श	२०	२३	१०	७	१०	३२	३३	रे	७	२५	मेष	७ २५	१५	
र	२१	२४	११	८	११	३०	३	अ	७	११	मेष		१६	
चं	२२	२५	१२	९	१२	२६	३१	भ	५	५३	वृषभ	२४ २१	१५	रवि दक्षिणे
मं	२३	२६	१३	१०	१३	२२	६	कृ	३	३७	वृषभ		१३	
बु	२४	२७	१४	११	१४	१६	५६	रो मृ	० ६ ५७.२	६७२	मिथुन	२८ ४९	१२	
बृ	२५	२८	१५	१२	अमा	११	५७	आ	५३	५	मिथुन		११	
शु	२६	२९	१६	१३	सु० १ २	५ ५६	१६ ६	पु	४९	०	कर्क	३५ १	९	चंद्र दर्शन
श	२७	रबि० १	१७	१४	३	५२	५७	पु	४४	५३	कर्क		८	
र	२८	२	१८	१५	४	४७	७	ऽश्ले	४१	०	सिंह	४१ ०	६	
चं	२९	३	१९	१६	५	४१	४०	म	३७	३२	सिंह		५	
मं	३०	४	२०	१७	६	३६	५०	पू	३४	४५	कन्या	४९ १४	४	

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

जून १९०३	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	

जब व्यायाम करते २ मनुष्य का श्वास टूटने लगे और मुख से श्वास लेने लग जाय उस को बलस्यार्ध समझना चाहिये ॥ ११ ॥

एतद्देश में व्यायाम नाना प्रकार से किया जाता है। यथा—दण्ड करना, मुद्‌गर फेरना, बैठक लगाना, गतका फरी खेलना, मल्लयुद्ध करना, इत्यादि बहुत प्रकार की कला हैं। जिन को प्रायः सब ही मनुष्य जानते हैं। परन्तु यूरोपदेश की व्यायाम विधि शरीर के सर्वाङ्गोपयोगी पूर्ण अनुभव के पश्चात् नियत की गई है। उस को अति उपयोगी समझ कर हम इस स्थान पर लिखते हैं। जिस से सर्वसाधारण को लाभ हो।

यद्यपि मुद्‌गरकला कुछ काल पूर्व से प्रचलित है। परन्तु मिस्टर सैण्डो ने जो सम्प्रति इङ्गलैण्ड का एक प्रधान बलिष्ठ मल्ल है, निम्नलिखित है—

अष्टादश मुद्गरकला

नियत की हैं। जिन को यथाविधि करने से सुश्रतकार के उपरोक्त वचन की सम्यक् प्रकार से सिद्धि होती है। यह मुद्‌गर लोहे के होते हैं। देशीय मुद्‌गरों के समान यह मी युग्म अर्थात् दो होते हैं। आकार झुंझने के सदृश होता है। अंग्रेज़ी में इनको फम्बेल कहते हैं। यह भिन्न २ तोल के होते हैं। ६ वा ७ वर्ष वाले बालकों को व्यायाम की अपेक्षा नहीं, ७ से१० वर्ष की वय वालों को एक पौण्ड (अर्ध सेर) तोल के डम्बेल से, १० से१२

SGDF

दिन ३१	जुलाई १९०३ ई०	रविउलाखिर १३२१	असाढ़ १३१० फ़.	असाढ़ १९६० वि० आर्य्य १९७२९४९००५				नक्षत्र			चन्द्र राशि		दिन मान	ग्रह उदय अस्त तथा तेवहारादि
				सं० प्रविष्ठ	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घ० प०	घ० प०	
बु	१	५	२१	१८	७	३२	४५	उ	३२	४२	कन्या		२२४	
बृ	२	६	२२	१९	८	२९	३९	ह	३१	३८	कन्या		१	
शु	३	७	२३	२०	९	२७	३९	चि	३१	४१	तुला	१ ३९	०	
श	४	८	२४	२१	१०	२६	५४	स्वा	३३	५	तुला		३३ ५९	
र	५	९	२५	२२	११	२७	२५	वि	३५	२७	वृश्चिक	१९ ५२	५८	
चं	६	१०	२६	२३	१२	२९	१२	अ	३९	७	वृश्चिक		५७	
मं	७	११	२७	२४	१३	३२	१०	ज्ये	४३	२८	घन	४२ ५८	५६	अस्त बुध प्राक् २८ ४८
बु	८	१२	२८	२५	१४	३६	८	मू	४९	४०	घन		५४	
बृ	९	१३	२९	२६	पू०	४०	४६	पू	५५	५७	घन		५२	व्यास पूजा
शु	१०	१४	श्रा० १	२७	श्रा व० १	४५	४२	उ	६०	०	मकर	१२ २४	५१	
श	११	१५	२	२८	२	५०	३६	उ	२	२५	मकर		५०	
र	१२	१६	३	२९	३	५४	५१	श्र	८	४१	कुम्भ	४१ ३१	४९	
चं	१३	१७	४	३०	४	५८	२८	ध	१४	२१	कुम्भ		४८	
मं	१४	१८	५	३१	५	६०	०	श	१९	९	कुम्भ		४७	
बु	१५	१९	६	३२	५	१	२	पू	२२	५३	मीन	५६ ०	४६	
बृ	१६	२०	७	श्रा १	६	२	२२	उ	२५	२१	मीन		४५	सं० कर्क १६।१
शु	१७	२१	८	२	७	२	२५	रे	२६	३४	मेष	२६ ३४	४४	
श	१८	२२	९	३	८ ९	१ ५८	१२ ४५	अ	२६	३४	मेष		४२	
र	१९	२३	१०	४	१०	५५	१९	भ	२५	२८	वृषभ	३९ ५०	४१	
चं	२०	२४	११	५	११	५०	५८	कृ	२३	२३	वृषभ		४०	
मं	२१	२५	१२	६	१२	४५	५२	रो	२०	३२	मिथुन	४८ ४८	३८	
बु	२२	२६	१३	७	१३	४०	१३	मृ	१७	३	मिथुन		३७	
बृ	२३	२७	१४	८	१४	३४	१३	आ	१३	१०	कर्क	५५ ५	३५	
शु	२४	२८	१५	९	अमा	२८	२	पु	९	२	कर्क		३२	
श	२५	२९	१६	१०	सु १	२१	५६	पु	४	५३	कर्क		२९	चन्द्रदर्शन
र	२६	जमा १	१७	११	२	१६	०	अ म	० ५७	५७ २२	सिंह	० ५७	२६	
चं	२७	२	१८	१२	३	१०	३०	पू	५४	२३	सिंह		२३	तीज
मं	२८	३	१९	१३	४	५	३८	उ	५२	७	कन्या	८ ४९	२०	
बु	२९	४	२०	१४	५ ६	१ ५८	२१ २१	ह	५०	४९	कन्या		१८	
बृ	३०	५	२१	१५	७	५६	१६	चि	५०	३४	तुला	२० ४२	१६	
शु	३१	६	२२	१६	८	५५	२६	स्वा	५१	३३	तुला		१३	

SGDF Gurgeshwari Digital Foundation

जुलाई १९०३ ई०	आन्हिक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

वालों को २ पौण्ड से, १२ से १५ वालों को ३ पौण्ड से, १५ से १७ तक को ४ से, और १७ से अधिक वय वालों को ५ पौण्ड तौल के डम्बेल (मुद्गर) से व्यायाम आरम्भ करना चाहिये । जब नियत संख्या अवधि तक पहुंच जावे तो छै मास तक लगातार उसी प्रकार करता रहै, तदनन्तर दो पौण्ड अधिक तौल के मुद्गरों को काम में लावे और प्राथमिक संख्या से लेकर शनैः शनैः नियत अवधि तक बढ़ाया जावे, इसी प्रकार प्रति अर्ध वर्ष के पश्चात् दो२पौण्ड बढ़ाता हुआ१० तक काम में लावे ॥ अब मुद्गरकला की विधि यथा क्रम लिखी जाती है । समझने में लाघव हो इसलिये एक चित्र समस्त १८ कलाओं का एकत्र पृष्ठ पर दिया गया है वहां देखलें और कौन सी कला कितनी वार आरम्भ में करनी चाहिये और कितनी संख्या तक उसकी अवधि है इत्यादि आवश्यक बातें भी यंत्राकार नीचे लिखी जाती हैं:—

(१) भुजाओं को इस प्रकार साधी करो कि उनका उदर भाग बाहर की ओर रहे और पट्ठों को कड़ा करके बारी २ भुजाओं को अरत्नी (कोहनी) स्थान पर दोहरा करो और मुद्गरों को स्कन्ध तक लाओ स्कन्ध और अरत्नी भली प्रकार नीचे को तने रहैं और दण्ड पार्श्वों से मिले रहैं जब मुद्गर नीचे को लेजाओ तो भुजाओं को पूरी लम्बाई तक सीधा लटकाओ ॥

SGDF

दिन ३१	अगस्त १९०३ ई०	जमादिउल्आवल १३२१ हि०	श्रावण १३१० फ०	श्रावण १९६० वि० भार्य १९७२९४९००५				नक्षत्र			चन्द्र राशि		दिन मान	ग्रहउदयास्त तथा तेवहारादि
				सं० प्रविष्ठा	वदि सुदि									
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घड़ी पल	घड़ी पल	
श	१	७	२३	१७	९	५५	५२	वि	५३	४६	वृश्चिक	३८ १२	३२ १०	
र	२	८	२४	१८	१०	५७	३५	अ	५७	१४	वृश्चिक		७	
चं	३	९	२५	१९	११	६०	०	ज्ये	६०	०	वृश्चिक		४	
मं	४	१०	२६	२०	११	०	२९	ज्ये	१	५०	धन	१ ५०	०	
बु	५	११	२७	२१	१२	४	२२	मू	७	२२	धन		३१ ५७	उदय बुध पश्चिमे ३ ४५
बृ	६	१२	२८	२२	१३	८	५८	पू	१३	३२	मकर	३० ८	५४	
शु	७	१३	२९	२३	१४	१३	५४	उ	२०	०	मकर		५१	
श	८	१४	३०	२४	पू०	१८	४८	श्र	२६	२१	कुम्भ	५९ २६	४८	रक्षाबंधनसलूनो
र	९	१५	भा० १	२५	भा० व० १	२३	१५	ध	३२	१२	कुम्भ		४४	
चं	१०	१६	२	२६	२	२६	५४	श	३७	१३	कुम्भ		४१	
मं	११	१७	३	२७	३	२९	३१	पू	४१	१२	मीन	५ १३	३८	
बु	१२	१८	४	२८	४	३१	०	उ	४४	०	मीन		३६	
बृ	१३	१९	५	२९	५	३१	१२	रे	४५	२८	मेष	४५ १८	३२	नाग पञ्चमी
शु	१४	२०	६	३०	६	३०	९	अ	४५	४५	मेष		२८	
श	१५	२१	७	३१	७	२७	५२	भ	४४	५३	वृषभ	५१ २९	२६	
र	१६	२२	८	भा० १	८	२४	३२	कृ	४३	३	वृषभ		२४	सं० सिंह ४४–१९ श्रीकृष्णजन्माष्टमी
चं	१७	२३	९	२	९	२०	१६	रो	४०	२०	वृषभ		२२	गूगानवमी
मं	१८	२४	१०	३	१०	१५	२१	मृ	३६	५८	मिथुन	८ ३९	२०	
बु	१९	२५	११	४	११	९	४७	आ	३३	१०	मिथुन		१८	
बृ	२०	२६	१२	५	१२ १३	२ ५०	५१ ४४	पु	२९	९	कर्क	१५ ६	१६	गोवत्सपूजनम् (ओगन्नायस)
शु	२१	२७	१३	६	१४	५१	३९	पु	२४	५६	कर्क		१२	
श	२२	२८	१४	७	अमा	४५	४७	ऽश्ले	२०	५५	सिंह	२० ५५	९	
र	२३	२९	१५	८	सु.१	४०	२०	म	१७	१४	सिंह		६	
चं	२४	३०	१६	९	२	३५	२७	पू	१४	५	कन्या	२८ १८	३	चन्द्र दर्शन
मं	२५	जमा आ० १	१७	१०	३	३१	२१	उ	११	३९	कन्या		०	
बु	२६	२	१८	११	४	२८	१२	ह	१०	६	तुला	३९ ५१	३१ ५६	गणेश चौथ
बृ	२७	३	१९	१२	५	२६	८	चि	९	३६	तुला		५२	ऋषि पंचमी
शु	२८	४	२०	१३	६	२५	१८	स्वा	१०	१७	वृश्चिक	५६ ५२	४८	
श	२९	५	२१	१४	७	२५	४५	वि	१२	२४	वृश्चिक		४४	
र	३०	६	२२	१५	८	२७	२६	अ	१५	२२	वृश्चिक		४०	
चं	३१	७	२३	१६	९	३०	२०	ज्ये	१९	४३	धन	१९ ४२	३६	

SGDF
Sri Gurugobind Digital Foundation

अगस्त १९०३

आह्निक वृत्तान्त

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१

(२) बाहु पृष्ठ को सामने करके उसी प्रथम कला को इस प्रकार करो कि अंगुलियों की ग्रन्थियां स्कन्धों को स्पर्श करें।

(३) भुजाओं को कन्धों की सीध में इस प्रकार फैलाओ कि उदर भाग ऊपर रहै और बारी २ कन्धों की ओर भुजाको इस प्रकार मोड़ो की मुद्गर ठीक स्कन्ध पर आवे। भुजाएं ऐसी तनी रहें कि कंध की सीध से नीचे न उतरें और जब फैलाओ तो हाथ सीधा करने में पट्ठे तने रहें।

(४) तीसरी कला को इस प्रकार करो कि भुजाओं को बारी २ मोड़ने के स्थान में दोनों को एक साथ मोड़ो ॥

(५) दोनों भुजाओं को मुख की सीध में सीधा फैलाओ कोहनी तनी रहै और शिर पीछे को अकड़ा रहै फिर भुजाओंको कन्धों की सीध में फैलाओ और फिर झट सामने लेआओ इसी प्रकार पुनः पुनः करो। हाथ कन्धों की सीध में फैलाते समय श्वास को नासिका द्वारा बाहर निकालो और मुख की सीध में लाते समय भीतर की ओर खेंचो।

(६) भुजाओं को कोहनी पर मोड़कर ऊपर उठाओ, हथेलियां भीतर की ओर रहें। बारी २ भुजाओं को ऊपर की ओर सीधा लम्बा लेजाओ और पुनः कोहनी को पार्श्व के समीप उतारकर लाओ, शिर तथा शरीर सीधा तना रहै, भुजा पृष्ठ की ओर हटी रहें और छाती आगे की ओर निकली रहै।

(७) किञ्चित् पीठ को झुकाओ, करतल जंघाओं पर रक्खो, छाती भीतर को पिचकी और झुकी रहै, फिर भुजाओं को

SGDF Sri Gurugobind Digital Foundation

दिन ई०	सितम्बर१९०३ई०	ज०आ१३२१हि०	भाद्रपद१३१०फ०	भाद्रपद१९६० वि० आर्य्य१९७२९४९००५				नक्षत्र			चन्द्रराशि		दिन मान	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
				सं०प्रविष्ठा	वदि सुदि									
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घ० प०	घ० प०	
मं	१	८	२४	१७	१०	३४	६	मू	२५	४	धन		३१ ३२	
बु	२	९	२५	१८	११	३८	३५	पू	३१	७	मकर	४७ ४४	२८	
बृ	३	१०	२६	१९	१२	४३	५४	उ	३७	३३	मकर		२४	
शु	४	११	२७	२०	१३	४८	५४	श्र	४४	१	मकर		२०	
श	५	१२	२८	२१	१४	५३	२६	ध	४९	५८	कुंभ	१६ ५९	१६	अगस्त्युदय ५ ५ २ अनंतचौ-
र	६	१३	२९	२२	पू०	५७	१३	श	५५	२१	कुंभ		१२	दश
चं	७	१४	आ० १	२३	आ० व० १	५९	२६	पू	५६	२५	मीन	४३ २२	८	फस्लीवर्षप्रारंभ १३११
मं	८	१५	२	२४	२	६०	०	उ	६०	०	मीन		४	शुक्रास्त पश्चिमे २९ ४४
बु	९	१६	३	२५	२	१	३१	उ	२	२९	मीन		३१ ०	
बृ	१०	१७	४	२६	३	१	२८	रे	४	१७	मेष	५ १७	३० ५६	
शु	११	१८	५	२७	४ ५	० ५८	३२ २४	अ	४	५१	मेष		५२	
श	१२	१९	६	२८	६	५५	११	भ	४	१४	वृषभ	१८ ५०	४८	
र	१३	२०	७	२९	७	५१	३	कृ	२	३६	वृषभ		४६	
चं	१४	२१	८	३०	८	४६	९	रो मृ	५९	४ ५१	मिथुन	२८ २८	४३	
मं	१५	२२	९	३१	९	४०	४३	आ	५३	८	मिथुन		४०	अस्त बुध पश्चिमे ५७ १२
बु	१६	२३	१०	आ० १	१०	३४	५३	पु	४९	६	कर्क	३५ ७	३६	सं० कन्या ४६ । २१
बृ	१७	२४	११	२	११	२८	५२	पु	४५	६	कर्क		३२	
शु	१८	२५	१२	३	१२	२२	५१	ऽश्ले	४०	५१	सिंह	४० ५१	२८	शुक्रोदय प्राक् ९ ५८
श	१९	२६	१३	४	१३	१७	३	म	३७	६	सिंह		२४	
र	२०	२७	१४	५	१४	११	४०	पू	३३	४८	कन्या	४८ ९	२०	
चं	२१	२८	१५	६	अमा	६	५०	उ	३१	११	कन्या		१६	सोमवती अमावस
मं	२२	२९	१६	७	सु१ २	२ ५९	४७ ४२	ह	२९	२८	तुला	५८ ५	१२	चन्द्रदर्शन
बु	२३	र० १	१७	८	३	५७	४१	चि	२८	४२	तुला		८	
बृ	२४	२	१८	९	४	५६	५३	स्वा	२९	३	तुला		४	
शु	२५	३	१९	१०	५	५७	२३	वि	३०	३९	वृश्चिक	१५ ५५	३० ०	
श	२६	४	२०	११	६	५९	९	अ	३३	३७	वृश्चिक		२९ ५६	
र	२७	५	२१	१२	७	६०	०	ज्ये	३७	४६	धन	३७ ४६	५२	
चं	२८	६	२२	१३	७	२	८	मू	४२	४६	धन		४८	
मं	२९	७	२३	१४	८	६	७	पू	४८	५०	धन		४४	दुर्गाष्टमी
बु	३०	८	२४	१५	९	१०	५१	उ	५५	१२	मकर	५ २५	४०	

SGDF
Sri Gurudev Digital Foundation

सितम्बर १९०३ ई०

आह्निक वृत्तान्त

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०

ारी २ सीधा ऊपर को इस प्रकार उठाओ कि वह कन्धों की सीध में आजाएं ॥

(८) भुजाओं को कन्धों की सीध में फैलाओ और दोनों मुष्टियों को कलाई पर से एक साथ जितना घूम सके, घुमाओ। इसी कला को अन्य प्रकार से करना हो तो मुष्टियों को कलाई पर से ऊपर वा नीचे झुकालो ॥

(९) आठवीं कला के सदृश भुजा कर के और मुग्दरों के सिरे पकड़कर कलाई घुमाकर मुग्दरों को दाएं बाएं झुकाओ ॥

(१०) नवीं कला की रीति से मुग्दर बाएं से दाएं को घुमाओ ॥

(११) मुग्दरों को भूमि पर लम्बा रक्खो इस प्रकार कि उसका केन्द्र पदाङ्गुष्ठ के सामने रहै, फिर उन्हें पकड़कर सीधे सावधान खड़े हो, जानु मुड़े हुए न हों तदनु एडी केवल बाएं को अर्धमण्डल घूमो। फिर दक्षिण भुजा को कोहनी पर मोड़कर पीछे पृष्ठ की ओर हटाओ इस प्रकार कि हाथ शरीर रेखा पर लम्बाकार हो, फिर बाएं पग को आगे निकाल भुजा को सहसा आगे को फेंको, फिर झट पीछे पृष्ठ पर्यन्त हटाओ और जिस पग आगे बढ़े थे उसी पग पीछे हटो ॥

(१२) उसी (ग्यारहवें) कला को प्रतिलोम रीति से अर्थात् दाएं को अर्धमण्डल घूमकर बाएं भुजा और दक्षिण पग से काम लो ॥

(१३) शरीर को पदाङ्गुष्ठों तथा भुजाओं पर तोलो फिर कोहनियों पर भुजा-

SGDF

दिन ३१	अक्तूबर १९०३ ई०	रज्जब १३२१ हि०	आश्विन १३११ फ०	आश्विन १९६० वि० आर्य १९७२९४९००५				नक्षत्र			चन्द्र राशि		दिन मान	ग्रहउदयास्त तथा तेवहारादि
				सं० प्रविष्ठा	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घड़ी पल	घड़ी पल	
बृ	१	९	२५	१६	१०	१५	५४	श्र	६०	०	मकर		२९ ३६	दशहरा-वि.दशमी
शु	२	१०	२६	१७	११	२१	०	श्र	१	४०	कुम्भ	३४ ४४	३२	
श	३	११	२७	१८	१२	२५	३९	ध	७	४८	कुम्भ		२८	
र	४	१२	२८	१९	१३	२९	३२	श	१३	१४	कुम्भ		२४	उदय बुध प्राक् ५८ १२
चं	५	१३	२९	२०	१४	३२	२४	पू	१७	४३	मीन	२१ ६	२०	
मं	६	१४	३०	२१	पू०	३४	२	उ	२१	४	मीन		१६	
बु	७	१५	का० १	२२	का० ब० १	३५	२४	रे	२३	८	मेष	२३ ८	१२	
बृ	८	१६	२	२३	२	३३	२८	अ	२४	०	मेष		८	
शु	९	१७	३	२४	३	३१	७	भ	२३	३८	वृषभ	३८ १७	४	
श	१०	१८	४	२५	४	२७	५९	कृ	२२	१३	वृषभ		० ०	कर्वा चौथ
र	११	१९	५	२६	५	२३	५६	रो	१९	५९	मिथुन	४८ २०	२ ६	
चं	१२	२०	६	२७	६	१९	७	मृ	१६	४८	मिथुन		५२	
मं	१३	२१	७	२८	७	१३	४६	आ	१३	११	कर्क	५५ ११	४८	
बु	१४	२२	८	२९	८	८	०	पु	९	१२	कर्क		४४	होई
बृ	१५	२३	९	३०	९ १०	२ ५६	४ ०	पु	५	२	कर्क		४०	
शु	१६	२४	१०	३१	११	५०	२४	श्ले.म	० ५७	५६ ५	सिंह	५६ ०	३६	
श	१७	२५	११	का० १	१२	४५	८	पू	५३	४०	सिंह		३२	सं० तुला १३।११
र	१८	२६	१२	२	१३	४०	२०	उ	५०	२३	कन्या	७ ५८	२८	यम दीवा
चं	१९	२७	१३	३	१४	३६	२४	ह	४८	५३	कन्या		२४	
मं	२०	२८	१४	४	अमा	३३	२५	चि	४७	५५	तुला	१८ २४	२०	दिवाली परलोकगमम महर्षि दयानन्द
बु	२१	२९	१५	५	सु.१	३१	२८	स्वा	४८	३७	तुला		१६	दयानन्द सं० प्रारम्भ२१
बृ	२२	३०	१६	६	२	३०	४६	वि	४९	२७	वृश्चिक	२४ १४	१२	चद्रदर्शनभैयादूज
शु	२३	शा. १	१७	७	३	३१	२३	अ	५२	२	वृश्चिक		८	
श	२४	२	१८	८	४	३३	१६	ज्ये	५५	५०	धन	५५ ५०	४	
र	२५	३	१९	९	५	३६	२०	मू	६०	०	धन		२८ ०	
चं	२६	४	२०	१०	६	४०	२८	मू	०	४५	धन		२७ ५७	
मं	२७	५	२१	११	७	४५	१८	पू	६	२९	मकर	१२ २	५४	
बु	२८	६	२२	१२	८	५०	३०	उ	१२	४६	मकर		५१	अस्त बुध प्राक् १८ ३
बृ	२९	७	२३	१३	९	५५	३९	श्र	१९	१४	कुंभ	५२ २०	४७	
शु	३०	८	२४	१४	१०	६०	०	ध	२५	२६	कुंभ		४४	
श	३१	९	२५	१५	१०	०	२३	श	३१	४	कुंभ		४०	

SGDF Sri Gangamata Digital Foundation

अक्टूबर १९०३ई	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

ओं को मोड़कर नीचे झुको और फिर सीधे करलो (जिस प्रकार दण्ड किया करते हैं) शरीर दण्डाकार ऋजु (सीधा) शिर पीछे को अकड़ा हुआ रहे, जानु झुकने न पावें और शरीर का कोई अङ्ग पृथिवी को स्पर्श न करे । इस कला में मुद्गरों का कुछ काम नहीं ॥

(१४) शरीर को कटि भाग पर दोनों ओर झुकाओ, शरीर का अधोभाग न हिलने पावे फिर बारी २ दाईं और बांई भुजा को कोहनी पर मोड़कर मुद्गर सहित मुष्टि को कुक्षि में दबाओ ॥

(१५) चित्त लेटो, हाथ पार्श्वों में लगे रहें फिर शरीर को नितम्ब देश पर उठाकर सीधे बैठजाओ और आगे पांव की ओर झुको और फिर चित्त लेट जावो । झुकते समय श्वास को बाहर नासिका द्वारा निकालो और लेटते समय भीतर खेंचो । प्रथम यह कला रिक्त हस्त (खाली हाथ) करे पश्चात् हाथों में मुद्गर लेकर और हाथों को शिर के ऊपर पीछे को फैलाकर उसी प्रकार उठे और लेटे । आरम्भ में शिष्य चाहे तो अपने पांच खाट अथवा किसी अन्य वस्तु के नीचे रख सकता है ॥

(१६) चित्त लेटकर हाथों को शिर के पीछे को फैलाओ, पगों को फैलाए हुए और जानुओं को अकड़ाए हुए दोनों टांगों को धीरे २ यथावकाश ऊपर को हटाओ और पुनः शनैः २ नीचे को ले आओ ॥

(१७) धीरे २ पदाङ्गुष्ठों के बल उठो और फिर धीरे २ पार्ष्णियों (एड़ी) को भूमि पर टिका कर खड़े हो ॥

SGDF Sri Gurgadhar... Digital Foundation

दिन ई०	नवम्बर १९०३ई०	शाबान१३२१हि०	कार्तिक१३११फ़०	कार्त्तिक१९६० वि० आर्य्य१९७२९४९००५				नक्षत्र			चन्द्र राशी		दिन मान	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
				सं प्रविष्टा	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घ० प०	घ० प०	
र	१	१०	२६	१६	११	४	१९	पू	३५	४७	मीन	१९ २६	२७ २६	प्रबोधिनी११—देवउठान—
चं	२	११	२७	१७	१२	७	१३	उ	३९	२१	मीन		३२	
मं	३	१२	२८	१८	१३	८	५५	रे	४१	४५	मेष	४१ ४४	२८	
बु	४	१३	२९	१९	१४	९	१९	अ	४२	४९	मेष		२४	
बृ	५	१४	३०	२०	पू०	८	२५	भ	४२	४४	वृषभ	५७ २६	२१	टुकड़ी
शु	६	१५	मा० १	२१	मा० व०१	९	२१	कृ	४१	३२	वृषभ		१८	शब्बरात
श	७	१६	२	२२	३	३ ५८	१ ५३	रो	३९	२०	वृषभ		१५	
र	८	१७	३	२३	४	५४	७	मृ	३६	२३	मिथुन	० ५२	१२	
चं	९	१८	४	२४	५	४८	४७	आ	३२	५१	मिथुन		८	
मं	१०	१९	५	२५	६	४३	६	पु	२८	५५	कर्क	१४ ५४	५	
बु	११	२०	६	२६	७	३७	१२	पु	२४	४६	कर्क		२	
बृ	१२	२१	७	२७	८	३१	३०	ऽश्ले	२०	३९	सिंह	२० ३९	२६ ५९	
शु	१३	२२	८	२८	९	२५	३७	म	१६	४२	सिंह		५६	
श	१४	२३	९	२९	१०	२०	२९	पू	१३	७	कन्या	२६ २	५२	
र	१५	२४	१०	३०	११	१५	४८	उ	१०	१०	कन्या		४९	
चं	१६	२५	११	मा० १	१२	११	५५	ह	७	५९	तुला	३६ २१	४६	सं० वृश्चिक ६ । ११
मं	१७	२६	१२	२	१३	६	५	चि	६	४४	तुला		४३	
बु	१८	२७	१३	३	१४	७	१५	स्वा	६	३४	वृश्चिक	३ २९	४०	
बृ	१९	२८	१४	४	अमा	६	४२	वि	७	४८	वृश्चिक		३६	
शु	२०	२९	१५	५	सु१	७	२६	अ	१०	१५	वृश्चिक		३३	चन्द्रदर्शन
श	२१	रम० १	१६	६	२	९	२७	ज्ये	१३	४६	धन	१२ ४६	३०	
र	२२	२	१७	७	३	१२	४२	मू	१८	२७	धन		२७	
चं	२३	३	१८	८	४	१५	१४	पू	२४	१	मकर	४० २४	२४	
मं	२४	४	१९	९	५	२१	४९	उ	३०	१३	मकर		२२	
बु	२५	५	२०	१०	६	२७	७	श्र	३६	४०	मकर		२१	
बृ	२६	६	२१	११	७	३२	२०	ध	४२	५७	कुम्भ	९ ५४	२०	
शु	२७	७	२२	१२	८	३७	७	श	४८	४४	कुम्भ		१८	
श	२८	८	२३	१३	९	४१	४	पू	५३	४०	मीन	० २३	१७	
र	२९	९	२४	१४	१०	४३	५९	उ	५७	३३	मीन		१६	
चं	३०	१०	२५	१५	११	४५	३९	रे	६०	०	मीन		१४	

नवं० १९०३	आन्हिक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	

(१८) भुजाओं को पार्श्वों में लटकाकर कलाई को भीतर और बाहर की ओर फेरो ॥

SGDF
Sri Durgashankar Digital Foundation

दिन-३१	दिसम्बर१९०३ई०	रमज़ान१३२१हि०	मार्गशीर्ष १३११फ़	मार्गशीर्ष १९६०वि० आर्य्य१९७२९४९००५				नक्षत्र			चन्द्रराशि		दिन मान	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
				सं प्रविष्टा	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	राशि	घ० प०	घ० प०	
मं	१	११	२६	१६	१२	४६	२	रे	०	१२	मेष	० १२	२६ १३	
बु	२	१२	२७	१७	१३	४५	८	अ	१	३५	मेष		१२	
बृ	३	१३	२८	१८	१४	४३	१	भ	१	४५	वृषभ	१६ ३१	१०	
शु	४	१४	२९	१९	पू०	३९	५०	कृ रो	० ५८	५० ५१	वृषभ		९	उदय बुध पश्चिमे ५०।८
श	५	१५	पौष १	२०	पौष व१	३५	४४	मृ	५६	४	मिथुन	२९ २७	८	
र	६	१६	२	२१	२	३०	५५	आ	५२	४१	मिथुन		६	
चं	७	१७	३	२२	३	२५	१५	पु	४८	४९	कर्क	२४ ४७	५	
मं	८	१८	४	२३	४	१९	३५	पु	४४	४२	कर्क		४	
बु	९	१९	५	२४	५	१३	४३	ऽश्ले	४०	३३	सिंह	४० ३३	२	
बृ	१०	२०	६	२५	६	७	५३	म	३६	३०	सिंह		१	
शु	११	२१	७	२६	७	२ ५७	१८ ८	पू	३२	५०	कन्या	४० ३	२६ ०	
श	१२	२२	८	२७	८	५२	३५	उ	२९	४४	कन्या		२५ ५८	
र	१३	२३	९	२८	९	४८	५०	ह	२७	२०	तुला	५६ ३५	५७	
चं	१४	२४	१०	२९	१०	४६	४०	चि	२५	५१	तुला		५६	
मं	१५	२५	११	पौष १	११	४४	२२	स्वा	२५	२६	तुला		५४	सं० धन ३५।३०
बु	१६	२६	१२	२	१२	४३	५०	वि	२६	१२	वृश्चिक	११ १	५३	
बृ	१७	२७	१३	३	१३	४४	४८	अ	२८	१५	वृश्चिक		५२	
शु	१८	२८	१४	४	१४	४६	५८	ज्ये	३१	३२	धन	३१ ३२	५०	
श	१९	२९	१५	५	अमा	५०	१८	मू	३५	५८	धन		४९	
र	२०	३०	१६	६	सु१	५४	३९	पू	४१	४७	मकर	५७ ५९	४८	चन्द्रदर्शन
चं	२१	श१	१७	७	२	५९	४२	उ	४७	२८	मकर		४६	
मं	२२	२	१८	८	३	६०	०	श्र	५३	५७	मकर		४४	रवि उत्तरे
बु	२३	३	१९	९	४	४	५८	ध	६०	०	कुम्भ	२९ ८	४६	
बृ	२४	४	२०	१०	५	१०	११	ध	०	१९	कुम्भ		४८	
शु	२५	५	२१	११	६	१४	५५	श	६	१५	मीन	५५ ८	४९	क्रुसमस डे--बड़ा दिन
श	२६	६	२२	१२	७	१८	५३	पू	११	२६	मीन		५०	
र	२७	७	२३	१३	८	२१	४४	उ	१५	३४	मीन		५२	
चं	२८	८	२४	१४	९	२३	२०	रे	१८	३१	मेष	१८ ३१	५३	
मं	२९	९	२५	१५	१०	२३	३८	अ	२०	१३	मेष		५४	
बु	३०	१०	२६	१६	११	२२	४०	भ	२०	४०	वृषभ	३५ १०	५६	
बृ	३१	११	२७	१७	१२	२०	३०	कृ	२०	०	वृषभ		२५ ५७	

डिसम्बर १९०३	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

यंत्र (नक़्शा) मुद्गरकला नित्य प्रति करने के लिये

कला नम्बर विधि तथाचित्र अनुसार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
आरम्भ में कला करने कीसंख्या	३०	१५	१०	८	५	१२	८	जबतकथकित न हो			५	५	३	१५	३	३	२५	२५
संख्या जो प्रति दिन बढ़ाईजायगी	१/२	१/३	१/३	१/३	१/४	१/३	१/४	तथा			१/३	१/३	१/७	१/२	१/४	१/५	१/४	१/४
नियत कला अवधि	१२०	६०	४०	३२	२०	४८	३२	तथा			२०	२०	१२	६०	१२	१२	१००	१००

गत यंत्र में $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{3}$ आदि से यह तात्पर्य्य है कि २ वा ३ दिन के पश्चात् एक संख्या उस कला की बढ़ायी जावे, यथा—नम्बर १३ की कला आरम्भ में ३ की जावेगी तो सात दिन तक लगातार तीन करेंगे फिर आठवें दिन एक अधिक करके चार की जावेगी इत्यादि ॥

नोट—व्यायाम करने के लिये सर्वोत्तम समय प्रभात वेला है। शौचादि से निवृत्त होकर करना चाहिये परन्तु यदि किसी को वह समय अपने लिए अनुचित हो तो जिस समय उस का जी चाहे करे केवल भोजन करने के पश्चात् त्याज्य है ॥

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

आर्य्यदर्शयितृ

नूतनमुद्रितपुस्तकानि ॥

सूर्यसिद्धान्त—जिस को बने २१६९००० बर्ष हुवे भाषानुवाद और बृहद्भूमिका सहित स्वामि यंत्रालय मेरठ शहर में छप रहा है। इस की भूमिका में चारों वेद, ब्राह्मण, गृह्यसूत्र, ज्योतिष के प्राचीन एवं नवीन ग्रन्थ, अंग्रेज़ी, बंगला और महाराष्ट्र भाषा के ग्रन्थ, महाभारत आदि इतिहास एवं अन्यान्य भारतवर्षीय ग्रन्थों से ज्योतिषविषयक उल्लेखों का संग्रह कर पूरी २ मीमांसा की गई है। पृथिवी का भ्रमण आदि प्राचीन ग्रन्थों से सिद्ध किया गया है। ग्रन्थ देखने योग्य है। इस ग्रन्थ को पौराणिक एवं वैदिक सब ही सब से पुराना एवं मान्य कोटि में मानते हैं। इस ग्रन्थ में १४ अध्याय और ५०० अनुष्टुप् श्लोक हैं ॥ इन्हीं १४ अध्यायों में ज्योतिष के सब विषय आगये हैं। इस का अनुवाद बा० उदयनारायण सिंह ने किया है। मूल्य घटिया काग़ज़ १॥) बढ़िया काग़ज़ १॥।) डाकव्यय अलग है ॥ अनुमान सितम्बर १९०२ ई० तक प्रकाशित हो जावेगा। मिलने का ठिकाना उक्त यंत्रालय है ॥

चीन में तेरह मास—इस नाम का पुस्तक नागरी भाषा में ठाकुर गदाधरसिंहजी हेड-क्लर्क नं०७बङ्गाल राजपूत पलटन (वर्त्तमान स्थान लखनौ-दिलकुशा)तथा भूत पूर्व मंत्री श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा बङ्गाल विहार ने तैय्यार करके १९०२ ई० में प्रकाशित किया है। पुस्तक अपने ढंग में नितान्त अपूर्व और निराला है। जिस को रचयिता ने स्वयम् चीन में १३ मास रहकर निर्माण किया है। इसमें उन्हों ने (१९००-०१) चीनदेश के महासङ्ग्राम के आंखों देखे सम्पूर्ण सविस्तर वृत्तान्त, चीन और जापान का संक्षिप्त इतिहास, रस्म व रिवाज, चीनियों के धार्मिक विश्वास, खान पान, व्यवहार बर्त्ताव, फौजी और देशी वृत्तान्त, प्रसिद्ध मंदिरों और मुख्य २ स्थानादि का सर्वाङ्ग वर्णन, बाक्सर विद्रोह, विदेशी अधिकार इत्यादि प्रायः सभी जानने योग्य विषयों का सविशेष वर्णन किया है। भाषा अति सरल, ललित और चित्ताकर्षक है। लिखने की शैली ऐसी है कि एक वार पुस्तक आरम्भ करने पर छोड़ने को जी नहीं चाहता। वृत्त के साथ२ मीठे उपदेश दृष्टान्त रूप से पुस्तक की अधिकतर शोभा बढ़ाते हैं। ग्रन्थकर्त्ता का पुरुषार्थ वास्तव में सराहने योग्य है। पुस्तक का सौन्दर्य्य देखने पर ही निर्भर है। इस छोटी सी आलोचना में उसके गुण वर्णन करना आकाशमुष्टिहननवत् है। रायल आकार में सफ़ेद चिकने काग़ज़ पर सुन्दर टाईप में लखनौ नवलकिशोर यंत्रालय में छपा है छपाई भी बहुत अच्छी है पृष्ठ ३१९ मूल्य १॥) मात्र डाकव्यय पृथक् है। हम अपने पाठकों को इस रुचिकर पुस्तक के पढ़ने की प्रेरणा करते हैं। पुस्तक ग्रन्थकर्त्ता के पास से मिलेगा ॥

चातुर्वर्णानां संस्कृतनाममाला—(आर्य्य नामावलिः) देखा जाता है कि संस्कृत नामों के एकत्र न मिलने के कारण बहुधा मातापिता को अपने बालकों के नाम रखते समय बहुत कष्ट उठाना पड़ता है यह भान होते ही १९०१ की आर्य्य यंत्री (उर्दू) में सम्पादक की ओर से एक लेख "नाम करण संस्कार" निकलाथा जिस में ८७९ नामों की एक आवलि दी थी अब उसको इतने ही और नाम अधिक करके पुस्तकाकार भूमिका सहित छपवाया है इस से अतिरिक्त सुगन्धित रोगनाशक हवन सामग्री की सूची और एक सुन्दर नूतन भजन विवाह समय आशीर्वाद देने का भी अधिक बढ़ाया गया है मूल्य उर्दू तथा नागरी पृथक् २ विना डाकव्यय =) है। अधिक लेने वालों को उचित कमीशन भी दिया जावेगा। जिसको मंगाना हो मंत्री आर्य्य समाज कर्णाल (पंजाब) से मंगालें ॥

यज्ञ—नामक पुस्तक का विज्ञापन अन्यत्र देखो ॥

SGDF

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

भारतवर्षान्तर्गतार्य्यप्रतिनिधिसभानां संक्षिप्तवृत्तान्तः ॥

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब तथा सीमा प्रान्त
स्थान लाहौर (लवपुर)

प्रधान-श्रीमान् पं० रामभजदत्तजी बी० ए० वकील लाहौर	मंत्री—श्रीमान् महाशय रौशनलाल जी बी० ए० बैरिस्टर लाहौर

यह सभा श्रीमान् स्वामी जी महाराज के स्वर्गवास पश्चात् वैदिक धर्म के प्रचार और रक्षा के निमित्त स्थापित की गई थी। सन् १८९५ ई० में इस की राजनियमानुसार रजिस्टरी होचुकी है। १९०२ में इस सभा से २२५ समाज सम्बन्ध रखते थे। इन में से ५२ समाजों की ओर से ६५ प्रतिनिधि नियत थे ॥

सभा के आधीन निम्नलिखित फण्ड (कोष) समाचार पत्र, पुस्तकालय, पाठशालादि हैं:--

(१) **पूंजी**-३० जून १९०२ को सारी पूंजी सभा की १२५३७२≡)३ थी, समस्त आय ३०जून १९०२पर्यन्त १६८२८)२ हुआ और समस्त व्यय २६१७८)६ हुवा॥

अधोलिखित कोषों का आय सितम्बर १९०१ से जून १९०२ तक निम्न लिखित प्रकार हुआ।

कोष	समस्त पूंजी	आय	कोष	समस्त पूंजी	आय
वेद प्रचार	२८०५९।=)९	६१८२॥)१	चिरंजीलालस्मा०	२४-)॥	३०)
गुरुकुल	४१४७७॥=)१॥	७६२५॥।-)॥।			
लेखराम स्मारक	२२३३९।॥≡)९	३०९।=)॥।	व्यभिचार निवारण	४८६)	४०)
गुरुदत्त स्मारक	७१३३।≡)	३५१।)?	प्रेमदेवी होम करण	६००)	३०)व्याज

(२) **वेद प्रचार कोष**-यह कोष सन् १८९४ई० में वैदिक धर्मोपदेशक धर्मोन्नति तथा वेदप्रचार के लिये एवं पुस्तकालय, पाठशालादि खोलने के लिये स्थापितकिया गया था, जिस्के कारण उपदेशकों की संख्या तथा वैदिक धर्म प्रचार में बहुत उन्नति हुई। उक्त कोष में से एक उपदेशक मद्रास प्रान्त के लिये भी रक्खा हुआ है॥

दिसम्बर १९०१ में कांग्रेस के अवसर पर सभा ने २००) के ट्रैक्ट (लघु पुस्तक) श्रीमान् पण्डित शङ्करनाथ जी उप प्रधान आर्य्य समाज कलकत्ता की सेवा में वितीर्णार्थ भेजे थे तदनु जब श्रीमान् ला० रौशन लाल जी मन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा विलायत पधारे तो १००० अंग्रेज़ी ट्रैक्ट वितीर्णार्थ उन को दिये गये। यह पुस्तक महाराजा एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक समय वितीर्ण किये गये, जो वैदिक धर्मप्रचार का अच्छा अवसर था ॥

(३) **गुरुकुल कोष**---प्राचीन रीत्यनुसार पूर्ण ब्रह्मचारी और वैदिक धर्मवेत्ता बनाने के लिये यह गुरुकुल गङ्गा तट पर हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में २४ मार्च १९०२ को स्थापित किया गया है;इसमें ५० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। श्रीमान् महाशय मुन्शीरामजी इसके मुख्य अधिष्ठाता और श्रीमान् पं० गंगादत्त शास्त्रीजी मुख्य अध्यापक हैं। सविस्तर वृत्तान्त उचित स्थान में वर्णित है वहां देख लेवें ॥

(४) **लेखराम स्मारक कोष**--यह कोष श्रीमान् पं० लेखराम जी आर्य्यपथिक के स्वर्गवास होने पर उन के धार्मिक उद्देश के पूर्ण करने के लिये स्थापित किया गया था। इस कोष से २०) मासिक उक्त पण्डित जी की माता और पत्नी* के निर्वाहार्थ दिया जाता है। श्रीमान् महाशय मुन्शीराम जी, पण्डित जी का जीवन चरित्र तय्यार कर रहे हैं और उक्त महाशय के सुप्रबन्ध से पण्डित जी की समस्त अमुद्रित पुस्तकें यंत्रित हो चुकी हैं। दो उपदेशक भी इस कोष से प्रचार के लिये नियत हैं ॥

(५) **गुरुदत्तस्मारक कोष**—यह कोष श्रीमान् विद्वद्वर्य्य पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए० के स्वर्गवास पश्चात् नियत किया गया था, जिस्में से २०) मासिक उनकी स्त्री तथा बालकों के निर्वाहार्थ दिया जाता है ॥

(६) **चिरञ्जीवलालस्मारक कोष**—यह कोष लाला चिरञ्जीवलाल लुधियाना निवासी की मृत्यु पर स्थापित किया गया था इस कोष से ५) मासिक उनकी स्त्री और बालकों के पालनादि के लिये दिया जाता है ॥

(७) **वैदिकपुस्तकालय लाहौर**—इस पुस्तकालय में वेद, वेदांग तथा अन्य आर्ष पुस्तकों के अतिरिक्त प्रत्येक मतमतान्तर तथा अनेक प्रकार के विद्या सम्बन्धी पुस्तक विद्यमान हैं। सन् १९०१ में ५५७६ पुस्तक थे, १९०२ जून तक ३००

---

* पण्डित जी की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी का देहान्त जालन्धर में ३ जुलाई १९०२ ई०(आषाढ वदि १३ सं० १९५९ विक्रमी) को होगया ॥

SGDF

पुस्तक अधिक आए । दो आने मासिक देने से प्रत्येक मनुष्य पुस्तकाध्ययन कर सकता है । २५८० मनुष्यों ने उक्त तिथि तक पुस्तक अध्ययन किया । नियत मासिकादि के देने से लाहौर से बाहर के रहने वाले भी पुस्तक ले सकते हैं । पुस्तकों का सूची -) मूल्य पर मिलता है ॥

(८) **समाचार पत्रादि**-उक्त सभा की ओर से "आर्य्य पत्रिका" नामक समाचार पत्र अंग्रेज़ी भाषा में साप्ताहिक निकलता है।जिसमें सामाजिक समाचारों और लेखों के अतिरिक्त बहुत से धार्मिक और विद्या सम्बन्धी लेख प्रकाशित होते हैं । मूल्य ५) वार्षिक है और "आर्य्य मुसाफ़िर मैगज़ीन" उर्दू में पं० लेखराम आर्य्य मुसाफ़िर की यादगार में मासिक पुस्तकाकार निकलता है । इस के सम्पादक ला० वज़ीरचन्द जी हैं ।इस पुस्तक में वेद मंत्रादि की व्याख्या और इतर धार्मिक सिद्धान्तों पर सभ्यतापूर्वक युक्ति और प्रमाण सहित संवाद तथा विद्या और इतिहास सम्बन्धी लेख दिये जाते हैं । मूल्य २) वार्षिक है॥ एप्रिल सन् १९०१ से सभा की ओर से एक "मासिक पत्र" नागरी में जारी हुआ है मूल्य केवल ।) वार्षिक है इस में सभाके कार्य्यालयकी कार्य्यवाही और आयव्ययादि का लेखा मुद्रित होता है इसकी मुद्रित संख्या ९०० है । प्रथम यह सार्वत्रिक पत्र उर्दू में छपता था अब १९०२ से नागरी में प्रकाशित होता है ॥

(९)**वैदिक संस्कार**--सम्प्रति संस्कार प्रायः सभी समाजों में होते हैं अतएव उनकी यथावत् संख्या का ज्ञात होना कठिन है । अनुमान संख्या एक सहस्र से न्यून नहीं है ॥

(१०) **शुद्धि प्रायश्चित्तादि**-अनेक समाजों में समय २ पर पतित शुद्ध किये जाते रहे हैं ठीक संख्या ज्ञात नहीं ॥

(११)**शास्त्रार्थ**-इस वर्ष कोई बड़ा शास्त्रार्थ नहीं हुआ तथापि छोटे २ शास्त्रार्थ जो सभा के उपदेशकों को प्रायः करने पड़ते हैं २०, २५ से न्यून नहीं होंगे ॥

(१२) **नूतन समाज**-१९०२ में ३० जून तक २७ नये समाज स्थापित हुए गतवर्ष ३२ हुए थे । महामारी (प्लेग) के कारण उपदेशक अनेक नगरों में नहीं जा सके जिस से प्रचार में बाधा हुई ॥

(१३)**मेलों पर प्रचार**-१९०२में यद्यपि राज्य की ओर से महामारीके कारण बहुधा मेले बन्द किये गये तथापि वैशाखी के दिन कटाद्यादि मेलों पर प्रचार किया गया ॥

(१४) **पुस्तक प्रचारिणी सभा**-ला० आत्माराम जी रचित छः पुस्तक छप रहे हैं जो अगस्त मास के अन्त तक छपकर बिकने लगेंगे । इस से अतिरिक्त

SGDF

एक बृहद् ग्रन्थ आर्य्य सिद्धान्त सम्बन्धी लिख चुके हैं जिसका प्रथम अध्याय द्वितीय वार शोध कर सभा के कार्य्यालय में छपवाने के लिये भेज दिया है ॥

(१५)**वार्षिकोत्सव**–१९०२में३१वार्षिकोत्सव हुए बहुत से उत्सव महामारी के कारण रुक गये ॥

आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रदेश *
स्थान मुरादाबाद

प्रधान—श्रीमान् कुंवर हुक्मसिंहजी वर्मा (आगरा)	मंत्री—मुं० नारायण प्रसाद जी (मुरादाबाद)

यह सभा भी स्वामीजी महाराज के पश्चात् वैदिक धर्म्म प्रचारार्थ स्थापित की गई थी। सन् १८९७ में इसकी राज्य नियमानुसार रजिस्टरी हो चुकी है । इस सभा में ३३० समाज प्रविष्ट हैं और उनकी ओर से २२९ प्रतिनिधि नियत हैं । समस्त पूंजी ३०जून१९०२ को १२७८४।)५ थी।सभा के आधीन निम्नलिखित कोष पत्रादिक हैं:--

(१)**वेदप्रचारकोश**—यह कोष १८९६ में वैदिक धर्म प्रचार और तदुन्नत्यर्थ स्थापित किया गया था इस कोष में ३० जून को ११५३≡)७ एकत्रित था ॥

(२) **लेखराम स्मारक कोष**—यह कोष सन् १८९७ में स्थापित किया गया था। इस की पूंजी १०४५॥।-)॥ है। पण्डित जी कृत पुस्तकों में से हुज्जतुल-इस्लाम का भाषानुवाद छप चुका है। श्रीमान् महाशय गिरिधारीलाल जी आर्य्यसुहृद् तदुद्देश्य पूर्णार्थ नियत हैं ॥

(३) **गुरुकुल कोष**—इस के लिये एप्रिल १९०० से काम करना आरम्भ हुआ था। अब इस में ५४४०॥।≡) ८ है ॥

(४) **पुस्तकालय**—इस पुस्तकालय में गतवर्ष वैदिक धर्म और अन्य मतमतान्तर सम्बन्धी २९० (मूल्य७१२) के लगभग पुस्तक थे। १९०२ में ७५ पुस्तक १६) के मोल लिये गये, दो पुस्तक चीनी भाषा के हैं। अब समस्त पुस्तक ३६५ हैं जिन का मूल्य ७४८) है ॥

(५)**समाचार पत्र**—सभा की ओर से "आर्य्यमित्र" नामक समाचार पत्र नागरी भाषा में साप्ताहिक प्रकाशित होता है। मूल्य२) वार्षिक है। यह आर्य्य भास्कर नाम सभा के निज यंत्रालय में छपता है ॥

---

* पूर्व इस का नाम पश्चिमोत्तर देश था ॥

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

(६) **आर्य्यपुस्तकप्रचारिणी सभा**—इस सभा के निरीक्षक पं० भगवानदान जी, साहू ब्रजरत्न जी, ठाकुर मशालसिंहजी हैं। इस कोष में ६२५) जमा है ॥ १९०१ में छः ट्रैक्ट तैय्यार किये गये ॥

(७) **नूतन समाज**—१९०२ में ३० जून तक ५६ नये समाज स्थापित हुए गत वर्ष १५ समाजहुए थे ॥

(८) **वैदिकसंस्कार**—वर्त्तमान वर्ष में वैदिक संस्कारों की ठीक २ संख्या ज्ञात नहीं हो सकी परन्तु यह निश्चय है कि पूर्व की अपेक्षा अब अधिक होते हैं। कोई भी समाज ऐसा नहीं जहां वर्ष में दो एक संस्कार न होते हों ॥

(९) **वार्षिकोत्सव**—३० जून तक ३२ समाजों ने वार्षिकोत्सव किये। गतवर्ष ४१ हुवे थे ॥

(१०) **मेलों पर प्रचार**—मेला कुम्भ प्रयाग, मेला जन्माष्टमी फ़ीना, रामलीला मुरादाबाद, मेला ककोड़ा, गणमुक्तेश्वर, रामलीला पवायां, शाकम्भरीदेवी, बिलसी, गङ्गास्नान कार्त्तिक नागल, ढाईघाट, गोलागोकरण, गुरुरामरायका झण्डा देहरादून, सय्यदसलर बहरायच, इत्यादि मेलों पर सभा की ओरसे प्रचार किया गया। अधिक प्रचार प्रयाग के मेले पर तत्रस्थ समाज के प्रबन्ध से हुआ ॥

(११) **शुद्धि प्रायश्चित्तादि**— कतिपय समाजों में पतित शुद्ध किये गये परन्तु ठीक २ संख्या के ज्ञात न होने से नहीं लिखी गई ॥

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

स्थान अजमेर

प्रधान—श्रीमान् मु० पद्मचन्द्र जी

मंत्री—श्रीमान् बाबू रामविलास जी शारदा

यह सभा राजस्थान में वैदिक धर्म प्रचारार्थ स्थापित की गई थी। इस की राज्य नियमानुसार रजिस्टरी हो चुकी है। उक्त सभा ने वेद प्रचार कोष खोल रक्खा है जिस में सम्प्रति २०००) के लग भग रुपया है। आर्य्य समाज अजमेर की ओर से एक मासिक पत्र "आर्य्य" नामक नागरी में निकलता है। मूल्य ॥।) वार्षिक है॥

आर्य्य प्रतिनिधि सभा बङ्गाल विहार

स्थान बांकीपुर ज़िला पटना

प्रधान—श्रीमान् बाबू बालकृष्ण सहाय जी वकील (रांची)

मंत्री—श्रीमान् बाबू जयनारायण सहाय जी (रांची)

SGDF Sri Gangeshwari Digital Foundation

यह सभा बङ्गाल विहार में वैदिक धर्म प्रचारार्थ स्थापित की गई थी। सन् १८९७ से वेद प्रचार कोष विद्यमान है, जिस्की पूंजी बहुत सूक्ष्म है। सभा की ओर से "आर्य्यावर्त्त" नामक समाचार पत्र प्रति सप्ताह नागरी भाषा में प्रकाशित होता है। सम्पादक बाबू बालकृष्ण सहाय जी हैं। इस प्रान्त में एक वैदिक पाठशाला भी रांची में खोली हुई है। अप्रैल १९०२ में सभा ने निज नागरी यंत्रालय मोल लेकर नियत किया है, जिस में आर्य्यावर्त्त छपता है। बांकीपुर में सभा के लिये मन्दिर बनाने का प्रबन्ध हो रहा है।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश तथा विदर्भ

स्थान नरसिंहपुर (सी. पी.)

प्रधान--श्रीमान् पण्डित खूबचन्द जी बुधूलया (कौड़िया)

मंत्री--श्रीमान् पण्डित विहारीलाल जी द्विवेदी

यह सभा २७ दिसम्बर १८९९ को वैदिक धर्म प्रचारार्थ स्थापित की गई थी और उसी समय वेद प्रचार कोष भी खोला गया था। आयव्यय ५००) वार्षिक है। उक्त सभा के आधीन २६ समाज हैं। १९०२ में सभा के उपदेशकों ने अति परिश्रम और पुरुषार्थ से वैदिक धर्मोपदेश कर के ९ नूतन समाज स्थापित किये और बहुत से स्थानों में बहुत से पुरुष आर्य्य हो गए और शीघ्र ही वहां समाज होने वाले हैं। ब्राह्मण घाट के मेले पर प्रचार कियागया। सभा की ओर से एक पुस्तकालय है जिस में २०० के लगभग पुस्तक हैं। और नरसिंहपुर में एक पाठशाला भी स्थापित है जिस का सविस्तर वृत्तान्त उचित स्थान में लिखा गया है। इस प्रान्त की छोटी २ राजधानियों में पं० गणपति शर्म्मा को प्रचारार्थ भेजा था जहां उन के व्याख्यानों का उत्तम प्रभाव पड़ा और समाज से अब वहां के पुरुषों का प्रेम अधिक होता जाता है।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

स्थान मुम्बई

प्रधान--श्रीमान् डाकृर मोरेश्वर गोपाल देशमुख बी० ए० एस० सी. एम० डी० जी० बी०

मंत्री—श्रीमान् मास्टर प्राणजीवनदास कान्हूदास जी

यह सभा नाम मात्र है और इस में कुछ कार्य्य नहीं होता परन्तु आर्य्य समाज मुम्बई और वैदिक धर्म्म प्रचारिणी सभा मुम्बई के उद्योग से १९०२ ई० में वैदिक धर्म का बहुत कुछ प्रचार हुआ। आर्य्य समाज मुम्बई के आधीन एक "दयानन्द पुस्तकालय" है जिस में प्रातः से सायं तक प्रत्येक पुरुष को पुस्तक और पत्र देखने की आज्ञा है और एक उपनिषद् श्रेणी खोली हुई है जिस में प्रति रविवार प्रातःकाल सन्ध्या और हवन यज्ञ के पश्चात् पं० नरहरि शर्म्मा शास्त्री जी उपनिषदों से शिक्षा देते हैं और एक मासिक पत्र गुजराती भाषा में निकलता है॥

SGDF

आर्य्यप्रतिनिधिसभाश्रितानां समाजस्थानामुपदेशकानां व्याख्यानदातॄणां च सूची ॥

नाम सभा वा समाज	उपदेशक के प्रकार	नाम
स्वतन्त्र उपदेशक	संन्यासी	स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वतीजी, स्वा० आत्मानन्द स०, स्वा० सच्चिदानन्दस०, स्वा० विद्यानन्द स०(बड़ौदा), स्वा०दर्शनानन्द स०, स्वा० नित्यानन्दजी, स्वा० लक्ष्मणानन्दजी ॥
	ब्रह्मचारी	ब्रह्मचारी नित्यानन्दजी, ब्र० ब्रह्मानन्दजी ॥
	पण्डित	पं० तुलसीराम स्वामी (मेरठ शहर), पं० यज्ञदत्त शास्त्री (सुलतानपुर) ज़िला फर्रुखाबाद, पं० देवदत्त शास्त्री (कानपुर), पं०ज्वालादत्त शर्म्मा (फर्रुखाबाद),पं०भीमसेन शर्म्मा आगरा निवासी (गुरुकुलकाङ्गडी)॥
आर्य्य प्र० नि० सभा० पञ्जाब	उपशेक	पं० दौलतराम शर्म्मा, पं० पूर्णानंद, पं० रामरत्न, पं० कृपाराम, पं० भक्तराम, पं० हरनामसिंह, पं० भोजदत्त, महाशय वज़ीरचन्द पं० ए० सोमनाथ राव (मद्रास), महा० तुलारामसिंधी, लाला आत्माराम, पं० ऋषिराम, स्वा० सत्यानन्द, स्वा० परमानन्द ॥
	व्याख्यान दाता	महाशय मुन्शीरामजी जिज्ञासु, पं०रामभजदत्तजीबी० ए०, ला० देवराज, भक्त रेमलदास, ला० काशिराम वैद्य, महता जैमिनि बी० ए, ला० बक्शीशराम, ला० शिवदयालु एम० ए०, ला० रोशनलाल बी० ए०, पं० सतिाराम शास्त्री वैद्यराज, ला० सीताराम, ला० रामदास बी० ए०, ला० कर्म्मचन्द्र बी० ए० ॥
आ० प्र० नि० स० संयुक्त प्रदेश	उपदेशक	पं. नन्दकिशोर देवशर्म्मा, पं. धर्म्मदत्त, पं. शंकरदयालु, पं रामनारायण, पं. वसन्तलाल, पं. मनुदत्त, पं. रामेश्वर, पं. मुत्सद्दीराम ॥
	व्याख्यान दाता	पं. भगवानदीन, बाबू श्यामसुन्दर वर्मा बी.ए., चौधरी खूबचन्द्र, ला. कृष्णलाल, बा. कालीचरण, बा. द्वारकाप्रसाद, पं० गङ्गाप्रसाद एम ए. पं. ललताप्रसाद, पं. मूलचन्द्र, पं मुरारीलाल पं. शिवसहाय ब्रह्मचारी, पं० पद्मसिंह, पं० छुट्टनलाल स्वामी, स्वा० पूर्णानन्द,, पं० गोपीनाथ उपनाम इन्द्रदत्त, पं० कैलासनाथ, पं० रामभरोसा, पं० हनुमानप्रसाद ॥

SGDF

नाम सभा वा समाज	उपदेशक के प्रकार	नाम
आ० प्र० नि० सभा राजस्थान	व्याख्यान दाता	बा० मथुराप्रसाद, बा० रघुबीरसिंह, बा० रामविलास शारदा
आ० प्र० नि० सभा बङ्गाल बिहार	उपदेशक	पं० शिवशंकर चौधरी पं० शिवनन्दन मिश्र
	व्याख्यान दाता	बा० बालकृष्णसहाय बा० ब्रह्मानन्द, मास्टर जनकधारीलाल पं० रुद्रदत्त ॥
आ० प्र० नि० सभा मध्यप्रदेश तथा विदर्भ	उपदेशक	पं० भवदेव शर्म्मा, पं० इन्द्रदत्तशर्म्मा, पं० विष्णुदत्त शर्म्मा पं० गणपति शर्म्मा ॥
	व्याख्यान दाता	बा० बिहारीलालबी० ए०, पं० बालमुकन्दशर्म्मा, ठाकुरशिवरत सिंह, पं० हरदत्तशर्म्मा ॥
आ० प्र० नि० स० मुम्बई	अवैतनिक उपदेशक	पं० कृष्णराम इच्छारामजी ॥
कर्णवास	उपदेशक	पं० शम्भुदत्तशर्मा देवीराम गायक ॥
भरतपुर	,,	मूलचन्द गायक ॥
बदायूं	,,	पं० निरञ्जनदेव, पं० वासुदेवगायक ॥
आगरा	,,	पं० विन्दादत्त ॥
नरसिंहपुर	,,	पं० शम्भु शर्म्मा ॥
सुहागपुर	,,	पं० काशीराम

नाम सभा व समाज	उपदेशक के प्रकार	नाम
भूपाल	उपदेशक	पं० विहारीलाल
जबलपुर	,,	पं० रंगोरामचन्द्र भट्ट
बर्धा	,,	पं० लक्ष्मण शर्म्मा
सिकन्द्राबाद जिला बुलन्द शहर	भजन मण्डली	पं० गङ्गासहाय गायक
जयपुर	उपदेशक	पं० रामप्रताप
शाहपुरा	,,	ब्रह्मचारी हीरानन्द हकीम सन्तराम
पवायां	,,	शिवानन्द शर्म्मा
मुंगेर	,,	नित्यानन्द ब्रह्मचारी
लखीमपुर	,,	पं० पुरुषोत्तम (अवैतनिक)
मुम्बई	,,	पं० नरहरि शर्म्मा
हाजीपुर जिला मुजफरपुर	,,	पं० कमलनयनशर्म्मा
गङ्गोह	,,	स्वामीनित्यानन्द अनाथ भारत सेवक
गढी अब्दुल्ला खां	,,	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती
मुलतान	,,	पं० सत्यव्रत शास्त्री (पूर्व पं० मेलाराम)
सकीट जिला एटा	भजन मण्डली	ठाकुर प्रवीणसिंह
अलीगढ	उपदेशक	स्वामी शान्तिस्वरूप
अलीपुर	,,	पं० ज्वालादत्त शर्म्मा

SGDF

भारतवर्षान्तर्गतार्य्यसमाजानां नामावलिः *

पंजाब तथा सीमा प्रान्त

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	दिल्ली ज़िला		
१	दिल्ली शहर	गिरधारीला.	कुन्दनलाल
२	,, सदर	यमुनादास	नवलकिशोर
३	मुर्थल	शंकरलाल	मोलड़मल
४	बल्लबगढ़	०	०
५	सुनपेर	देवीराम	प्यारेलाल
६	मास्जिद मोठ	प्राणसुख	सुखीराम
७	फ़रीदाबाद	श्रीकृष्णदास	रामलक्षण
८	महरौली	छज्जूमल	धर्मदास
	हिसार ज़िला		
९	हिसार	चन्दूलाल	चूड़ामणि
१०	भिवानी	लच्छीराम	कल्याणदास
११	सिर्सा	रञ्जीतराय	शिवनारायण
१२	हांसी	बधावामल	किशोरीलाल
१३	रत्तक	०	०
१४	बहादरां	रामानन्द	अजीतमल
	गुरुगावां ज़िला		
१५	गुरुगावां	चंदूलाल	रामविलास
१६	रेवाड़ी	दीनदयाल	मुसद्दीलाल
१७	हथीन	दुलीचन्द	रञ्जीतसिंह
१८	होडल	प्रसादीलाल	देवीसहाय
१९	सोहना	प्रभुसिंह	क़ीमतराय
२०	पलवल	०	शिवलाल
२१	कासन	उजागरमल	रामजीलाल
२२	नूह	गंगासहाय	मुन्नालाल
	कर्णाल ज़िला		
२३	कर्णाल	छज्जूराम	कृष्णस्वरूप
२४	पानीपत	ज़ोरावरचन्द	क्षेमचन्द्र
२५	पून्ड्री	मिट्ठनलाल	दयालाल
२६	फूसगढ़	यमुनादास	दाताराम
२७	गगसीना	नानकचन्द	जगन्नाथ
२८	बसतली	०	बालमुकन्द
२९	खरिण्डवा	यमुनादास	बूलचन्द
३०	हलाहर	बधावाराम	दौलतराम
३१	शाहाबाद	नागरमल	आत्माराम
३२	कैथल	नौबतराय	तुलसीराम
३३	सींक	रामानन्द	नेकीराम
३४	लाडवा	उदयराम	नानूमल
३५	धोघड़ीपुर	०	श्रीचन्द
३६	**रोहतक**	हरकृष्णलाल	सदानन्द
	अम्बाला ज़िला		
३७	सदरअम्बाला	शिवकर्णदास	शादीराम
३८	जगाधरी	गंगाराम	नत्थूराम
३९	मुस्तफ़ाबाद	गोविन्दराम	बालमुकुन्द
४०	रोपड़	सोमनाथ	गोविन्दराम
४१	रामगढ़	कमलासिंह	जातीराम
४२	रामशरन माजरा	०	०
४३	मुरिंडा	रूड़ामल	आत्माराम
४४	बबियाल	सावनरास	०
४५	खड़	०	आत्माराम
४६	घनौली	सम्पूर्णसिंह	हृदयराम
	शिमला ज़िला		
४७	शिमला	भंडारीराम	रघुनाथसहाय
४८	सपाटू	दौलतराम	रामरक्खा

---

* स्थानाभाव के कारण किसी नाम के साथ कोई उपपद "लाला" "पण्डित" आदि का नहीं लिखागया जिस को आवश्यकता हो वह नाम से पूर्व "महाशय" ऐसा शब्द नियुक्त करलें ॥

SGDF

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
४९	सोलन	नवलकिशोर	दुनीचन्द
	लुधियाना		
५०	लुधियाना	लालसिंह	शिवप्रशाद
५१	जगरावां	कृष्णगोपाल	कर्त्तारा‌म
५२	बागड़ियां	०	रामलाल
५३	भेनीरोड़ा	०	०
५४	जर्माना	०	०
५५	कान्हढेसियां	०	०
५६	बसियां	०	तेलूराम
	जालन्धर		
५७	जालंधरशहर	रामकृष्ण	तेलूराम
५८	,, सदर	नारायणदास	रामदास
५९	कर्तारपुर	सन्तराम	ठाकुरदास
६०	नवा शहर	काशीराम	चर्णदास
६१	डिङ्गा	०	०
६२	फिल्लौर	०	०
६३	बस्तीशेखदर्वेश	०	०
६४	राहों	रेलूराम	लब्भूराम
	अमृतसर		
६५	अमृतसर	जैकृष्णदास	आत्माराम
६६	जण्डिमाला	मेलाराम	मंगलसेन
६७	महलांवाला	गंडासिंह	चूहड़मल
६८	बीरोवाल	०	०
६९	जलालाबाद	बैसाखीराम	गणपतिराय
६०	नौशहरापुन्वां	०	अमींचन्द
	लाहौर		
७१	लाहौर	शिवदयाल	किदारनाथ
७२	मियांमीर	भगवानदास	आत्माराम
७३	शर्कपुर	हेमराज	मोहनलाल
७४	क़सूर	सुखदयाल	उमादत्त
७५	खेमकर्ण	चुन्नीलाल	रामशरणदास

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	होशियारपुर		
७६	होशियारपुर	०	हीरालाल
७७	मुकेरियां	रामशरणदा.	घनैयालाल
	काङ्गड़ा		
७८	हमीरपुर	०	०
७९	धर्मशाला	ठाकुरदास	गंगाराम
८०	कुल्लू	दीनदयाल	नानकचन्द
८१	घिल्लौर	०	दुनीचन्द
	फ़ीरोज़पुर		
८२	फ़ीरोजपुरस	राधाकृष्ण	गोपालसहाय
८३	कोटईसाखेल	गंगाराम	नन्दलाल
८४	धर्मकोट	फ़क़ीरचन्द	बिधिचन्द
८५	अबोहर	रलाराम	सुन्दरलाल
८६	फ़ाज़िलका	०	०
	गुजरानवाला		
८७	गुजरांवाला	केवलकृष्ण	हाकिमराय
८८	वज़ीराबाद	प्रीतमदास	नन्दलाल
८९	गूजरखां	शोभासिंह	अवतारसिंह
९०	ख़ानकी	प्यारेलाल	जगतराम
९१	घक्कड़	०	०
९२	शाहकोट	अमींचंद	हवेलीराम
९३	खान्काह डोगरां	०	०
९४	दिलावर	मेलाराम	गोपालदास
९५	रामनगर	शिवनाथ	मयादास
९६	सांगला	०	०
९७	सऔरंगाबाद	०	०
९८	जलालपुरभ	०	०
९९	हाफ़िज़ाबाद	०	०
१००	चूहड़काना	जगन्नाथ	अमीरसिंह
	स्यालकोट		
१०१	स्यालकोट	भीमसेन	गंगाराम
१०२	पसरूर	गुलजारीला.	नत्थूराम

SGDF

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
१०३	ज़फ़रवाल	हीरालाल	रलियाराम
१०४	उसका	कर्मचन्द	देवीदास
१०५	बदोमली	प्रभुदयाल	नारायणदास
१०६	गोविन्द की	परशुराम	मोतीराम
१०७	जस्टर	सदानन्द	वीरभान
१०८	किला सोभासिंह	०	०
१०९	घामोकी	खुशहालच.	मुसद्दीलाल
११०	मुरकी	प्रभुदयाल	दौलतराम
१११	उल्लेकी	०	०
११२	नारोवाल	बर्कतराम	सुखरामदास
११३	बढ़ागोरिया	कृपाराम	धारीराम
११४	बड़ाला सिंघवां	०	हरिचन्द
११५	अदुफ़ताह	दुनीचन्द	अरूड़ामल
११६	सौकनोड	०	०
११७	उदुपिंडारि.	देवीदयाल	खुशहालच.
११८	पंचगराईयां	शामसिंह	ईश्वरदास
११९	महधी	बधावाराम	कृपाराम

गुरुदासपुर

१२०	गुरुदासपुर	मुरलीधरपुरी	लभूराम
१२१	पठानकोट	शालिग्राम	नेहालचन्द
१२२	बटाला	शिवसिंह	लब्भूराम
१२३	भागोवाल	बिशनसिंह	फकीरसिंह
१२४	बयानपुर	नत्थूराम	साधूराम
१२५	बड़ा पिण्ड	सुखरामदास	परशुराम
१२६	बौरावला	हरिश्चन्द्र	०
१२७	छीना	सुचेतसिंह	भोलानाथ
१२८	दीनानगर	गुरुदास	जेठूमल
१२९	श्रीगोविंदपुर	हरजसराय	रुञ्जीतराय
१३०	शकरगढ	जयदयाल	नत्थूराम

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
१३१	बारामंगा	बूटामल	हरिराम
१३२	शाहपुराजाजन	०	०
१३३	साहल	०	०
१३४	बड़ालाबाङ्गर	०	हरिचन्द
१३५	कादियांन	०	मलावाराम
१३६	दधोचक	कपूरचन्द	हरिराम
१३७	करवाल	०	०
१३८	कोटली सुर्थ-	०	०
२३९	डेरानानक	०	०
१४०	घंकीवांगर	मूलचन्द	लछमणदास

गुजरात

१४१	गुजरात	सावनसिंह	ताराचन्द
१४२	फालया	०	गणपतिराय
१४३	डिंगा	भगतराम	निरञ्जनदस
१४४	औरंगाबाद	०	०
१४५	जलालपुर्जट्टां	०	गणेशदास
१४६	किलादार	०	०
१४७	लखनवाल	०	०
१४८	मूंगरसूल	०	०
१४९	लालामूसा	नन्दलाल	जसराम
१५०	कादिराबाद	देवीदयाल	बेनीराम

जेहलुम

१५१	जेहलुम	हरभगवान्दा	बोधराज
१५२	भवन	मतवालासहा	अमरीकसिंह
१५३	पिंडदादनखां	नत्थूराम	रामलभय्या
१५४	चकवाल	०	०
१५५	डणडौत	लखमीदास	नानकचन्द
१५६	तिलागंग	०	अमीचन्द
१५७	अहमदाबाद	लालचन्द	सीताराम
१५८	दलवाल	कर्मचन्द	हरिचन्द
१५९	खेवरा	शिवराम	ठाकुरदास
१६०क	पटरीदरवेजा	ज्ञानचन्द्र	शिवराम

SGTF

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	मण्टगुमरी		
१६०	मण्टगुमरी	शालिग्राम	गोर्धनदास
१६१	कमालिया	शार्दीराम	सुन्दरसिंह
१६२	सैदवाला	जोतीराम	भीमसेन
	झंग		
१६३	झंगमघयाना	सवायाराम	ईश्वरदास
१६४	लायलपुर	वजीरचन्द	झण्डाराम
१६५	शोरकोट	कालाराम	गणेशदास
१६६	टोबाटेकसिंह	ठाकुरदास	संसारचन्द
	शाहपुर		
१६७	शाहपुर	देवीसहाय	कालकाप्रसाद
१६८	खुशाब	बुधसिंह	धनपतिराय
१६९	भेरा	गोकलचन्द	कृपाराम
१७०	कोटमोमिन	रघुवरचन्द	मय दास
	मुजफ़फरगढ		
१७१	मुजफफरगढ	कंवरकृष्ण	मंगाराम
१७२	खैरपुरसादात	चूहडलाल	चेलाराम
१७३	अलीपुर	खेमचन्द	मुन्नांसिंह
१७४	डेरादीनपनाह	आयाराम	जैंदराम
१७५	जतोई	तुलसीराम	जैसाराम
१७६	खानगढ	गंगाराम	भक्तराम
१७७	झोगींवाल	तख्तराम	जस्मूराम
१७८	सीतपुर	नौरतदास	चन्दूराम
१७९	कोटउद्दू	धर्मचन्द्र	कृष्णदास
	मुलतान		
१८०	मुलतान	काशीराम	ईश्वरदास
१८१	दुनियापुर	सुखराम	आत्माराम
१८२	कबीरवाला	जगतराम	दर्बारीलाल
१८३	मैलसी	सुन्दरदास	दुनीचन्द
१८४	खरोर	०	गिरधारीलाल

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	डेरा इस्माईलखां		
१८५	डेराइस्माईल	लखमनदास	साधूसिंह
१८६	,,बालआ०स	गोपालदास	देवीदास
१८७	भक्कर	पुरुषोत्तमदा	ठाकुरदास
१८८	लैय्या	लीलाराम	आयाराम
१८९	टांक	टोपनदास	तरुणाराम
	डेरा ग़ाज़ीखां		
१९०	डेरागाजीखां	जैमनीदास	दीवानचन्द्र
१९१	जाम्पुर	डीडाराम	मोहनलाल
१९२	महतम	नेवराज	कालूराम
१९३	कोटछुत्ता	परशुराम	आत्माराम
	बन्नू		
१९४	बन्नूं	दौलतराम	गुरुप्यारा
	मियांवाली		
१९५	मियांवाली	टोपनराम	मोतीराम
१९६	ईसा खेल	हरीराम	जसराम
१९७	करोड़	गगाराम	मोहनलाल
	कोहाट		
१९८	कोहाट	चरणसिंह	हीरासिंह
	रावलपिण्डी		
१९९	रावलपिण्डी	कृपाराम	हरिचरणदास
२००	लालकुर्तीबा.	मक्खनलाल	ठाकुरदास
२०१	मरीपर्वत	०	०
२०२	गूजरखां	सोभासिंह	अवतारसिंह
२०३	नेडी	०	मुन्नीराम
२०४	कैम्बलपुर	काम्ताप्रसाद	लक्ष्मणदास
	पेशावर		
२०५	पेशावर	रलाराम	सुरजनमल
२०६	नौशहरा	नन्दलाल	मंगलसेन
२०७	मर्दान	कल्याणदास	हचिरदन

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री	सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
देशीय राजधानी पंजाब							
	पटियाला				**मालेरकोटला**		
२०८	पटियाला	रामेश्वरप्रसा	भगवानदास	२१६	मालेरकोटला	सावनराम	गुरुदत्तसिंह
२०९	बरनाला	नारायणदत्त	जीवाराम		**कपूरथला**		
२१०	बलवाना	रामारिछ्छपाल	गुरांदित्तामल	२१७	कपूरथला	खुशीराम	रामचन्द्र
२११	राजपुरा	०	०		**कशमीर**		
२१२	भटिण्डा	जीवाराम	०	२१८	श्रीनगर	गोविन्दसहा.	गुरुबख्शराय
२१३	निर्वाना	रामशरणदा	कृष्णचन्द	२१९	जम्बू	भक्तराम	मेलाराम
	जींध				**नाहन**		
२१४	जींध	रघुनाथदास	आशाराम	२२०	नाहन	कुंवर बहादुर सिंह	बनवारीलाल
२१५	सफीदौं	कंवरसन	मुन्शीराम				
बिलोचिस्तान							
२२१	क्वेटा	गणेशदास	हुक्मचन्द	२२२	सीबी	०	०
सिंधदेश							
२२३	हैद्राबाद	गुलाबसिंह	तुलजाराम	२२६	शिकारपुर	चन्द्रूमल	मंगतराय
२२४	सक्खर	हरीसिंह	टोपनदास	२२७	लसबेला		रामदास
२२५	लरकाना			२२८	कराची	रेवाचन्द	सीताराम
संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध							
	मुरादाबाद			११	धामपुर	माधोशरण	रूपचन्द्र
१	मुरादाबाद	दुर्गाचरण	कंवरसेन	१२	शेरकोट	०	०
२	चंदौसी	गणेशीलाल	रामस्वरूप	१३	नगीना	०	०
३	सम्भल	०	०	१४	बढ़ापुरा	फ़कीरचन्द	नारायणदास
४	सुर्जननगर	०	०	१५	नहटौर	अनूपसिंह	०
५	टांडा अफ़ज़ल	०	०	१६	खटई	०	०
६	सरकड़ा	०	०	१७	ब्रह्मणवाला	०	बलदेवसिंह
७	ठाकुरद्वारा	०	०	१८	नजीबाबाद	हर्गुलालसिंह	बालमुकुन्द
८	दभार्सी	०	०	१९	मुहम्मदपुर	प्रतापसिंह	लेखराजसिंह
९	कांठ	०	०	२०	चांदपुर	द्वारिकादास	शंकरलाल
	विजनौर			२१	बगरामपुर	०	०
				२२	ताजपुर	हरदेवसिंह	वृजमोहनला.
१०	विजनौर	शेरसिंह	द्वारिकाप्रसाद	२३	फीना	०	०

SGDF
Sri Gangeshwar Digital Foundation

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
२४	वाष्टा	०	०
२५	गुहावर	०	०
२६	सिसौना	०	०
२७	स्योहारा	सीताराम	नन्दकिशोर
२८	नागल	०	०
२९	पुरैनी	०	०
	बरेली		
३०	बेरली	बलदवप्रसा.	बाबूराम
	पीलीभीत		
३१	पीलीभीत	डालचन्द	उमरावसिंह
	शाहजहांपुर		
३२	शाहजहांपुर	बख़तावरसिंह	कामताप्रसाद
३३	खुदागंज	भोलानाथ	लक्ष्मीनारायण
३४	सिंघा	रामबिलास	बृजविलास
३५	तिलहर	श्यामसुन्दर	इन्द्रजीत
	बदायूं		
३६	बदायूं	जुगलकिशोर	मंगलसेन
३७	दहगवां	टीकाराम	अङ्गनलाल
३८	गुन्मौर	गौरीसहाय	सुखलाल
३९	गोंतरा	दयाकृष्ण	गुलज़ारीलाल
४०	दातागंज	बुधसेन	डालचन्द
४१	सेरहा	शिवराजसिंह	झाडूलाल
४२	नौनी	दुलारसिंह	रुकमदत्त
४३	उझियानी	सीताराम	चन्दालाल
४४	बिलसी	गंगाराम	गेंदनलाल
४५	बिसोली	कल्याणराय	सुखलाल
४६	इस्लामनगर	उमरावसिंह	नाथूराम
४७	महशमपुर	शिवसिंह	रघुवरदयाल
४८	खैलंपुर	नन्हामल	शालिग्राम
४९	सहसवां	बालमुकन्द	पीतम्बरदास
५०	शेशपुर बहूड़	कालिकाप्र.	केशवदेव
५१	कारियालीखा	कंवरसेन	वासुदेव
५२	नदरौली	मोहनलाल	श्यामलाल
५३	स्म्रयी	गंगाराम -	रामदयाल
५४	बहलोलपुर	घनश्यामदास	तिलोकसिंह
५५	सतेती	खेलसिंह	कढामल
५६	रसूलपुर	०	०
५७	करिया	०	०
५८	सैंजन्यां	टीकाराम	भोजराज
५९	सरतौल	टीकमसिंह	नित्यानन्द
६०	सोरहा	अयोध्याप्र.	तिलोकचन्द
६१	सारहपुर	मुकन्दसिंह	नौबतसिंह
६२	हरभरी	टीकाराम	वेदराम
६३	बहरावटी	दम्मड़सिंह	शिवसहाय
६४	असदपुर	नन्दराम	लक्ष्मीचंद
६५	सरावल	मथुराप्रसाद	बाबूराम
६६	पिप्पला	शिवसिंह	बलदेवसहाय
	नैनीताल		
६७	नैनीताल	रामप्रसाद	रमादत्त
६८	रामनगरमडी	०	०
६९	बसीरामनगर	०	०
७०	कोटा	०	०
७१	जसपुर	०	०
७२	लोहाघाट	०	०
७३	हलध्वानी	भोलानाथ	मिट्ठनलाल
	मेरठ		
७४	मेरठशहर	नेहालसिंह	घासीराम
७५	,, लालकुर्ती	केदारनाथ	भवानीप्रसा
७६	,, सदर	विश्वम्भरस.	भवानीसहाय
७७	सनौता	०	०
७८	फलावदा	०	०
७९	मवानाकलां	भगवान्दास	मथुरादास
८०	नगलाहरेरु	मथुराप्रसाद	०
८१	बिसौला	०	०

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

सं०	नाम स०	प्रधान	मंत्री
८२	दौराला	०	०
८३	बड़ौत	०	०
८४	परिक्षितगढ़	०	०
८५	गाज़ियाबाद	०	०
८६	ढिकौली	०	०
८७	खिर्वा	०	०
८८	कपसाढ़	०	०
८९	लावड	०	०
९०	किठैल	०	०
८१	नरैना	०	०
९२	छुर	०	०
९३	सलावा	०	०
९४	हापुड़	०	०
९५	डोला	०	०

बुलन्द शहर

सं०	नाम स०	प्रधान	मंत्री
९६	बुलन्दशहर	गोपालनारा.	नारायणदास
९७	सिकन्द्राबाद	लखपतराय	मुरारीलाल
९८	मुहीयुद्दीन	०	०
९९	गुलावठी	०	०
१००	बुक्कलाना	गोर्धनदास	कृष्णदेव
१०१	बरतौली	०	०
१०२	सीकरा	०	०
१०३	दूहरा	०	०
१०४	सांखनी	०	०
१०५	जहांगीराबाद	०	०
१०६	डिबाई	लखपतसिंह	०
१०७	साबितगढ़	०	०
१०८	उदयभान	०	०
१०९	भदौरा	०	०
११०	बेलौन	०	केदारनाथ
१११	दानपुर	०	०
११२	गिरड्रौवल	०	०
११३	पहासू	०	०

सं०	नाम स०	प्रधान	मंत्री
११४	कर्णवास	०	०
११५	आहार	०	भगवानदास
११६	मथुरावली	०	०
११७	घुंगरोली	०	०
११८	धूम	०	०
११९	छतारी	०	०
१२०	पाश्सौल	०	०
१२१	भऊ	०	हीरालाल
१२२	स्याना	०	०
१२३	रोही	०	०
१२४	उत्रावली	०	०

देहरादून

सं०	नाम स०	प्रधान	मंत्री
१२५	देहरादून	ज्योतिःस्व०	मदनसिंह
१२६	चकराता	गोमतीप्रसाद	०
१२७	चूहड़पुर	आसाराम	बनारसीलाल
१२८	मसूरी	रघुनाथसहा	हुकमसिंह
१२९	कालसी	नाथीराम	गेंदामल

मुज़फ्फ़रनगर

सं०	नाम स०	प्रधान	मंत्री
१३०	मुज़फ्फरनगर	खैरातीराम	दलीपसिंह
१३१	बनत	०	०
१३२	कुडाना	०	०
१३३	बलवाखेड़ी	जयपालसिंह	०
१३४	चौसाना	०	०
१३५	कैराना	०	०
१३६	लुहारी	०	०
१३७	खर्ड	०	०
१३८	बराल	टीकासिंह	मुसद्दीसिंह
१३९	एलम	०	बिहारीलाल
१४०	बुढाना	प्रभुदयाल	चांदनराम
१४१	छुलाना	०	०
१५२	जानसठ	बाबूलाल	०
१४३	गढीअब्दुल्ला	मुसद्दीलाल	उमरावसिंह

SGDF

सं०	नाम स०	प्रधान	मंत्री
	सहारनपुर		
१४४	सहारनपुर	कुन्दनलाल	हरनामदास
१४५	तीतरौं	चन्द्रभान	केदारनाथ
१४६	खेड़ा अफ०	गणेशीलाल	सुखदेवराम
१४७	हर्पाल	०	०
१४८	रुड़की	शङ्करलाल	नाथूराम
१४९	गंगोह	रहतूलाल	रहतूलाल २
१५०	बेद्दट	०	०
१५१	रायपुर	०	०
१५२	बहेड़ी	०	०
१५३	लंढौरा	०	०
१५४	देवबन्द	हरपतराय	गिरजानन्द
१५५	डंघेड़ा	०	०
१५६	अम्बहटा	मंङ्गलसेन	रहतूलाल
	अलीगढ		
१५७	अलीगढ	शिवप्रसाद	छोटेलाल
१५८	,, बाल स०	रौशनसिंह	दयाशङ्कर
१५९	अत्रौली	०	०
१६०	काज़िमाबाद	०	०
१६१	हरनौट	०	०
१६२	छर्रा	०	०
१६३	कौड़ियागंज़	०	०
१६४	जलाली	०	०
१६५	विजयगढ़	०	०
१६६	सिकन्द्राराऊ	०	०
१६७	नोकनेर	०	०
१६८	दार्दौं	०	०
१६९	बम्हनोई	०	०
१७०	दत्तावली	०	०
१७१	बिजौली	०	०
१७२	मुर्सान	०	०
१७३	बघराया	०	०
१७४	महंगौरा	०	०
१७५	छडावली मा	०	०
१७६	जरौलीडोर	०	०
१७७	छलेसर	०	०
१७८	कलाई	०	०
१७९	बरौठा	०	०
	आगरा		
१८०	आगरा	रामप्रसाद	कृपाशङ्कर
१८१	,,गोकुलपुरा	०	०
१८२	फीरोजाबाद	०	शंशेरबहादुर
१८३	एत्मादपुर	०	०
१८४	कागारौल	प्राणसुख	नारायणसिं
	मथुरा		
१८५	मथुग	कृष्णलाल	पग्मानन्द
१८६	हसनपुर	प्रभुदयाल	आदिराम
१८७	चौमूहा	राजबहादुर,	जवाहरलाल
	एटा		
१८८	एटा	०	०
१८९	सकीट	०	०
१९०	कासगंज	०	०
१९१	नधौनी	०	०
१९२	नरदौली	०	०
१९३	जलेसर	केदारनाथ	कृष्णलाल
१९४	रूपधनी	०	०
१९५	तृगवान	०	०
१९६	पटियाली	०	०
१९७	ऊंचागांव	०	०
१९८	अलीगंज	०	०
१९९	सरायअगहत	०	०
२००	धूमरी	०	०
२०१	बिलसड़कलां	द्वारिकाप्रसाद	राजाराम
२०२	गढी चकेरी	०	०

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	इटावा		
२०३	इटावा	दंगीलाल	जगन्नाथ
२०४	जसवन्तनगर	गंगासहाय	रामचरण
२०५	फफूंद	मातादीन	हरदयालसिंह
२०६	मुढी	भद्रसेन	ज्वालाप्रसाद
२०७	जयतापुर	मातादीन	गौरीशंकर
	मैनपुरी		
२०८	मैनपुरी	०	०
२०९	गढिया छिङ्कोरी	०	०
२१०	शिकोहाबाद	०	०
२११	किशनी	०	०
२१२	करनाहल	०	०
२१३	मानकपुर	०	०
२१४	कर्हरा	०	०
	पवायां राजधानी		
२१५	पवांया	श्री. फतहसिंह	गार्गीदीन
	फ़र्रुखाबाद		
२१६	फ़रुखाबाद	सेवाराम	राजबहादुर
२१७	कायमगंज	संतराम	गिरिधारिलाल
२१८	पिलखना	०	०
२१९	रसीदाबाद	०	०
२२०	भलेपुर	झुन्नीलाल	रघुबरदयाल
२२१	बिहारीपुर	०	०
२२२	कन्नौज	०	०
२२३	फतहगढ़	०	०
२२४	जलालाबाद	०	०
२२५	सिरौली	०	०
२२६	शेहली	०	०
२२७	तेराजाकट	०	०
२२८	सकवाँ	नेतराम	मन्नूलाल
	अलाहाबाद		
२२९	अलाहाबाद.	मेवालाल	जगेश्वरप्रसाद
२३०	,, कटरा	रामलाल	नारायणदेव

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	बांदा		
२३१	बांदा	जुगलकिशोर	रामप्रसाद
	कानपुर		
२३२	कानपुर	देवीप्रसाद	आनन्दस्वरूप
२३३	बाड़ा	०	०
	अकबरपुर	०	०
२३४	सचेंडी	०	०
२३५	मूसानगर	०	०
२३६	बिघनूं	०	०
२३७	सैदलीपुर	०	०
२३८	ढर्हरा	०	०
	फतहपुर		
२३९	बिंदकी	०	०
२४०	असोथर	०	०
२४१	सिमौरी	०	०
	झांसी		
२४२	झांसी	शंकरसहाय	नानकचन्द
	जालान		
२४३	कालपी	शिवबख्शराय	शिवचर्णलाल
	बनारस		
२४४	बनारस	कालिकाप्रसाद	जगदेवप्रसाद
	मिर्ज़ापुर		
२४५	मिर्ज़ापुर	०	सन्तप्रसादसिंह
२४६	पचरावां	०	रामनाथ
२४७	रामगढ़	०	०
	गोरखपुर		
२४८	गोरखपुर	ठाकुरप्रसाद	हरिहरदत्त
२४९	देवरिया	घनश्यामदास	विन्ध्याचलप्र.
	बस्ती		
२५०	बस्ती	रामशकरलाल	ललताप्रसाद
२५१	मंहदावल	०	शिवप्रसाद

SGDF

लखनौ

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२५२	लखनौ गणेशगंज	रामदुलारे	लखपतराय
२५३	,, शहर	शीतलसहाय	रघुनन्दनप्रसाद

हरदोई

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२५४	हरदोई	अयोध्याप्रसाद	आशानन्द
२५५	नीर	रत्नसिंह	भवानीसिंह
२५६	शाहाबाद	हरिचन्द्र	रामविलास
२५७	पिहानी	मिश्रीलाल	मूलचन्द
२५८	उधरनपुर	शिवसागर	देवीगुलाम
२५९	थमरवां	अवधविहारीलाल	किदारनाथ

खीरी

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२६०	लखीमपुर	राजा नीलकंठध्वजशाह	सीताराम
२६१	मुहमदी	लक्ष्मणप्रसा.	कन्हैयालाल

रायबरेली

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२६२	रायबरेली	०	०

उन्नाव

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२६३	उन्नाव	जानकीप्रसा.	रामभरोस
२६४	नवाबगंज	रामगोपाल	०
२६५	पाठकपुर	०	०

सीतापुर

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२६६	सीतापुर	०	०

ग़ाज़ीपुर

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२६७	ग़ाज़ीपुर	०	०

फ़ैज़ाबाद

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२६८	फ़ैज़ाबाद	गोकलचंद	नौरङ्गमल
२६९	टांडा	बद्रीदत्त	सर्जूप्रसाद
२७०	कुम्भिया	रामेश्वरप्र०	हरप्रसादसिंह

गोंडा

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२७१	गोंड़ा	०	ग्यासीलाल

बहरायच

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२७२	बहरायच	हरगोविन्दप्र.	अमीचन्द

जौनपुर

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२७३	मछलीशहर	लालबहादुर	भगवतीप्रसाद
२७४	हुर्हरी	०	०

प्रतापगढ़

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
२७५	प्रतापगढ	रघुवंशसहाय	श्यामसुन्दर

राजस्थान

अजमेर

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
१	अजमेर	पद्मचन्द	मथुराप्रसाद
२	ब्यावर	०	०
३	नसीराबाद	०	०

जयपुर

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
४	जयपुर	जगन्नाथ	रामलाल
५	सेठोंका रामगढ़	०	०

बहावलपुर

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
६	ओच	सुखराम	परमानन्द
७	रोझबाज़ी	रामेश्वरीदास	विशनसिंह
८	अहमदपुर	०	मोहनलाल

जोधपुर

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
९	जाधपुर	खेमकरणदास	मुन्नीलाल
१०	खर्वा	०	०

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	बीकानेर		
११	चूरू	०	०
	मेवाड़		
१२	सोजत	गणपतिराम	बलदेवसिंह
१३	उदयपुर	मनोहरसिंह	शकुनचन्द
	शाहपुरा		
१४	शाहपुरा	श्रीमान् राजा नाहरसिंह व०	पं० हमीरमल
१५	नीमच	मुलतानमल	मांगीलाल
	इन्दौर		
१६	इन्दौर	०	जगन्नाथप्रसा०
१७	उज्जैन	०	०
१८	देवास	गोर्धनलाल	०
१९	धार	महीपतिराम	बिहारीलाल

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	कोटा		
२०	कोटा	श्रीमान् राजा विजयसिंह व.	गोविन्दप्रसाद
	ग्वालियर		
२१	ग्वालियर	गुलज़ारीला.	पन्नालाल
२२	मुरार	०	दीनदयाल
२३	बजरङ्गगढ	राधाराम	देवीचरण
२४	महू	शिवव्रतलाल	शिवदत्त
	भरतपुर		
२५	भरपुरत	कुंजलाल	हीरालाल
	जोबनेर		
२६	जोबनेर	कर्णसिंह	गुरुलाल

मध्य प्रदेश तथा विदर्भ

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	जबलपुर		
१	जबलपुर	रंगोरामचन्द्र भट्ट	गोविन्दस्वामी मुदल्यार
	नरसिंहपुर		
२	नरसिंहपुर	नन्हेसिंह	मोहनलाल
३	मुंहपानी	नारायणदास	चुन्नीलाल
४	पलोहाकलां	काशीराम	भोलानाथ
५	पिपरिया	मानसिंह	मुकुन्दीलाल
	होशंगाबाद		
६	होशंगाबाद	गयापतिराव	मुरलीधर
७	सुहागपुर	काशीराम	जयमंगल
८	अजनास	आनन्दराव	गणेशशर्म्मा
	भूपाल		
९	भूपाल	बिहारीलाल	गिरजाप्रसाद

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	नीमाड़		
१०	खंडुबा	सुखदेवगणपति	खुशहालसिंह
११	हर्सूद	अर्जुनसिंह	हीरालाल
१२	बुर्हानपुर	हरिकृष्ण बजाज़	हरिकृष्ण अर्जीनवीस
१३	मूंदी	०	०
१४	रुस्तमपुर	०	बिहारीलाल
१५	सलुतानपुर	०	०
	सागर		
१६	सागर	रायबहादुर ठाकुर महाराज सिंह	कामताप्रसाद
	सीवनी		
१७	सीवनीछपारा	चन्दीप्रसाद	केवलप्रसाद

SCDF

सं०	नाम समाज	प्रधान	मन्त्री	सं०	नाम समाज	पधान	मन्त्री
	रायपुर			२२	बालाघाट	बलभद्र	बलदेव प्र०
१८	रायपुर	भगवानदास	बिहारीलाल		**बरार (विदर्भ)**		
१९	बलोदाबाजार	सूर्य्यवलि	छेदीप्रसाद	२३	अमरावती	कुञ्जबिहारी	०
	नागपुर			२४	चांदूर	चन्द्रभान	बैजनाथ
२०	कामठी	देवीदीन	रामदयाल	२५	अकोला	बिहारीलाल	धनजी गुप्त
२१	वर्धा	शिवविलास	गणपतिराव	२६	हाविरखेड़	राधाकृष्ण	वेंकटराव
	बालाघाट				रूपराव		
			दक्षिण प्रान्त निज़ाम राजधानी				
१	हैदराबाद	केशवराव	कामताप्र०	३	धारूढ	गोकलप्र०	कुन्दनलाल
२	सिकंद्राबाद	गोपालराव	रंगनाथ				
			मुम्बई प्रदेश				
	मुम्बई			११	खलीखच	०	०
१	मुम्बई	जीवनदयाल	मंछाशंकर	१२	खेरसद	०	०
	गुजरात			१३	दादरा	०	०
२	सूरत	तिलोकचन्द्र	गणपतिराम	१४	डोकरा	०	०
३	नागधारा	शिवाभाई	प्रयागजी	१५	स्याम	०	०
		रत्नजी	दाताभाई		**काठियावाड़**		
४	बालोड़	०	नारायण शर्मा	१६	भावनगर	त्रिभुवन्दास	मुन्नीलाल
५	येवला	०	०			भोलाभाई	रघुभाई
६	डगत	हीराभाई	प्रयागजीमी०	१७	वीरपुर	कुं०रामसिंह	०
७	अहमदाबाद	कल्याणमल	मोहनलाल	१८	जामनगर	०	सेठपोपतलाल
८	बड़ौदा	गणपतिसिंह	रूपसिंह	१९	रणपुर	मोतीलाल	
९	भड़ौच	हरिजीवनजी	हीरालाल			कुवेरदास	भवानशिंकर
१०	बीजलपुर	कसनजी	जीनाभाई	२०	राजकोट	प्राणजीवन	कल्याणजी
		डासाभाई	भीमजी			नारायण डा.	बनारसी
			मद्रास प्रदेश				
	मद्रास				**मैसौर**		
१	मसुलीपट्टम	दोरस्वामी	रामशास्त्र आलु	२	बङ्गलौर	ठकुरसिंह वर्मा	पी०एम० शेषगिरिशर्म्मा

SGDF

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री	सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	बङ्गाल—विहार						
	कलकत्ता			६	हसनपुर	गौरीचर्णसिं.	शिवखिलावन
१	कलकत्ता	रायरलाराम	महावीरप्र०	७	नौबतपुर	०	सीताराम
	पटना			८	विहार	०	०
२	दानापुर	जनकधारी	ठाकुरप्रसाद	९	बाढ़	विशनप्रसाद	गणेशीलाल
३	खगोल	०	विहारीलाल	१०	कोठवां	मिथिलाशर्ण	श्यामसुन्दर
४	पटना	नारायणसिंह	शिवनन्दन	११	मनेर	कृष्णलाल	ब्रजमोहन
५	बांकीपुर	नीलमप्रसाद	विष्णुदयाल	१२	बेला	अक्षवसिंह	नन्दलाल
	शाहाबाद				**सारन**		
१३	आरा	हरप्रसाद	हरसूप्रसाद	१८	सीवान	रामविहारी	रामकृष्ण
	मुंगेर				**दार्जिलिङ्ग**		
१४	मुंगेर	नन्दकुमार	तारणीप्रसाद	१९	दार्जिलिङ्ग	माधोप्रसाद	कालीचर्ण
	रांची				**मुजफ़्फ़रपुर**		
१५	रांची	बालकृष्ण	जादोनन्दन	२०	हाजीपुर	मजलिस स०	शकुनलाल
	लुहारडगा				**मेमनसिंह**		
१६	लुहारडगा	सुग्रीवसहाय	हारिहरसिंह	२१	मेमनसिंह	०	०
	वद्वान						
१७	रानीगंज	श्रावनसिंह	०				
	ब्रह्मदेश						
	उत्तरब्रह्मा			३	सैगांग	शतिग्राग	वधानामल
					दक्षिण ब्रह्मा		
१	मेमयो	गोपालदास	रामस्वरूपसिंह	४	रंगून	मक्खनलाल	०
२	मुक्तचिना	०	०	५	टाटमौ	सरनदास	रङ्गीलाल
	आसाम						
१	गोहाटी	मदनलाल	मधुसूदन		०	०	०
	चीनदेश						
१	इपोह *	रामजीदास	कृपाराम		०	०	०

* इलाका " पेराक " Via (मानासि) " पेनांग "

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

आर्य्यसामाजिकादीनां अनाथाश्रमाणां वृत्तान्तः ॥

(१) श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
आर्य्यसमाज अजमेर

यह अनाथालय १८९५ से चल रहा है प्रबन्ध एक सभाधीन है जिस्में मेम्बर आर्य्यसमाज अजमेर के सभासद होते हैं। प्रधान बाबू मिट्ठनलाल जी बी॰ ए॰ वकील और मन्त्री पण्डित वंशीधर जी शर्म्मा एम॰ ए॰ वकील और गवर्नर महाशय केशवदेव जी है। सन् १९०२ में स्थान पूरा बनचुका है। कुमार और कन्याओं का पृथक् २ प्रबन्ध है निवास स्थान भी जुदे २ हैं। भूमि स्थानादि २००००) की है। नकद रुपया जून के अन्त तक १४०००) था। सम्प्रति २७५ अनाथ पुस्तकाङ्कित हैं जिन में से ७४ कन्यायें हैं पढना सब को परमावश्यक है दस वर्ष या न्यून वय वाले बालक केवल पढ़ते हैं उन के लिये एक अध्यापक और एक अध्यापिका नियुक्त है अधिक आयु वाली कन्यायें पाठशाला में भेजी जाती हैं। दश वर्ष से अधिक वय वाले बालक "कारख़ाने" में काम करते हैं इस के प्रबन्धकर्त्ता बा॰ रामविलास जी शारदा हैं। "कारख़ाने" में जुर्राब दरी बेल बूँटेदार बुनना, निवार तैय्यार करना, रुपयों की थैलियां, आसन आदि के अतिरिक्त बढ़ई का काम भी सिखाया जाता है, जिस में अलमारी, मेज, कुर्सी, स्टूल, फाटक आदि सर्व प्रकार का काष्ठ का काम तय्यार होता है। दरजी कक्षा में "फैशेनेबिल" सब प्रकार के वस्त्र सिये जाते हैं।

"कारख़ाना सब कमेटी" का विचार है कि क़ालीन का काम आरम्भ कर दिया जावे। कन्याओं को अध्यापिका और उन की प्रबन्धकर्त्री दोनों के द्वारा सीना, पिरोना, गुलुबन्द बनाना और गोटा आदि लगाना सिखाया जाता है। अनाथालय के सबन्ध में एक औषधालय (हस्पताल) है जहां अनाथों के अतिरिक्त अन्य निर्धन पुरुषों की भी चिकित्सा की जाती है। व्यय ६००) मासिक है और आय ३००) मासिक है जिस में २००) जो राज धानियों से ३) प्रति बालक सहायतार्थ मिलता है सम्मिलित हैं ॥

अनाथालय में एक "अनाथोपदेशक पाठशाला" १८ एप्रिल सन् १९०२ से महाराजा शाहपुराधीश के बाग़ में खोली गई थी अभी तक इस में अनाथ बालक विद्योपार्जन करते हैं, बालक ब्राह्मणादि सब वर्णों के हैं विध्यनुकूल वेदारम्भ और उपन-

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

यन के पश्चात् विद्यार्थी प्रविष्ट किये जाते हैं, प्रबन्ध आ० स० अजमेर की एक "सब कमेटी" के आधीन है महाशय केशवदेव जी प्रबन्धकर्त्ता और पं० भक्तराम जी भेरानिवासी अध्यापक हैं इस का व्यय अभी तक समाजादि के द्वारा होता है कोई विशेष फ़ण्ड (कोष) स्थापित नहीं किया गया । सम्प्रति ११ विद्यार्थी हैं गृह बड़े रमणीक स्थान पर है आनासागर ताल का दृश्य अधिक शोभा देता है ॥

(२) आर्य्यअनाथालय फ़ीरोज़पुर छावनी

प्रबन्धकर्तृसभा

यह अनाथालय आर्य्यसमाज फ़ीरोजपुर के उद्योग से सन् १८७८से चल रहा है और "राजिस्टर्ड" है, जुलाई १९०२ के अन्त में १२७ कुमार और १७५ कन्या सब ३०२ अनाथ उपस्थित थे। इस में एक कन्या पाठशाला है जिस के लिये पृथक् अध्यापक नियत है; स० गुरुमुखसिंह वकील इस के अधिष्ठाता हैं। एक "हस्पताल" बालकों की चिकित्सा के लिये है अनाथालय का प्रबन्ध एक कमेटी के आधीन है जिस के प्रधान बा० काशीराम जी वकील और मन्त्री ला० विष्णुसहाय जी हैं। गत दो वर्षों में १३०० के लगभग अनाथ दुर्भिक्ष से पीडित देशों से इस अनाथालय में प्रविष्ट हुए जिन के मार्ग व्यय, पालन पोषण, दवादारू में अनुमान ५४५००) व्यय हुआ, पंजाब के अन्य अनाथालयों में प्रायः यहीं के अनाथ हैं ॥

१९०१ में समस्त आय १६७८३≡)५½ और व्यय २३२०६॥=)८ हुआ। अनाथालय में यह "कारख़ाने" हैं जिन में बालक काम सीखते हैं, कपड़ा बुनना, गोटा बनाना, क़ालीन बुनना, जुर्राब बनाना दरी बनाना और बढ़ई का काम जिन पर ७००) के लगभग व्यय हो चुका है आय और पूंजी बहुत कम है देशनिवासियों को अनाथ बालकों की दशा पर दया करके अवश्य सहायता देनी चाहिये ॥

(३) आर्य्य अनाथालय बरेली

आर्य्य समाज बरेली

यह अनाथालय आ० स० बरेली के उद्योग से सन् १८८४ से चल रहा है। प्रबन्ध एक सभा और तीन गवर्नरों (अधिष्ठाता) के आधीन है जिस के प्रधान मुं० दामोदरदास जी और मन्त्री मिस्टर नन्दकिशोर जी बारिस्टर हैं। सरकार द्वारा प्रविष्ट अनाथों को सरकार २॥) मासिक प्रति अनाथ खानपानादि के लिये देती है। १ अगस्त

SGDF

१९०२ को १३५ अनाथ थे [illegible] कन्याओं के लिये २७ अगस्त [illegible] से एक पाठशाला खोली हुई है और कन्याओं को हास्पिटल असिस्टेंट का परीक्षा के लिये आगरा और कुमारों को कलादि का काम सीखने के लिये लखनौ और रुड़की भी भेजा जाता है सम्प्रति राजपुरा ग्राम और एक गृह अपना होने के अतिरिक्त १०० नक़द अनाथालय की पूंजी है। आय अनुमान ६०० मासिक और व्यय ५००) मासिक है॥

(४) आर्य्यअनाथालय आगरा

आ० स० आगरा

इस अनाथालय में ३२ कुमार और २ कन्या रहती हैं और दरी कालीन इत्यादि बनाना सिखाया जाता है। यह अनाथालय गत वर्ष से स्थापित है। व्यय १००) मासिक हैं। बाबू प्रयागनारायण बी० ए० वकील मन्त्री और बाबू शालिग्राम वकील अधिष्ठाता है॥

(५) कन्या अनाथालय

आ० स० जलन्धर शहर

यह अनाथालय २६ अगस्त १८९७ से स्थापित है जिस में जबलपुर की ओर की कन्याओं का पालन किया जाता है सम्प्रति २५ कन्या हैं। ला० नगीनामलजी प्र० कर्त्ता और ला० देवराज जी अधिष्ठाता हैं। सब कन्यायें महाविद्यालय में शिक्षा पाती हैं। शिक्षा के अतिरिक्त शिल्पकारी भी सिखाई जाती है। व्यय मासिक और अन्य चन्दों से चलता है। अनाथालय का निज का स्थान कोई नहीं है। अनाथ भाड़े के मकान में रहते हैं। ३ कन्या छटी कक्षा तक पहुंच गई हैं॥

(६) वैश्य अनाथालय मेरठ शहर

वैश्य महा सभा

यह अनाथालय वैश्यमहासभा के अधिकार में खुला हुवा है। ३० जून १९०२ को ५० अनाथ थे अर्थात् ४६ कुमार और ४ कन्या। ला० रामानुजदयाल साहू मन्त्री हैं। स्थान बन रहा है जिस की नीव २२ मार्च १९०२ को छोटे लाट साहिब ने रक्खी थी, अद्यपर्यन्त मकान के लिये ७६००) एकत्रित हो चुका है और बीस सहस्र की प्रतिज्ञा है अनुमान १००००) की और आवश्यकता है। ३० जून १९०२

SGDF

को ६८४० अनाथालय की पूंजी थी जिस में से ६०००) " अपर इण्डिया बैङ्क मेरठ " में व्याज पर जमा है नागरी और गणित के अतिरिक्त दरज़ी, दरी बुनने, चित्रकारी और बढई का काम भी अनाथों को सिखाया जाता है। इस में ऐसी जाति के अनाथ प्रविष्ट हो सकते हैं जिन के हाथ का जल उच्च श्रेणी के हिन्दू पी सकते हैं ॥

नोट. इन से अतिरिक्त शाहपुरा राजधानी, कानपुर, अहमदाबाद (बरेली) अमृतसर, लाहोर, भिवानी, पटियाला, कोहाट, भरतपुर, डेरागाजीखां, और नमिच में भी अनाथालय स्थापित हैं जिन के वृत्तांत हस्त गत न होने से नहीं लिखे गये ॥

भारतवर्षस्थार्य्यसमाजसम्बन्धिनां संस्कृतपाठशालानां तथाऽन्याश्रमाणां वृत्तान्तः

(१) गुरुकुल-कांगड़ी (हरिद्वार)

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

गुरुकुलस्थापन-गुरुकुल के नियम और उसका खुलना नवम्बर १८९८ ई० में श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में स्वीकृत हुआ। श्रीमान् महाशय मुंशीराम जी ने इस के लिये छः मास में तीस सहस्र रुपये एकत्र करने की प्रतीज्ञा की इस समय में जब प्रतिज्ञा से भी अधिक धन एकत्र होगया तो गुरुकुल के लिये भूमि की खोज ही थी कि परम उदार मुं० अमनसिंहजी साहूकार नजीबाबाद निवासी ने जून १९०१ ई० में काङ्गड़ी ग्राम गुरुकुल के लिये दान कर दिया। यह ग्राम कनखल के सामने गंगातट से अनुमान १०० गज़ के अन्तर से स्थित है। समस्त भूमि ११९६ बीघा पक्का १५०००) के मूल्य की है वार्षिक आय ९४१) है जलवायु अतिसुन्दर और गुरुकुल के लिये सर्वप्रकार से उचित है। अक्टूबर १९०१ में साहूकार बूड़ासिंहजी अजनाला (अमृतसर) निवासी ने एक टुकडा बोई हुई धरती का जिस का मूल्य ५०००) है प्रदान किया। बसन्त उत्सव के अवसर पर २४ मार्च १९०२ ई० को गुरुकुल खोला गया जो बालक विद्याग्रहणार्थ आये उनका यज्ञोपवीत संस्कार करके नाम का भी प्राचीन विध्यनुसार संस्कार किया गया, हवनादि के पश्चात् विद्यार्थियों को ६००) के लगभग भिक्षा मिली। धर्म्म वीर स्वर्गवासी पं० लेखराम जी की धर्मपत्नी ने २०००) गुरुकुल के लिये दान दिया और उसी समय ४००) के लगभग और

SCDF

चन्दा होगया । प्रथम वार गुरुकुल में ५० विद्यार्थी प्रविष्ट हुए जिन में ३२ वह भी सम्मिलित हैं जो पूर्व कुछ कालके लिये गुजरानवाले में शिक्षा पाते थे। सम्प्रति ४ श्रेणी नियत की गई हैं प्रथम में ९ दूसरी में २५ तीसरी में ८ और चौथी में ६ ब्रह्मचारी हैं । दो छुट्टी पर हैं ॥

स्थान–कनखल के बाज़ार से चलकर गङ्गा की नीलधरा के नौकासेतु से उतर कर नजीबाबाद की कच्ची सड़क पर एक मील अन्तर से पूर्व की ओर काङ्गड़ी ग्राम है जिस की बोई हुई भूमि पर्वत की तली तक फैली हुई है, पश्चिम की ओर एक उच्च स्थान पर गुरुकुल के मन्दिर दृष्टि आते हैं जहां से १०० गज़ की दूरी पर गंगा की धारा बहती है। तट पर खुला बालू का मैदान है जिस में ४०० बालक खेल सकते हैं धारा के परलेतट पर गुरुकुल भूमि से भी किञ्चित् उच्च स्थल है वर्षा काल में चहुं ओर जल फैल जाने से यह स्थान एक टापू सा बनजाता है और इसी कारण उस का नाम "आनन्द वाटिका" रक्खा गया है। जब गंगा उतर जाती है तो विद्यार्थी उसी ओर शौचादि जाते हैं और "आनन्द वाटिका" में खेलते हैं ॥

जलवायु–इस स्थान का जलवायुअत्युत्तम है। अत्युष्ण दिनों में भी ४बजे अपराह्न से यहां का पवन शीतल हो जाता है वर्षाकाल में मशक (मच्छर) नहीं होते "मलेरिया" (एक प्रकार का ज्वर) यहां नाममात्र नहीं । सर्दार चन्दनसिंह स्थानापन्न सिविल सर्जन हरिद्वार लिखते हैं कि " वर्तमान गुरुकुल निवासियों की स्वस्थता बहुत अच्छी प्रतीत होती है और मेरी सम्मति में यह स्थान उस प्रयोजन के लिये सर्वरीत्यनुकूल है जिस के लिये वह इस समय काम में आरहा है" ॥

कालविभाग-तीसरी और चौथी श्रेणी के विद्यार्थी ४ बने और पहली और दूसरी के ४॥ बजे सवेरे उठकर अपने २ अधिष्ठाताओं के साथ शौच के लिये बाहर जाते हैं तत्पश्चात् सब विद्यार्थी और उनके अधिष्ठाता गंगातट पर व्यायाम करते हैं पुनः कुछ काल ठहर कर स्नान और संध्या करते हैं और ६॥ बजे आश्रम में वापिस आकर हवन करते हैं तदनु दूध पीकर ७ बजे सब अपनी २ श्रेणी में पढ़ने के लिये चले जाते हैं, ९॥ बजे तक पढ़ाई होती है तत्पश्चात् भोजन करके विद्यार्थी कुछ काल विश्राम करते हैं पुनः १॥ बजे से ५ बजे तक पढाई होती है ३ बजे ब्रह्मचारी पुनर्बार दूध पीते हैं जिस के लिये उनको २० मिनट का अवकाश दिया जाता है ५ बजे फिर शौच के लिये बाहर जाकर व्यायाम स्नान संध्या करते हैं और लौटकर हवन करते हैं और ७॥ बजे भोजन करके ९ बजे रात्रि को सो जाते हैं ॥

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

अध्यापक और अभिष्ठाता-श्रीमान् पं० गंगादत्त जी शास्त्री मुख्य अध्यापक हैं और चौथी श्रेणी को पढ़ाते हैं, पं० विष्णुमित्र जी तीसरी श्रेणी के अधिष्ठाता और दूसरी और तीसरी श्रेणी के संस्कृत अध्यापक हैं, दूसरी श्रेणी के अधिष्ठाता पं० जयदेव शर्म्मा नजीबाबाद निवासी हैं प्रथम श्रेणी के अध्यापक और अधिष्ठाता पं० नारायणदत्त जी हैं इससे अतिरिक्त एक अंगरेज़ी पठित बी० ए० सायन्स (पदार्थ विद्या) और हिसाब (गणित) का अध्यापक है और पं० भीमसेन शर्म्मा आगरा निवासी विशेष अधिष्ठाता हैं जो गुरुकुल के लिये संस्कृत पुस्तक बनाने के अतिरिक्त संस्कृत साहित्य और धर्म शिक्षा में विशेष सहायता देते हैं। श्रीमान् महाशय मुन्शीरामजी जलन्धर निवासी मुख्य अधिष्ठाता हैं जो वहीं रहते हैं और सब काम की देखभाल करते हैं और गुरुकुल के सब प्रकार से उत्तरदाता हैं ॥

भोजन प्रबन्ध-प्रति दिन १२ छटांक पका दूध प्रत्येक ब्रह्मचारी को चाहे किसी आयु का हो दिया जाता है भोजन में एक दाल दो भाजी (शाकादि) हर एक ब्रह्मचारी को एक छटांक घृत डालकर दी जाती है, सप्ताह में एक वा दो वार मोहन भोग खीर अथवा मीठे चावल बनते हैं कभी २ सायं समय दूध के साथ कुछ मिठाई भी दी जाती है। लाल मिरच, खटाई, पलाण्डु (प्याज) और अन्य हानिकारक मसाले नहीं वर्ते जाते शुद्ध जल पीने को दिया जाता है निदान भोजन की प्रत्येक वस्तु और जल की भी पूरी २ सावधानी की जाती है ॥

चिकित्सा प्रबन्ध-प्रथम कनखल के डाक्टर लक्ष्मीचन्द्र जी विद्यार्थियों की आरोग्यता के रक्षक थे अब ४ जौलाई सन् १९०२ ई० से श्रीमान् डाक्टर बालमुकुन्द जी पेन्शनर असिस्टेण्ट सर्जन इस स्थान में कुछ काल के लिये आगये हैं और विद्यार्थियों के साथ बड़ा प्रेम रखते हैं उनको हर समय ऐसी शिक्षा देते रहते हैं कि जिस से उनको औषध सेवन की आवश्यकता न हो, एक छोटे से कमरे में "औषधालय" है जिस में सारा वह सामान जो हस्पतालों में होता है औजार (शस्त्र) और देशी औषध अर्क शर्वतादि सहित उपस्थित हैं ॥

***निवास स्थान**-दो बड़े अहाते बनाये गये हैं जिन के चारों ओर खम्भे लगे हैं एक अहाता २००×२५० फुट है जिसमें अतिथियों और गुरुकुल के सम्बन्धिजनों के परिवार के लिये छप्पर डाले गये हैं और इस से कुछ दूरी पर आगे की ओर गुरुकुल के

---

* गुरुकुल भूमि का पूर्ण चित्र (नक़शा) इस वर्ष तैयार न होसका अतः आगामी वर्ष की थैली में दिया जावेगा ॥

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

मन्दिर हैं जो ३००×२३० फुट के अहाते में हैं उन के बाहर एक नया कूप बनवाया गया है जिसका जल बहुत उत्तम और मीठा है इस में गुरुकुल के विद्यार्थियों, अधिष्ठाताओं, कर्मचारियों, डाक्टर और मुख्य अधिष्ठाता के रहने के मकान, पाठशाला, शयन करने के कमेर, भण्डारा, और पाकशालायें हैं। अहाते के मध्य में एक सुन्दर ४० फुट व्यास की अष्टकोणी यज्ञशाला है सारे मकान ऊंची कुर्सी देकर सम बनाये गये हैं और सब में बराम्दे हैं अभी बहुत से गृहों की आवश्यक्ता है इस काम के लिये दश सहस्र रुपये स्वीकार हुआ था जिस में से ६५००) के लगभग व्यय हो चुका है काम अति संयम से बनवाया गया है और इस के अतिरिक्त २०००) की लकड़ी केवल गुरुकुल भूमि के जङ्गल से लीगई है ॥

गुरु दक्षिणा—प्रथम समुदाय के ब्रह्मचारियों से (जिन की पढ़ाई १२ वर्ष की है) १०) मासिक और दूसरे समुदाय से (जिसकी १३ से १८ वर्ष तक पढ़ाई होती है १५) मासिक लिया जाता है, इस में भोजन, वस्त्र, दूध, असबाव, और सारा व्यय सम्मिलित है ॥

श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा के पास इस निमित्त इतना धन होजाने पर कि जिस के व्याज से सम्पूर्ण व्यय पूरे होसकें किसी विद्यार्थी से कुछ नहीं लिया जावेगा, अतएव गुरुकल को सहायता देना सब सज्जन पुरुषों का काम है ॥

(२) वैदिक पाठशाला गुजरानवाला

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

यह शाला सन् १८९५ ई० से स्थापित है एक छात्रशाला (बोर्डिङ्ग हौस) भी खोली हुई है। सम्प्रति ८ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं । पं० रलाराम जी अध्यापक हैं, शिक्षा अधिकतर आर्ष ग्रन्थों की दी जाती है और विद्यार्थियों के आचार भोजन छादन और धार्मिक जीवन की ओर विशेष दृष्टि दी जाती है। मुं० नारायणकृष्ण जी प्रबन्धकर्ता और महाशय रलाराम जी अधिष्ठाता है। समस्त व्यय अनुमान १००) मासिक है कतिपय विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति (वज़ीफ़ा) भी दी जाती है।

(३) गुरुकुल सिकन्दराबाद ज़िला बुलन्दशहर

आर्य्यसमाज

यह गुरुकुल (वैदिक पाठशाला)मार्च १८९९ से सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन के निकट चल रहा है। शिक्षा संस्कृत में स्वामी जी कृत पाठविधि के अनुसार दी जाती है, भोजन छादन और पुस्तकादि का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से है (सविस्तर वृत्तान्त प्राप्त नहीं हुआ)

(४) बलदेवसंस्कृतार्य्यपाठशाला मुरादाबाद

आर्य्यसमाज मुरादाबाद

इस शाला में स्वामी जी कृत पाठविधि के अनुसार शिक्षा दी जाती है। इस के साथ एक बोर्डिङ्ग हौस भी है। जिस का प्रबन्ध अच्छा है। पं० जवाराम जी प्रथम अध्यापक हैं। निधि ७०००) है। आय व्याज सहित ५०) मासिक है और इतना ही व्यय है। १९०२ में विद्यार्थियों की मध्यम संख्या ११० थी अब तक १२, १३ विद्यार्थी प्राज्ञ, विशारद, प्रथम, मध्यम परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो चुके हैं। कुंवर भूपसिंह जी प्रधान और पं० नौबतराम शर्म्मा मंत्री हैं ॥

(५) वैदिक आश्रम आगरा

आर्य्यसमाज आगरा

इस आश्रम में कुछ २ विद्यार्थी आगरा कालेज, सेण्ट जान्स कालेज और मेडिकल स्कूल के रहते हैं। सम्प्रति संख्या ८ है, जिन को प्रतिदिन नियत समय पर सन्ध्या अग्निहोत्र करना और समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में सम्मिलित होना मुख्य है ॥

(६) वैदिक पाठशाला कासगंज

आर्य्यसमाज

निधि ४०००) की जायदाद है, आय और व्यय ३५०) वार्षिक है। ला० हरप्रसाद, विहारीलाल और बदरीप्रसाद प्रबन्धकर्त्ता हैं ॥

(७) संस्कृत पाठशाला बदायूं

आर्य्यसमाज वदायूं

यह शाला १९०० से चल रही है। इस में अष्टाध्यायी आदि पढ़ाई जाती हैं। पं० रामप्रसाद जी अध्यापक हैं ॥

(८) संस्कृत पाठशाला शाहपुरा राजधानी

श्रीमान् राजाधिराज शाहपुराधीश

यह पाठशाला राज्य की ओर से कई वर्ष से जारी है। इस के साथ बोर्डिङ्ग भी है। सब विद्यार्थी प्रतिदिन सन्ध्या और अग्निहोत्र नियमानुसार करते हैं। यहां के समाज का एक बोर्डिङ्ग स्कूल है जिस में सम्प्रति २५ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। व्यय २००) मासिक है। दोनों शालाओं में आर्य्यधर्मसम्बन्धी पुस्तक पढ़ाये जाते हैं ॥

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

(९) संस्कृत हाई स्कूल जोबनेर (जयपुर)

आर्य्यसमाज

यह स्कूल अलाहाबाद यूनिवर्सिटी का स्वीकृत है । इस में १०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं । इस के साथ एक बोर्डिङ्ग हौस भी है । व्यय १००) मासिक है और निधि १००००) है ॥ प्रबन्धकर्त्ता ठाकुर कर्णसिंह वर्मा हैं ॥

(१०)दयानन्दाश्रम वैदिक हाईस्कूल अजमेर

आर्य्यसमाज

यह स्कूल आर्य्यसमाज अजमेर के उद्योग से बहुत उन्नति पर है । सम्प्रति ५०० विद्यार्थी पढ़ते हैं । अलाहाबाद यूनिवर्सिटी के नियमानुसार शिक्षा दी जाती है । नागरी पढ़ना और एक घण्टा प्रतिदिन धार्मिक शिक्षा लेना सब को परम आवश्यक है । इस के साथ एक छात्र शाला भी है । निधि ५०००) है और २५०) मासिक व्यय है ॥

(११) दयानन्द एङ्गलो वैदिक कालिज लाहौर

प्रबन्धकर्तृ सभा

पंजाब यूनिवर्सिटी के नियमानुसार शिक्षा दी जाती है । निधि अनुमान चार लक्ष है । मासिक व्यय फ़ीस के आय से पूर्ण हो जाता है । ला० हंसराज बी० ए० प्रिन्सपिल हैं ॥

(१२)वैदिक पाठशाला रांची

आर्य्यसमाज

अनुमान तीन वर्ष से यह पाठशाला स्थापित है । संस्कृत और अङ्ग्रेज़ी आदि की शिक्षा दी जाती है । बाबू बालकृष्ण सहाय जी प्रधान आर्य्यसमाज प्रबन्धकर्त्ता हैं ॥ व्यय ३२) मासिक है विद्यार्थी ५० के लगभग हैं ॥

(१३)वैदिक पाठशाला नरसिंहपुर

आर्य्य प्रतिनिधिसभा मध्य प्रदेश

यह शाला कई वर्ष से स्थापित है । इस में १०० विद्यार्थी पढ़ते हैं । जिन में २ अनाथ हैं । जिन को भोजन छादन सभा की ओर से दिया जाता है । यह दोनों संस्कृत में अष्टाध्यायी पढ़ते हैं । १००) वार्षिक सर्कार से सहायार्थ मिलते हैं । पं० हरदत्त शर्म्मा अध्यापक हैं । व्यय ३०) मासिक है । ला० रामप्रसाद जी, पं० मोहनलाल तथा पं० बलदेव प्रसाद शर्म्मा के प्रबन्ध से पाठशाला का कार्य्य भले प्रकार चल रहा है । शाला के स्थान के बनने में २०००) से अधिक व्यय हो चुका है ॥

SGDE

(१४) मिठाभाई मुम्बई संस्कृत पाठशाला

आर्य्यसमाज मुम्बई

यह शाला आर्य्य समाज मुम्बई के प्रबन्ध में हैं। पं० नरहरि शास्त्री अध्यापक हैं इसमें ५० विद्यार्थी पढ़ते हैं ॥

(१५) संस्कृत पाठशाला

आर्य्यसमाज मुज़फ्फ़रनगर

यह शाला आर्य्य समाज के प्रबन्ध में है । एक अध्यापक नियत है । ४० के लगभग विद्यार्थी हैं ।

(१६) दयानन्द ऐङ्ग्लो वैदिक स्कूल मेरठ शहर

आर्य्यसमाज

यह स्कूल १८९७ से स्थापित है ।२००विद्यार्थी हैं । पूंजी २१०००) और व्यय १५०) मासिक है । मुं०लक्ष्मणस्वरूप जी वकील प्रधान हैं । नागरी पढ़ना और धार्म्मिक शिक्षा मुख्य है । स्कूल आर्य्यसमाज मन्दिर में होता है ।

(१७) वैदिक पाठशाला दक्षिण हैद्राबाद

आर्य्यसमाज

यह शाला वर्त्तमान वर्ष में ही जारी हुई है । १० विद्यार्थी हैं ॥

(१८) गुरुदत्त वैदिक स्कूल

धर्मशाला

यह स्कूल श्रीमान् महात्मा पं०गुरुदत्त जी एम्०ए० के स्मारक में १८९० से स्थापित है । ५० विद्यार्थी पढ़ते हैं ॥

(१९) विद्यार्थी आश्रम काशी

आर्य्यसमाज

काशी में एक विद्यार्थी आश्रम की आवश्यकता मान करके तत्रस्थ आर्य्यसमाज ने एक आश्रम खोलने का विचार कर रक्खा है । परन्तु धनाभाव से अद्यावधि नहीं खुलसका यदि समस्त समाजें ध्यान दें तो शीघ्र ही स्थापित हो जायगा ॥

(२०) वैदिक आश्रम अलीगढ

आर्य्यसमाज

यह आश्रम नवम्बर १८९९ से जारी है । ३० विद्यार्थी रहते हैं । ५०) मासिक व्यय होता है । विद्यार्थियों को साधारण आचार शिक्षा से अतिरिक्त आर्य्य धर्म्मोपदेशक बनने की शिक्षा भी दीजाती है ॥

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

भारतवर्षस्थार्यसामाजिकपुत्रीपाठशालानां वृत्तान्तः ॥

(१) कन्या महाविद्यालय जलन्धर शहर–

यह महाविद्यालय १८९६ से स्थापित है । १ अगस्त को ८२ कन्यायें उपस्थित थीं । कन्या अनाथालय की २५ कन्या भी इसी महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करती हैं, कन्याओं को ८ छात्रवृत्ति (वज़ीफ़ा) भी दिये जाते हैं जिन में से एक वज़ीफा सात रुपये मासिक का मिसेज़ चार्ल्स होवर्ड (शिकागो) पाताल देश निवासिनी देती हैं। कन्या महाविद्यालय में सब १३ कर्म्मचारी हैं जिनमें से ४ अध्यापक, ४ अध्यापिका, और ५ सेवक हैं । सारी कन्याओं को संस्कृत और नागरी में शिक्षा दी जाती है सामान्य पाठविधि से अतिरिक्त वेदपाठ,भजन, सन्ध्या, हवन, धर्मशिक्षा, सीना, जाली आदि का काम भी सिखाया जाता है, शारीरिक स्वस्थता का भी ध्यान रक्खा जाता है, ऐसे खेल चलाये जाते हैं जिनसे व्यायाम के अतिरिक्त शिक्षा भी प्राप्त होती है। आश्रमवासिनी कन्यायें लोहे के मुद्गरों से भी व्यायाम करती हैं। बाहर से आई हुई कन्याओं के लिये जो आश्रम १८९५ में खोला गया था १ अगस्त १९०२ को उसमें १७ कन्या थीं । आश्रम के खानपान का व्यय पुस्तक और वस्त्रादि के अतिरिक्त६) मासिक है। महाविद्यालय की पूंजी इस वर्ष अनुमान २७ सहस्र है, महाशय रामकृष्णजी वकील प्रबन्धकर्त्ता और लाला बद्रीदासजी एम० ए० मंत्री प्रबन्धकर्तृसभा हैं । विद्यालय में स्त्री शिक्षा सम्बन्धी पुस्तक बेचने के लिये एक पुस्तकालय भी है ॥

(२) भगवती पुत्रीपाठशाला हरियाना (होशियारपुर)

यह शाला माई भगवती जी के स्मरणार्थ (जो पंजाब में एक प्रसिद्ध आर्य्या विदुषी स्त्री हुई है) उस की जन्म भूमि में कई वर्षों से स्थापित है । प्रबन्ध एक सभा के आधीन है जिस के मंत्री लाला गिरिधारीलाल महता बी० ए० वकील होशियारपुर और प्रबन्धकर्त्ता ला० मेघामलजी हैं । कन्या ७६ हैं पांच श्रेणी हैं कन्याओं को वैदिकधर्मानुकूल शिक्षा दी जाती है और जाली आदि बनाने का काम भी सिखाया जाता है, तीन अध्यापिका काम करती हैं जिन में से २ अवैतनिक हैं शाला का स्थान निज का है। १०१५) नगद जमा हैं ॥

(३) अन्य कन्या पाठशालायें

जलन्धर छावनी, लाहौर, फ़ीरोज़पुर छावनी, कमालिया, श्रीगोविन्दपुर, शाहपुरा राजधानी, डेरा इस्माईलखां, गुजरात, पठानकोट, सहारनपुर, रुड़की, जम्पुर, मेरठ शहर, मेरठ छावनी, बरेली, दूङ्का (बरेली) पिशावर, नजीबाबाद, अलीपुर, ख़ैरपुर (मुज़फ़्फ़रगढ़) मवाना बड़ा (मेरठ) में भी कन्या पाठशाला हैं और अच्छा काम कर रही हैं। कर्णाल आर्य्यसमाज की शाला की दशा पूर्ववत् है ॥

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

अजमेरस्थवैदिकयन्त्रालयः

यह यन्त्रालय श्री स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज ने स्वनिर्मित तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों के प्रचारार्थ माघ सुदि २ सं० १९३६ वि० को ५०००) की पूंजी से चलाया था। अद्यावधि स्वामी जी महाराज के समस्त ग्रन्थ इसी यंत्रालय में छपते हैं और यहीं से मिल सकते हैं। अब यह यंत्रालय श्रीमती परोपकारिणी सभा के अधिकार में है और प्रबन्ध आर्य्य समाज अजमेर के सात सभासदों की एक सभा के आधीन है जिसके प्रधान श्रीमान् बा० रामविलास शारदाजी और मन्त्री श्रीमान् बा० शिवप्रसाद जी हैं और प्रबन्धकर्त्ता महाशय केशवदेव जी हैं ॥

स्वामी जी महाराज रचित ग्रन्थों में से १ नवम्बर १९०१ से १ मई १९०२ तक निम्नलिखित संख्या पुस्तकों की बिक चुकी हैः—

सं०	नाम पुस्तक	आवृत्ति संख्या	वर्त्तमान वर्षमें विके पुस्तकों की सं०	आरम्भ से बिके पुस्तकों की संख्या
१	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	२	७३७	६१८१
२	सत्यार्थप्रकाश	६	८१०	१६५४४
३	संस्कारविधि	४	१८७२	१३२७०
४	पञ्चमहायज्ञविधि	५	१५१८	३००६९
५	आर्य्याभिविनय	६	९६६	८९६६
६	हवनमन्त्र	५	२५६३	१००६३
७	आर्य्योद्देश्यरत्नमाला	४	३११७	१८११७

३०जून१९०२ई० को उधार और विक्रयार्थ माल से अतिरिक्त नकद २३१७८≡) ११ था। १७ सितम्बर १९०१ से प्रबन्धकर्तृ सभा ने सब पुस्तकों का मूल्य घटा दिया है (देखो सूची टैटिल के दूसरे पृष्ठ पर) उक्ततिथि को सामान कागज़ उधार और विक्रयार्थ पुस्तक इत्यादि माल अनुमान डेढलक्ष रुपये की लागत का था ॥

इस महर्षि स्थापित कार्य्यालय में अबतक साधारण हस्तकलाओं से कार्य्य चलता था परन्तु गतवर्ष से इन अमूल्य ग्रन्थों के अधिक प्रचार के विचार से यन्त्रालय की दशा को बहुत कुछ उन्नत किया गया है सम्प्रति प्रेसों से अतिरिक्त डबलक्रौन मशीन

अपने ग्रन्थों के छापनें के लिये चल रहीं है । हैण्डमशीन, नम्बरिङ्ग मशीन इत्यादि अन्य २ कला भी आवश्यकतानुसार मंगाई गई हैं । नागरी का टाइप कई प्रकार का बढ़ाया गया है और यन्त्रालय के स्थान में अधिकता की गई है ॥

चारों मूलवेद–जिनको यन्त्रालय ने बहुत सस्ते मूल्य पर छापने का भार अपने ऊपर लिया था अब तक १५०० के लगभग बिक चुके हैं । अब अनुक्रमणिका भी छपकर बिकरही है । शतपथ ४ काण्ड तक छप चुका १९०२ में पूर्ण हो जावेगा । इस से अतिरिक्त दशमूल उपनिषद्, ६ शास्त्र मूल, ब्राह्मण, (वैद्यक) चिकित्सा के पुस्तक भी शीघ्र इस यन्त्रालय में छापे जावेंगे ॥

स्वामी जी कृत पुस्तकों का नीचे लिखी भाषाओं में अनुवाद छप चुका है, छप रहा है अथवा छपवाने का विचार हैः–

सत्यार्थप्रकाश का बङ्गला उर्दू और गुरुमुखी अनुवाद छपचुका, गुजराती और महाराष्ट्री अनुवाद हो चुका छपना विचाराधीन तैलेंगु तैय्यार हो रहा है और अङ्गरेज़ी का प्रबन्ध हो रहा है ॥

आर्य्योद्देश्यरत्नमाला का महाराष्ट्री और तैलेंगु अनुवाद और **भ्रमोच्छेदन, भ्रान्तिनिवारण, सत्यधर्मविचार** और **गोकरुणानिधि** का गुरुमुखी अनुवाद हो चुका है ॥

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का उर्दू अनुवाद छप चुका ।

वेदान्तिध्वान्तनिवारण और **गोकरुणानिधि** का अङ्गरेज़ी और पूर्व कथित का उर्दू अनुवाद भी छप चुका है ॥

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

आर्य्य समाचारपत्राणां पुस्तकविक्रेतॄणां च नामावलिः ॥

स्थान	संख्या	समाचार पत्रादिक			
		नाम	भाषा*	प्रकाशितसमय×	वार्षिक मूल्य
लाहौर	१	आर्य्यपत्रिका	अं	सा०	५)
	२	मासिक सर्क्युलर आ०प्र० निधि सभा	ना	मा०	।)
	३	भारत भगिनी	ना	,,	१॥)
जालन्धर शहर	४	सत्यधर्म प्रचारक	उ	सा०	४।)
	५	आर्य्य मुसाफिर मेगजीन	उ	मा०	२)
	६	पांचाल पंडि०	ना	,,	१॥)
मेरठ शहर	७	वेदप्रकाश	ना	,,	१)
	८	आर्य्य समाचार	उ	,,	२)
फर्रुखाबाद	९	भारतसुदशा प्रवर्तक	ना	,,	१।)
सिकन्दराबाद	१०	गुरुकुल समाचार	उ	,,	॥।)
बरेली	११	आर्य्य पत्र	उ	सा०	१।)
मुरादाबाद	१२	आर्य्य मित्र	ना	सा०	२)
अजमेर	१३	आर्य्य	ना	मा०	॥।)
राञ्ची	१४	आर्यावर्त्त	ना	सा०	३॥)

*"अं०" से अंग्रेजी, "ना०" से नागरी, "उ" से उर्दू, "गु०" से गुजराती जानो ॥

×"सा०" से साप्ताहिक "मा०" से मासिक जानो ॥

स्थान	संख्या	आर्य्य पुस्तकविक्रेता
लाहौर	१	प्रबन्धकर्त्ता आर्य्यप्रिंटिंगपब्लिशिङ्ग जनरल ट्रेडिङ्ग कम्पनी
	२	पुस्तकाध्यक्ष आर्य्यसमाज बच्छोवाली
	३	कृष्णचन्द्र कम्पनी
	४	ला० शालिग्राम अध्यक्ष अरोडवंश प्रेस
जालन्धर शहर	५	प्रबन्धकर्त्ता सत्यधर्म प्रचारक यंत्रालय
मेरठ शहर	६	पं० तुलसीराम अध्यक्ष स्वामियंत्रालय
	७	ला० केदारनाथ (बाजार बज्जाजा)
फर्रुखाबाद	८	पं० गणेशप्रसाद प्र० कर्त्ता गुर्जर प्रेस
बुलन्दशहर	९	ला० बिहारीलाल
इटावा	१०	पं० बाबूराम शर्म्मा
बरेली	११	पं० माता प्रसाद
मुरादाबाद	१२	पुस्तकाध्यक्ष आ० प्र० नि० सभा संयुक्त प्रदेश
	१३	,, आर्य्य समाज
आगरा शहर	१४	पुस्तकाध्यक्ष आर्य्य समाज

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

आर्य्य समाचार पत्राणां पुस्तकविक्रेतृणाञ्च नामावलिः ॥

स्थान	संख्या	समाचार पत्रादिक			
		नाम	भाषा	प्रकाशित समय	वार्षिक मूल्य
मुम्बई	१५	आर्य्य*	गु	मा०	१॥)
	१६	आर्षविद्यार्ण†	,,	,,	२।)
अलीगढ़	१७	वनिता हितैषी	ना	,,	४)
शाहजहांपुर	१८	आर्य्य दर्पण ×	उ ना	,,	२॥)

स्थान	संख्या	आर्य्य पुस्तकविक्रेता
अजमेर	१५	प्रबन्धकर्त्ता वैदिक यंत्रालय
	१६	पुस्तकाध्यक्ष आर्य्य समाज
सक्खर	१७	डाक्टर खानचन्द्र

*इस पत्र में आर्ष ग्रन्थों उपनिषदादि और अन्य सामाजिक पुस्तकों का गुजराती अनुवाद मुद्रित होता है ॥

†इस पत्र में सत्यार्थप्रकाश और वेदभाष्यभूमिका का गुजराती अनुवाद प्रकाशित होने के अतिरिक्त धार्मिक, सामाजिक सुधार सम्बन्धी लेख छपते हैं ॥

×अब इस पत्र का उद्देश्य बाल बिधवा विवाह का प्रचार है ॥

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

आर्य्यसमाजमन्दिराणां पुस्तकागाराणाञ्च सूचिः ॥

तेषां मूल्यसूच्या सहिता ॥

सं०	आर्य्यसमाज	लागत मन्हिर	पुस्तकालय		सं०	आर्य्यसमाज	लागत मंदिर	पुस्तकालय	
			संख्या	मूल्य				संख्या	मूल्य
१	मुम्बई (काकोद्वारी)	५००००)	०	१०००)	१२	लखनौ शहर	६००)	०	५०)
२	मेरठ शहर ❊	१३०००)	८००	४००)	१३	बिजनौर	६०००)	०	०
३	लाहौर (बच्छोवाली)❊	१००००)	१००००	५०००)	१४	देहरादून❊	६०००)	०	०
४	मुलतान शहर	१००००)	०	१२५)	१५	बरेली	६०००)	२००	३००)
५	पिशावर शहर	१००००)	०	४००)	१६	भरतपुर	५०००)	१५०	१००)
६	हैदराबाद सिंध	१००००)	०	१००)	१७	उदयपुर	५०००)	०	५०)
७	डेरा इस्माईल ख़ां ❊	८०००)	८००	१२००)	१८	शाहजहांपुर	४५००)	२००	७५)
८	शिमला ❊	८०००)	०	५००)	१९	सहारनपुर	४०००)	०	०
					२०	लखीमपुर	४०००)	१००	६०)
					२१	पुवायां	४०००)	१८०	८८)
९	क्वेटा (बिलूचिस्तान)	मन्दिर ३००८) भूमि५०००) योग८०००)	०	१००)	२२	मुकेरियां	४०००)	०	८०)
					२३	कोहाट	४०००)	०	२००)
१०	जय पुर	६०००)	०	६०)	२४	वज़ीराबाद	४०००)	०	१००)
११	लखनौ (गणशगञ्ज)	५०००)	०	१५५)	२५	करांची	३०००)	०	३००)
					२६	जालन्धर शहर	४३००)	०	०)

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

सं०	आर्य्यसमाज	लागत मंदिर	पुस्तकालय		सं०	आर्य्यसमाज	लागत मंदिर	पुस्तकालय	
			संख्या	मूल्य				संख्या	मूल्य
२७	शाहपुरा राज्य	३०००)	८००	५००)	४५	तितरों	१२००) की भूमि और ३१३॥) नक़द	२४१	८३)
२८	बनारस	३०००)	०	१००)					
२९	मथुरा शहर *	३०००)	०	०	४६	करोड़	१५००)	०	०
३०	आगरा शहर*	३०००)	३५०	२००)	४७	कर्णाल	१२००)	४१६	५१५)
३१	रोपड़	३०००)	०	०	४८	नरसिंहपुर	१२००)	०	०
३२	जोबनेर राज्य	३०००)	०	०	४९	गङ्गोह *	११६०)	१३५	५६)
३३	दिल्ली शहर *	२६००)	०	०	५०	सोजत	१०००)	०	०
३४	अजमेर	है	०	०	५१	चकराता	१०००)	०	०
३५	जामपुर	२५००)	३००	१००)	५२	मुज़फ़्फ़रगढ़	१०००)	०	०
३६	झङ्ग मघियाना	२३००)	०	८०)	५३	हरदोई	१०००)	०	०
३७	लुधियाना	२२०६)	नक़द जमा है	०	५४	काल्पी	१०००)	०	०
३८	चन्दौसी	२०००)	८३	७०)	५५	मराटगुमरी	१०००)	१५०	३००)
३९	जस्टर	२०००)	०	०	५६	बन्नू	१०००)	२७५	१५०)
४०	गुजरात	२५००)	०	०	५७	भिवानी	१०००)	०	०
४१	झांसी	२५००)	०	१५०)	५८	रावलपिण्डी	मन्दिर विवाद में है	१६८	१८०)
४२	कोटा राज्य	२०००)	०	२००)	५९	भेरा	८००)	१००	७५)
४३	डेरागाज़ीखां	१५००)	७४६	७००)	६०	मालेरकोटला	६५०)	०	०
४४	धर्मशाला	१५००)	०	५०	६१	शर्क़पुर	६००)	०	०

SGDF Sri Gurudhwani Digital Foundation

सं०	आर्य्यसमाज	लागत मन्दिर	पुस्तकालय		सं०	आर्य्यसमाज	लागत मंदिर	पुस्तकालय	
			संख्या	मूल्य				संख्या	मूल्य
६२	हैदराबाद दात्तिण	८०० नकद	२००	०	८०	फालिया	५००)	०	०
		जमा है		०	८१	जलेसर	७००)	०	०
६३	तिलहर	बन रहा हैं	०	०	८२	शाहाबाद (कर्णाल)	मन्दिर बन रहा है		०
६४	मुंगरे	६००)	७००	२००)	८३	,, (हरदोई)	,,	,,	०
६५	दानापुर	है	०	०	८४	जबलपुर	३५०-)	०	०
६६	नागधारा	०	१४३	५०)	८५	होशंगाबाद	१२०)	०	०
६७	श्रीनगर	०	०	१००)	८६	भऊं	मन्दिर बन रहा है		०
६८	कायमगंज	५२५)	नगद जमा है०		८७	चकराता	भूमि क्रय की गई		०
६९	गढ़ी अब्दुल्लाखां	५००)	०	५०)	८८	श्रीगोविंदपुर	,,	,,	,,
७०	सक्खर	८००)	०	२०)	८९	पटियाला	है	०	०
७१	लायलपुर	७००)	०	०	९०	टांडा	२५०)	०	०
७२	उन्नाव	५००)	०	०	९१	मस्जिद मोठ	३५०)	०	०
७३	नौशहरा	३५०)	०	०	९२	सीबी	२००)	०	०
७४	मर्दान	३५०)	०	०	९३	लुहारी	है	०	०
७५	सैदवाला	भूमि मोल ली गई		०	९४	नजीबाबाद	०	०	१५०)
७६	खुशाव	४५०)	११०)	०	९५	चांदूर	१२५)	०	०
७७	पीलिभिति	भूमि क्रय की गई		८०)	९६	अमरावती	०	२८५	१३५)
८	खानगढ़	,,		०	९७	खराडवा	०	६०	५०)
	इटावा	जमा६००)	१५०	१००)	९८	अलीगढ़	०	०	२५०)

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

(तमग़े) दियेजाते हैं, इस वर्ष यह भी निश्चय हुवा है कि अलाहाबाद यूनिवर्सिटी के ऐन्ट्रेन्स क्लास का जो विद्यार्थी अपने नगर का इतिहास और भूगोल का वृत्तान्त लिखकर सभाके पास भेजगा, स्वीकृत होने पर उसको एक स्वर्णमुद्रा दीजायगी। वर्तमान वर्ष में सारे भारतवर्ष में ६२२ पुस्तक नागरीमें गद्यपद्ययुक्त अनेक विषयों में लिखे गए जिनमें से ३७१ संयुक्त प्रदेश, ८१ मुम्बई ५५ पंजाब, १८ मध्यप्रदेश, ६३ बङ्गाल और ४ राजस्थान में बने इन से पृथक् ऐसे पुस्तक भी बने कि जिनकी भाषा तो उर्दू, पंजाबी, सिंधी, गुजराती. खसिया अरबी फार्सी वा सन्थाली आदि है परन्तु अक्षर नागरी में हैं जिससे नागरी प्रचार में अधिक सहाय की आशा है ॥

२–गान्धर्व महाविद्यालय लाहौर—यह महाविद्यालय दक्षिण देश के सुप्रसिद्ध और विख्यात गायनाचार्य्य पं०विष्णुदिगम्बरजी ने प्राचीन रीति पर गायन विद्या की शिक्षा देने के लिये ५ मई १६०१ ई० से लाहौर में स्थापित किया है। इस समय ३ श्रेणी 'सा', 'रे', और 'गा' हैं और यथावसर आगे भी खोली जावेंगी। पूर्ण शिक्षा का समय ३½ वर्ष है, शिक्षा ५ बजे सायं से ६ बजे रात्रि तक दी जाती है जिस्में गाना और तम्बूरा, सितार, मृदङ्ग और हार्मोनियम बजाना सिखाया जाता है, सम्प्रति शिक्षा देने को पं० विष्णुदिगंबर जी प्रिन्सिपल और पांच अन्य प्रोफ़ेसर नियत हैं जो बड़े प्रेम और उत्साहपूर्वक कार्य करते हैं, इस्में नीच जाति के मनुष्यों को जो केवल अन्नोदक अर्थात् रोज़ी के लिये सीखतेहैं। गाना आदि सिखलाने की कड़ी मनाईहै केवल प्रतिष्ठित औरउच्च जाति तथा श्रेष्ठ मनुष्य ही सीखसकते हैं। प्रविष्ट होने की फ़ीस १) और मासिक फीस २) है। महाविद्यालय में समस्त सामान बाजा आदि उपस्थित है किसी को निज गृह से लाने की आवश्यकता नहीं एक वर्ष में प्रवेशिका, १½ वर्ष में मध्य, २½ वर्ष में संगीत विशारद, और ३½ वर्ष में संगीत तीर्थ की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर प्रशंसा पत्र दिये जाते हैं, अन्तिम दो परीक्षाओं में उपाधि (डिग्री) भी दी जावेगी और जो मनुष्य सर्व परीक्षोत्तीर्ण होनेपर दो वर्ष में गायन विद्या में निपुण होगा उसे गायनाचार्य्य की उपाधि दी जावेगी। गत वर्ष में महाराजा काश्मीर, कपूर्थला और अन्य प्रतिष्ठित महाशयों ने धनादि से बहुत सहायता की है, प्रतिष्ठित और विद्वज्जनों में से जिन्हों ने महाविद्यालय का निरीक्षण करके बड़ी प्रसन्नता प्रकट की है पं० बामनराव कृष्ण वैद्य मृदङ्गाचार्य्य निज़ाम हैद्राबाद ने यह भी लिखा है कि जैसी सुरीति पूर्वक शिक्षा से थोड़े काल में बहुत बड़ी उन्नति और अच्छा परिणाम इस महाविद्यालय में प्रकट हुआ है ऐसे अन्य किसी विद्यालय में जो कलकत्ता, मुम्बई, बड़ौदा, पूना और मद्रास में हैं कदापि प्रकट नहीं हुवे।

३–बालविधवाविवाहप्रचारिणी सभा भारतवर्ष-शाहजहांपुर–यह सभा १६०१ से श्रीमान् महाराजा सियाजी राव गायकवाड़ बड़ौदा नरेश की संरक्षकता में स्थापित है जिस्के उद्देश्य यह हैं (१) द्विज वर्ण की अक्षत योनि बिधवा

SGDF

कन्याओं के पुनर्विवाह करने में सर्व प्रकार से यत्न और सहाय करना, (२) बालकों और वृद्धों के विवाह और निवाह पर शुल्कादि (लेन देन) का रोकना, (३) स्त्रीशिक्षा और बालविधवा विवाह का उपदेश और लेखद्वारा प्रचार करना, और (४) कंगाल विधवाओं के पालन का प्रबन्ध और जो पुनर्विवाह करना चाहें उनके लिये धनादि से उचित सहायता देना॥ श्रोत्रिय शंकरलालजी रईस बिजनौर व संपादक अबलाहितकारी प्रधान और मुं० बखतावरसिंहजी अग्रवाल रईस शाहजहांपुर व सम्पादक आर्य्यदर्पण मन्त्री हैं। पं० कृष्णलाल शर्म्मा, पं० गिरिधारीलाल, भगवानदत्त (अमरोहा,) ऊधोराम (बिजनौर) सभा के अवैतनिक उपदेशक हैं। जुलाई १६०२ तक सभाके प्रबन्ध से और इतर २३ अक्षतयोनि विधवा कन्याओं के विवाह मुजफ्फरनगर, मेरठ, सहारनपुर, स्यालकोट, झांसी, आगरा, बिजनौर, जलन्धर, अमृतसर, फिल्लोर, पूंडरी, पेशावर, फ़ैजाबाद, ढाका आदि स्थानों में अनेक वर्णोंमें होचुके हैं जिनमें से ला० स्वरूपलाल अग्रवाल रईस मुजफ्फरनगर ला० जियालाल अग्रवाल जैनी मेरठ और ला० गणपत राय स्टेशनमास्टर जगाधरी बहुतही प्रतिष्ठित और उत्तमघराने के साहूकार हैं जिन्होंने अनेक अत्युग्र विरोधों के होते हुए भी पंडितों के साथ शास्त्रार्थ कराने और विज्ञापन देने के पश्चात् बड़ी वीरता और साहस से अपनी निर्दोषा कन्याओं का पुनर्विवाह बड़ी धूमधाम से किया॥

जो महाशय अपनी बालविधवा कन्या का पुनर्विवाह वा जो महाशय अपना विवाह ऐसी कन्या से करना चाहें वह उक्त मन्त्री से छपा हुवा पत्र (फार्म) मंगाकर भरकर वापिस भेजदें ताकि उक्त महाशय जोड़ा मिलाकर उभय पक्षको सूचना और सहायता देवें, प्रार्थियों का नाम उनकी इच्छा विना किसी को नहीं बताया जावेगा॥*

(४) वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा मुम्बई—यद्यपि यह सभा १८९५ से स्थापित है तथापि वार्षिकोत्सव तीन वर्ष से ही होता है, तृतीय उत्सवभी बड़े आनन्द और समारोह से समाप्तहुआ, मुम्बई प्रान्त में उक्त सभा के कारण वैदिक धर्म प्रचार बड़े ज़ोरसे होरहा है सभासद् १०० के लगभग हैं, मन्त्री श्रीमान् महाशय मोतीलाल त्रिभुवनदास दलाल हैं, ब्रह्मचारी नित्यानंदजी महाराज के उक्त वार्षिकोत्सव में तीन व्याख्यान होने पर मुम्बई म्यूनिसिपल कार्पोरेशन के प्रधान और कतिपय अन्य प्रतिष्ठित महाशयों के अनुरोध से ब्रह्मचारीजी ने "परदेशगमन" विषय पर एक व्याख्यान दिया जिसकी बड़ी प्रशंसा हुई इसपर ब्रह्मचारी नारायण वैद्य और डा० पोपरा प्रभुराम ने गत दिसम्बर मास की हिन्दूधर्म सभा में चर्चित २६ प्रश्नों पर उक्त ब्रह्मचारीजी को अपने अभिप्राय देने की विन्ती की, यह धर्म सभा इन्हीं दोनों महाशयों के यत्न और व्यय से हुई थी, ब्रह्मचारीजी ने ६ व्या-

---

*नोट—अभी काशी में एक बहुत बड़ा शास्त्रार्थ अक्षतयोनि कन्याओं के पुनर्विवाह के शास्त्रोक्त होने वा न होने के विषय में श्रोत्रिय शंकरलालजी प्रधान सभा और म० म० शिवकुमार शास्त्रीजी के मध्य होनेवाला है जिसमें चार महाराजे और तीन संस्कृतज्ञ अंग्रेज मध्यस्थ होने निश्चित हुए हैं॥

SCDF

ख्यान दिये और ३ वा ४ व्याख्यान देकर सारे प्रश्नों को समाप्त करनेवाले थे कि समस्त प्रतिष्ठित हिन्दू महाशयों ने मिलकर उनको स्वामी विश्वेश्वरानंद सरस्वती जी सहित "जापान प्रज्ञान प्रमिति सभा" में भेजने के लिये आनरेबल सर भालचन्द्र कृष्ण महोदय के स्थान पर सभा की और दोनों को अन्य दो महाशयों के साथ मुम्बइ प्रान्त का प्रतिनिधि निर्वाचन किया और व्यय के लिए ३०००) एकत्र किया है। ब्रह्मचारीजी के समस्त व्याख्यानों में बड़े २ प्रतिष्ठित महाशयों ने प्रमुख का पद ग्रहण किया था। यह सब कुछ प्रशंसित सभा के ही सुप्रयत्न का फल है। परमात्मा अधिक उन्नति करे ॥

SGDF
Sri Gangadharan Digital Foundation

ओ३म्

श्रीमत्या महाराज्ञ्या मन्दालसाया जीवनचरितम् ॥

श्रीमान् पं० दौलतराम शर्म्मा मुख्योपदेशक श्रीमती आर्य प्र० नि० सभा पञ्जाब लिखित

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! हमें शुभ मार्ग से ले चल,) जिस से भोगों की प्राप्ति हो। हे देव ! आप सब कर्मों को जानते हैं हम अज्ञानियों के हृदय में स्थित कपट रूपी पाप को दूर कीजिये। इन उपकारों के परिवर्तन में हम आपका कोई उपकार नहीं कर सकते अत एव वारंवार नमस्कार करते हैं ॥

महर्षि पतञ्जलि जी महाराज ने योग के अनेक उपाय बतलाए हैं उन में से एक उपाय महात्माओं के जीवन चरित्र का पाठ भी है। तथाच सूत्रम्-

"वीतरागविषयालम्बनं वा चित्तम्"॥

"वीतराग (विषयों में प्रीति नहीं है जिन की ऐसे) पुरुषों के चित्त के साथ चित्त मिलाने से योग होता है"

चित्त के साथ चित्त तभी मिलता है जब उन के चित्तों के भाव भले प्रकार अपने चित्त में बस जावें, उन के जीवन चरित्र के पाठ से उन में प्रीति उत्पन्न होने से उन के चित्तों के भाव अपने चित्त में बसते हैं, अत एव महात्मा पुरुषों का जीवन चरित्र का पाठ योग का साधन होने से जिज्ञासु जनों के पाठार्थ एक पवित्र स्त्री का जीवन चरित्र लिखते हैं ॥

इस विदुषी का नाम श्रीमती "मन्दालसा महाराज्ञी" है, इस देवी को किस समय वा किस से विद्या प्राप्त हुई इस विषय का परिचय नहीं मिलता? परन्तु इस के उपदेशों से प्रतीत होता है कि यह सर्व विद्याओं में निपुण थी। यह विश्वावसु नाम गन्धर्व की पुत्री थी। पातालकेतु नाम राक्षस पिता के घर से मन्दालसा को उठा कर लेगया। एक निर्जन वन में भूमि के भीतर गुप्त एक बड़ा दुर्ग (क़िला) बना रक्खा था उस में मन्दालसा को रख कर कुण्डला नाम कन्या को उस की रक्षा के लिये नियत कर दिया। यह पातालकेतु ऋषियों के यज्ञों को भ्रष्ट कर दिया करता था। सब ऋषियों ने दुःखित होकर गालव ऋषि से प्रार्थना की तब गालव जी ने राजा शत्रुजित (जो उस समय चक्रवर्ती थे) के पास जाकर कहा कि आप अपने पुत्र कुमार ऋतध्वज को ऋषियों के अर्पण कर देवें ताकि वह राक्षसों का नाश करके ऋषियों के यज्ञवाट की रक्षा करे राजा ने प्रसन्नता पूर्वक अपना पुत्र देदिया। गालव जी ऋतध्वज को साथ ले आये। ऋषियों ने ऋतध्वज को कुवलय नाम एक घोड़ा दिया, यह घोड़ा बड़ा आशुगामी (तेज़ रफ़तार) था, पृथिवी के पर्वत आदि विषम २ स्थानों में भी नहीं रुकता था, इसी लिये इस का नाम कुवलय※ था। जब से ऋतध्वज को यह घोड़ा मिला तब से इस का नाम घोडे के नाम से कुवलयाश्व प्रसिद्ध

※ कु नाम पृथ्वी का है और वलय नाम कंकण का है ॥

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

हुआ । कुमार कुवलयाश्व इस घोड़े पर चढ़ा हुआ यज्ञों का रक्षा के लिये सर्वदा उद्यत रहा करता था ॥ एक समय गालव आदि ऋषि यज्ञ कर रहे थे । पातालकेतु भी मांस रुधिर आदि की वर्षा करता हुआ यज्ञध्वंश के लिये आरहा था उस को देखते ही यज्ञवाट में हाहाकार की ध्वनि मचगई जिस को सुनते ही राजकुमार कुवलयाश्व अश्वारूढ़ हो उसके सन्मुख आकर ललकारा कि " अरे दुष्ट! सावधान हो जा इसी समय तेरे प्राणों को लेता हूं यदि प्राणरक्षा चाहता है तो मेरी शरण में होकर प्रतिज्ञा कर कि मैं आर्य्यावर्त्त को त्याग कर अन्य देश को चला जाऊंगा " कुमार के इन वचनों को सुनकर बड़े मद से युद्ध के लिये उद्यत हुआ और कुमार के ऊपर अनेक शस्त्रों की वर्षा की, उस के शस्त्रों को काट कुमार ने, उस की छाती में एक बाण इस ज़ोर से मारा कि उस के लगते ही पातालकेतु व्याकुल होकर भागा, कुमार ने भी उस का पीछा किया, भागते २ निर्जन वन में जाकर अपने दुर्ग में प्रवेश करगया कुमार सारे दुर्ग में फिरा परन्तु पातालकेतु का पता न लगा, प्रत्युत एक स्त्री दृष्टि गोचर हुई, कुमार उस से कुछ पूछना चाहता था कि इतने में यह स्त्री वेग से एक मंदिर के ऊपर चढ़ गई । कुमार भी घोड़े को एक ओर बांध उसी मंदिर पर चढ़ गया, ऊपर जाकर देखा कि एक स्वर्ण मञ्च पर सोलह वर्ष की युवती विराजमान है, कुमार को देखते ही युवती खड़ी हो गई, चित्तमें सोच रही थी कि इस गुप्त पुर में यह कुमार कहां से आगया, यह सोचते २ मूर्छित होकर गिर पडी । उसी समय दूसरी स्त्री जो उस की सखी थी उस को पंखा करने लगी । कुमार ने सान्त्वन कर के (तसल्ली देकर) कहा " कोई भय नहीं तुम व्याकुल मत होवो " । जब उसकी मूर्छा खुली तो कुमार ने इस की सखी से मूर्छा का कारण पूछा, उस ने कहा कि "यह विश्वावसु गन्धर्व की पुत्री मन्दालसा है, यह अपने पिता के बाग़ में खेल रही थी । दुराचारी पातालकेतु इस को उठा कर ले आया, अब जो त्रयोदशी आने वाली है उस दिन वह इस से विवाह करना चाहता है, कल यह बाला आत्महत्या करने लगी थी, एक ऋषि पत्नी ने इस से कहा 'तू आत्महत्या मत कर यह दुष्ट तुझे नहीं विवाह सकेगा, शीघ्र ही एक राजकुमार इस को बाणों से भेदन कर के तुझे विवाहेगा,' मैं इस की सखी हूं, मेरा नाम कुण्डला है, मैंने आज सुना था "ऋषियों के यज्ञ की रक्षा के लिये आए हुवे एक राजकुमार ने पातालकेतु को मार दिया, यह वार्त्ता मैं अभी सुना रही थी कि इतने में आप आगए, आप को देखते ही जो इस को मूर्छा हुई है, उसका कारण यह है कि तुम्हारे में इस के हृदय की प्रीति हो गई है और इस का पति अन्य बनेगा इसलिये यह जीवन पर्य्यन्त दुःखी रहेगी, मेरा इस के साथ बड़ा प्रेम है, जिस दिन से मेरा पति पुष्करमाली मरा मैं उसी दिन से तपस्या कर रही थी अब इस के दुःख को देख कर मेरी तपस्या में विघ्न हो रहा है मैं चाहती हूं कि यह अपने पति के घर चली जावे तो मैं भी एकान्त में जाकर तपस्या करूं । आप भी बतलावें आप कौन हैं और ऐसे कठिन स्थान में जो मनुष्यों के लिये अति दुर्गम है किस प्रकार आप का आगमन हुआ? मेरी सखी का चित्त अधर्म में कभी नहीं जाता इसलिये मेरा विश्वास है कि स्यात् आपने ही पाता-

SGPF

लकेतु को मारा है"। कुवलयाश्व ने कहा "मैं राजा शत्रुजित् का पुत्र हूं पिता ने ऋषियों की रक्षार्थ वन में भेजा था, एक राक्षस यज्ञ में विघ्न करने के लिये आया मैं ने एक वाण उसकी छाती में मारा वह भागकर इस किले में छिप गया, मैं ने किले में बहुत अन्वेषण किया, अन्धकार के कारण वह मुझे नहीं मिल सका, इतने में आप को इस मंदिर पर चढ़ते देखा तो मैं भी यहां आगया, बस यह मेरा वृत्तांत है, मेरे से आप को किसी प्रकार की शङ्का नहीं होनी चाहिये"। इस बात को सुन कुण्डला बहुत प्रसन्न हुई, उसी समय अग्नि प्रज्वलित कर गान्धर्व विधि से दोनों का विवाह कर दिया। राजकुमार कुवलयाश्व मन्दालसा को अश्वारूढ कर गालव के आश्रम की ओर चला और कुण्डला तपस्या करने के लिये मच्छादन पर्वत को प्रस्थित हुई और जाते हुए कुवलयाश्व को यह उपदेश दिया कि "पति का धर्म है कि भार्या की सदा रक्षा करे क्योंकि धर्म, अर्थ और काम इस त्रिवर्ग की सिद्धि में भार्या भर्त्ता की सहायक होती है जिस घर में भार्या और भर्ता एक दूसरे के वश में रहने वाले हों उस घर में धर्म अर्थ काम इन तीनों की संगति होती है भार्या के विना पुरुष धर्म नहीं कर सकता और धर्म के विना धन की प्राप्ति नहीं होती और धन विना काम नहीं होता इसलिये यह तीनों भार्या के आधीन हैं देवता, पितर और अतिथियों की पूजा भी भार्या के विना नहीं कर सकता, घर में लाया हुवा भी धन भार्या के विना नष्ट हो जाता है, इसी प्रकार पति के विना भार्या भी धर्मादि त्रिवर्ग को सिद्ध नहीं कर सकती यह जानकर तुम दोनों को गृहस्थ धर्म का पालन करना चाहिये"। यह कहकर मन्दालसा को आलिङ्गन कर और कुमार को अनेक आशीर्वाद दे कुण्डला चली गई और कुमार इधर मन्दालसा को ले गालव के आश्रम में पहुंचा। ऋषि को बहुत प्रसन्नता हुई, और उसने आज्ञा दी कि "मन्दालसा को लेकर अपने घर जाओ और माता पिता को प्रसन्न करो"। ऋषि से आज्ञा पाकर कुमार अपने पिता के घर पहुंचा और मन्दालसा के लाभ का सारा वृत्तांत सुनाया। यह सुनकर पित को बहुत प्रसन्नता हुई और पुत्र को आलिङ्गन कर कहा कि "हे वीर! तुझ महात्मा सुपुत्र से जिसने धर्मात्मा ऋषियों की रक्षा की मेरा कुल बड़ी प्रसिद्धि को प्राप्त हुवा है, पिता के उपलब्ध किये हुए यश और धन को जो पुत्र नहीं बिगाड़ता है वह मध्यम नर कहा जाता है जो पिता से अधिक यश और धन पैदा करे तो विद्वज्जन उसको उत्तम नर कहते हैं तूने मेरे से अधिक पराक्रम किया है इसलिये तू पुरुषोत्तम है तुझ पुत्र को पाकर आज मैं महात्माओं की सभा में श्लाघा के योग्य हुवा हूं, उस पुत्र से पिता को प्रीति नहीं होती जो विद्या, दान और शूरता में पिता से बढ़कर न हों, वे पुरुष धन्य हैं जो अपने नाम से प्रसिद्ध होते हैं, पिता और पितामह के नाम से जो प्रसिद्ध हों वे मध्यम होते हैं और मामा के नाम से जो प्रसिद्ध हों वे अधम कहे जाते हैं तू उत्तम पुरुष है मैं तुझे आशीर्वाद देता हूं कि इस गन्धर्व पुत्री से तेरा कभी वियोग न हो॥

इस प्रकार पिता से अनुमोदित कुमार कुवलयाश्व पिता की आज्ञा से प्रतिदिन वनों मे जाकर राक्षसों को दण्ड देता हुवा यज्ञों की रक्षा किया करता था। पाताल-

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

केतु जो कुमार के बाणों से क्षत होकर भाग गया था वह मरा नहीं था उस ने एक वार कई राक्षसों समेत मुनि वेष धारण करके एक यज्ञशाला रची, कुमार भी मन्दालसा को साथ लेकर उस वन मे पहुंचा, मुनिवेषधारी पातालकेतु ने इनका स्वागत किया और यज्ञ के निमित्त कुछ धन मांगा उन्होंने सब भूषण उतार कर दे दिये, फिर उसने कुमार से प्रार्थना की कि "यज्ञ की समाप्ति पर्यन्त आप यहीं ठहरें इन आभूषणों को लेकर सामग्री लेने के लिये जो ऋषि नगर में जावेंगे, वे महाराज से आप का कुशलसमाचार कह देवेंगे,, "उसके इस वचन को स्वीकार करके जब कुमार वहां कतिपय दिनों के लिये ठहर गये, तब पातालकेतु ने नगर में जा शोक से राजा से कहा कि "हे राजन् ! मेरे आश्रम के समीप राक्षसों ने कुमार कुवलयाश्व को मारदिया है पति के मरते ही मन्दालसा देवी ने भी योगधारणा से शरीरत्याग कर दिया यह उन के भूषण हैं हम ऋषियों को सुवर्ण से क्या प्रयोजन ? राक्षस के इस वचन को सुनते ही सारे नगर में हाहाकार मचगया परन्तु राजा शत्रुजित्के मन में किसी प्रकार का भी विकार न हुवा और चित्त की स्वस्थता से उपदेश क्रिया ॥

राजोवाचः—

न रोदितव्यं पश्यामि भवतामात्मनस्तथा ।
सर्वेषामेव सञ्चिन्त्य सम्बन्धानामनित्यताम् ॥ १ ॥
किन्नु शोचामि तनयं किन्नु शोचाम्यहं स्नुषां ।
विमृश्य कृतकृत्यत्वान्मन्येऽशोच्यावुभावपि ॥ २ ॥
मच्छुश्रूषुर्मद्वचनाद् द्विजरक्षणतत्परः ।
प्राप्तो मे यः सुतो मृत्युं कथं शोच्यः स धीमताम् ॥ ३ ॥
अवश्यं याति यद्देहं तद्द्विजानां कृते यदि ।
मम पुत्रेण सन्त्यक्तं नन्वभ्युदयकारि तत् ॥ ४ ॥
इयञ्च सत्कुलोत्पन्ना भर्त्तर्य्येवमनुव्रता ।
कथं नु शोच्या नारीणां भर्तुरन्यन्नदैवतम् ॥ ५ ॥
अस्माकं बान्धवानाञ्च तथान्येषां दयावताम् ।
शोच्या ह्येषा भवेदेवं यदि भर्त्रावियोगिनी ॥ ६ ॥
नासौ शोच्यो न चैवेयं नाहं तज्जननी न च ।
त्यजता ब्राह्मणार्थाय प्राणान् सर्वेस्म तारिताः ॥ ७॥
विप्राणां ममधर्मस्य गतः सहि महामति ः ।
आनृण्यमर्धभुक्तस्य त्यागाद्देहस्य मे सुतः ॥ ८ ॥
मातुःसतीत्वं मद्वंश वैमल्यं शौर्य्यमात्मनः ।
सङ्ग्रामे सन्त्यजन् प्राणान् नात्यजद् द्विजरक्षणम् ॥ ९ ॥

SGDF

अर्थः—राजा ने कहा सब के सम्बन्धों की अनित्यता को सोचकर आप लोगों को और मुझे रोना नहीं चाहिये ॥ १ ॥

मैंपुत्र का क्यों शोक करूं और स्नुषा (पुत्रबधू) का क्यों ? कर्त्तव्य को पूरा कर के मरे हैं इसीलिये दोनों को अशोच्य (शोक के अयोग्य) समझता हूं ॥ २ ॥

मेरा सेवक मेरे वचन से ब्राह्मणों की रक्षा में तत्पर हो के जो मृत्यु को प्राप्त हुआ है बुद्धिमानों के निकट·वह शोक के योग्य नहीं है ॥ ३ ॥

अवश्य नष्ट होने वाला देह ब्राह्मणों की रक्षा के लिये यदि मेरे पुत्र ने त्यागा तो वह उन्नतिका करने वाला है ॥ ४ ॥

सत्कुल में उत्पन्न हुई भर्त्ता की सेवाकारिणी मन्दालसा किस प्रकार शोक के योग्य हो सकती है ? क्योंकि भर्त्ता के विना स्त्री का अन्य देवता नहीं है ॥ ५ ॥

यदि उसका भर्त्ता से वियोग हो जाता तो मेरे वा अन्य सम्बन्धियों तथा दयावानों के निकट शोक के योग्य होती ॥ ६ ॥

न कुमार शोक के योग्य है न मन्दालसा, न मैं, न उसकी माता ब्राह्मणों के निमित्त प्राण त्यागकर हम सब को उसने तार दिया ॥ ७ ॥

मेरे बुद्धिमान् पुत्र ने आधे भोगे हुवे (युवावस्थामें) देह के त्याग से ब्राह्मणों का मेरा और धर्म का ऋण प्रदान कर दिया है ॥ ८ ॥

ब्राह्मणों की रक्षार्थ संग्राम में प्राणों को त्यागकर पुत्र ने माता का पातिव्रत्य, मेरे वंश की शुद्धि और अपनी शूरता प्रकट करदी ॥ ९ ॥

पुनः कुवलयाश्व की माता ने पुत्र की तादृश मृत्यु को सुनकर प्रसन्नचित्त पति से कहा ॥ राज्ञ्युवाचः—

न मे मात्रा न मे स्वस्रा प्राप्ता प्रीतिर्नृपेदृशी ।
श्रुत्वा मुनिपरित्राणे हतं पुत्रं यथा मया ॥ १ ॥
शोचतां बान्धवानां ये निःश्वसन्तोऽतिदुःखिताः ।
म्रियन्ते व्याधिना क्लिष्टास्तेषां माता वृथा प्रजा ॥ २ ॥
संग्रामे युध्यमाना येऽभीता गोद्विजरक्षणे ।
क्षुण्णाः शस्त्रैर्विपद्यन्ते त एव भुवि मानवाः ॥ ३ ॥
अर्थिनां मित्रवर्गस्य विद्विषाञ्च पराङ्मुखः ।
यो न याति पिता तेन पुत्री माता च वीरसूः ॥ ४ ॥
गर्भक्लेशः स्त्रियो मन्ये साफल्यं भजते तदा ।
यदारिविजयी वा स्यात् संग्रामे वा हतः सुतः ॥ ५ ॥

अर्थः— हे राजन् ! मुनियों की रक्षा के लिये मरे हुए पुत्र को सुन कर मुझे जो प्रीति हुई है माता और भगिनियों के दर्शन से भी वैसी प्रीति कभी नहीं हुई ॥ १ ॥

SGDF

शोक करते हुए सम्बन्धियों के समीप निःश्वास लेते अति दुःखित, रोगों से पीड़ित जो मरते हैं उन की माता वृथाप्रजा है ॥ २ ॥

गौ और ब्राह्मणों की रक्षा के लिये निर्भयता से संग्राम में लड़ते २ शस्त्रों से विक्षत होकर जो मरते हैं पृथिवी में वेही मनुष्य कहलाते हैं ॥ ३ ॥

याचकों और मित्रों तथा शत्रुवों से जो मुख नहीं फेरता उस पुत्र से पिता पुत्रवान् और माता वीरजननी कहलाती है ॥ ४ ॥

मैं समझती हूं कि स्त्री का गर्भक्लेश तभी सफल होता है जब पुत्र शत्रुवों को जीतकर आता है वा वहीं संग्राम में मर जाता है ॥ ५ ॥

इस प्रकार राजा और राणी के उपदेश से सब प्रजा चकित होरही थी कि इतने में कुमार और मन्दालसा ने वन से आकर माता पिता को प्रणाम कर राक्षसों की माया का सारा वृत्तान्त सुनाया। कुमारों को जीवित देख कर माता पिता तथा नगरवासियों को अत्यानन्द हुवा। राक्षसों के इस कपट को देखकर कुमार पूर्व से भी अधिक उनके नाश में तत्पर रहा। कुमार के धर्मभाव, शूरता और प्रजाप्रेम को देखकर उस को राज्य दे राजा शत्रुजित् पत्नी सहित वन को चले गये ॥

कुवलयाश्व भी राज्य को प्राप्त कर मन्दालसा के साथ अनेक यज्ञों को करते हुवे प्रजा का स्वपुत्रों के समान पालन किया करते थे ॥

एक समय जब मन्दालसा के प्रथम पुत्र उत्पन्न हुवा और ग्यारहवें दिन मन्दालसा के साथ होम करके राजा ने पुत्र का नाम "विक्रान्त" रक्खा तो सेवक सब प्रसन्न हुवे परन्तु मन्दालसा हंस पड़ी और उसी समय लालन के मिष से उपदेश करने लगीः—

शुद्धोसि रे तात! नतेऽस्ति नाम कृतं हि ते कल्पनयाऽधुनैव।
पञ्चात्मकं देहमिदं तवैतन्नैवास्य त्वं रोदिषि कस्य हेतोः ॥ १ ॥
न वा भवान् रोदिति वै स्वजन्मा शब्दोयमासाद्य महीशसूनुम् ।
विकल्प्यमाना विविधागुणास्ते गुणाश्च भौताःसकलेन्द्रियेषु॥२॥
भूतानि भूतैः परिदुर्बलानि वृद्धिंसमायान्ति यथेह पुंसः ।
अन्नाम्बुदानादिभिरेव कस्य न तेऽस्ति वृद्धिर्नच तेऽस्ति हानिः॥३॥
त्वं कञ्चुके शीर्य्यमाणे निजेऽस्मिंस्तस्मिंश्च देहे मूढतां मा व्रजेथाः।
शुभाशुभैः कर्मभिर्देहमेतन्मदादिमूढैः कञ्चुकस्ते पिनद्धः ॥ ४ ॥
तातेति किञ्चित्तनयेति किञ्चिदम्बेति किञ्चिद्दयितेति किञ्चित्।
ममेति किंचिन्न ममेति किंचित्त्वं भूतसंघं बहुमानयेथाः ॥ ५ ॥
दुःखानि दुःखोपशमाय भोगान् सुखाय जानाति विमूढचेताः।
तान्येव दुःखानि पुनः सुखानि जानात्यविद्वान् सुविमूढचेताः॥६॥

SCDF

हासोऽस्थिसन्दर्शनमक्षियुग्ममत्युज्ज्वलं तर्जनमङ्गनायाः ।
कुचादिपीनं पिशितं घनं तत् स्थानं रतेः किं नरकं न योषित् ॥७॥
यानं क्षितौ यानगतञ्च देहं देहेपि चान्यः पुरुषो निविष्टः ।
ममत्वबुद्धिर्न तथा यथा स्वे देहेतिमात्रं वत मूढतैषा ॥ ८ ॥

अर्थः--हे पुत्र ! तू शुद्ध है, तेरा नाम नहीं है यह नाम अभी कल्पना से रक्खा गया है, यह देह पञ्चभूतों का है तेरा नहीं, न तू इसका है, तू किसलिये रोता है ?॥१॥

अथवा तू नहीं रोता है यह शब्द तो राजा का पुत्र जो देह है उसको बतला रहा है, इन्द्रियों में भूतों के गुण हैं तेरे नहीं ॥ २ ॥

जिस प्रकार बाह्य भूत भूतों के योग से वृद्धि को प्राप्त होते हैं उसी प्रकार अन्न जलादि के दान से पुरुष के शरीरस्थ भूतों ही की वृद्धि होती है, तेरी न वृद्धि है न हानि है ॥ ३ ॥

देह रूपी कपड़े के फटने से तू मूर्खता को मत प्राप्त हो शुभाऽशुभ कर्मों से यह देह रूपी कपड़ा बना है, मद आदिकों से इस में फंस गया है ॥ ४ ॥

किसी को पिता किसी को पुत्र किसी को माता किसी को स्त्री किसी को मेरा और किसी को पराया मत समझ यह सब भूतों का समूह है ॥ ५ ॥

मूर्ख पुरुष दुःख ही को दुःख की शान्ति का उपाय समझता है और भोगों को जो वार२ दुःख देने घाले हैं सुख का उपाय समझता है ॥ ६ ॥

हंसी हड्डियों का दिखाना है, सुन्दर नेत्रों का जोड़ा स्त्री का तर्जन (कोड़ा) है, मोटे स्तन मांस के लौंदे हैं, रति (समागम करने) का स्थान गन्दा है क्या स्त्री नरक नहीं है? ॥ ७ ॥

पृथिवी पर यान (सवारी) है सवारी में देह, देह में भी और पुरुष बैठा हुआ है ममता जैसी देह में ऐसी उनमें नहीं यह बड़ी भारी मूर्खता है ॥ ८ ॥

इस प्रकार उस राजपत्नी ने लालन करते२ ही पुत्र को निर्ममता का बोध करा दिया जैसे२ बालक में बल बढ़ता जाता था वैसे२ ही आत्मबोध बढ़ता जाता था। जब पिता ने उसको ब्रह्मचर्य्य के लिये भेजा वह वहीं संन्यासी होगया ॥

दूसरे पुत्रोत्पत्ति पर पिता ने उस का नाम "सुबाहु" रक्खा फिर भी मन्दालसा हंस पडी और उसी समय से इस को भी ऐसा ही उपदेश करने लगी, अन्त में वह पुत्र भी ब्रह्मचर्य्य ही से संन्यास को प्राप्त हुवा ॥

जब तीसरा पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम पिता ने "शत्रुमर्दन" रक्खा फिर भी मन्दालसा हंस पड़ी और पुत्र को वैसा ही उपदेश करती रही जिस से वह भी संन्यासी होगया ॥

जब चतुर्थ पुत्र हुआ और राजा उसका नाम रखने लगा तो उसने मन्दालसा को मुसकाते देखकर कौतूहल से कहा कि हे "मन्दालसे! मैंने जो पुत्रों के नाम रक्खे हैं वेह क्षत्रियों के योग्य हैं और शूरता से युक्त हैं, तुम्हारे हंसने का क्या कारण है? यदि वे सब नाम अयोग्य हैं तो इस चतुर्थ पुत्र का नाम तुम रक्खो"। यह सुनकर मन्दालसा बोली, आप की आज्ञा मुझे अवश्य पालनीय है इसलिये मैं इस पुत्र का नाम

SGTF

" अलर्क " रखती हूं "। यह सुनकर राजा ने हंस कर कहा·"हे·मन्दालसे ! अलर्क नाम असंस्कृत है इस का कोई अर्थ नहीं"। मन्दालसा ने कहा " हे राजन् ! नाम केवल बुलाने आदि व्यवहार के लिये होता है सो व्यवहार प्रत्येक*नाम से हो सकता है वह सार्थक हो वा निरर्थक ; हे राजन् ! आप के रक्खे हुए नाम भी जिस प्रकार निरर्थक हैं सो आप सुनें:—

पंडित लोग कहते हैं कि आत्मा स्वभाव से ÷निष्क्रिय है और क्रान्ति नाम गति का है, गतिक्रिया है सो निष्क्रिय आत्मा में बन नहीं सकती इस लिये मेरी सम्मति में विक्रान्त नाम भी निरर्थक है और दूसरे पुत्र का नाम आप ने सुबाहु रक्खा है अमूर्त्त पुरुष की बाहें बन नहीं सकती इस लिये यह भी निरर्थक है। तीसरे पुत्र का नाम आपने शत्रुमर्दन रक्खा है यह जिस प्रकार निरर्थक है सो † आप सुनें, हे राजन्! सब शरीरों में अन्तर्यामी एक है पुनः कौन शत्रु और कौन मित्र ? भूतों से भूतों का मर्दन होता है अमूर्त्त को उस से क्या कष्ट ? कभी अपने ही दांत से अपनी जीभ कट जाती है इस से किस पर क्रोध करे ? यदि यह कहें कि निरर्थक नाम से भी व्यवहार हो सकता है तो आप अलर्क नाम पर निरर्थकता का आक्षेप क्यों करते हैं" ?। मन्दालसा के इस वचन को सुनकर राजा ने कहा " कृपा करके इस पुत्र को प्रवृत्ति मार्ग का उपदेश करो ताकि मेरे अनन्तर गृहस्थ धर्म में स्थित होकर राज्य पालन करे"। पति की आज्ञा को मान कर गोद में ही अलर्क को नीति शास्त्र का उपदेश करने लगी जब बालक बड़ा हुवा और समझने के योग्य होगया तो मन्दालसा ने कहा कि " हे पुत्र ! जब तू राज्य में स्थित हो अपने धर्म को न बिगाड़ कर प्रजा को प्रसन्न रखियो, और सब व्यसनों को त्यागियो, बाहर निकलने से मंत्र की रक्षा करके शत्रुओं से अपने आत्मा की रक्षा करियो, मित्र और सम्बन्धियों पर राजा को कभी भी विश्वास न करना चाहिये अपना काम निकालने के लिये शत्रु पर भी विश्वास कर लेवे, सब से प्रथम काम क्रोधादि को जीतकर अपने आत्मा को जीतना चाहिये पुनः मन्त्रियों और भृत्यों को वश में करके प्रजा को सुरक्षित करे तब शत्रुवों से युद्ध करे, इनको प्रथम न जीतकर जो शत्रु को जीतना चाहता है वह मूर्ख आप शत्रुओं से जीता जाता है।

---

* यह निस्सन्देह ठीक है कि व्यवहार प्रत्येक नाम से हो सकता है यथा– छीतर, झाडू, गूदड़, कूड़ा इत्यादि बहुतसे नाम हैं जिन से प्रायः सब ही परिचित हैं परन्तु ऐसे नामों के रखने से अन्य दोषों के अतिरिक्त उस कुल में वैदिक विद्या तथा शास्त्रोक्त कर्मकाण्ड की अनुपस्थिति तथा अविद्यमानता सर्वथा स्पष्ट और प्रत्यक्ष है अतएव नित्य शास्त्रोक्त रीत्यनुसार ही सुन्दर, मनोहर और सार्थक नाम रखना चाहिये ॥ सम्पादक

÷ यह नवीन वेदान्तियों की कल्पना है जो जीवात्मा और परमात्मा को एक कहते हैं परन्तु प्राचीन वेदान्त इस प्रकार की शिक्षा नहीं देता, यदि जीवात्मा को निष्क्रिय माना जावे तो उसका किसी शरीर में गमनागमन किस प्रकार बन सकता है ? ॥ सं०

† यह भी नवीन वेदान्त है, अन्तर्यामी परमात्मा है जो शरीर में और उस से बाहर प्रत्येक स्थान में परिपूर्ण है, जीवात्मा नहीं ॥ सं०

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

शक्रार्कयमसोमानां तद्वद्वायोर्महीपतिः ।
रूपाणि पञ्च कुर्वीत महीपालनकर्मणि ॥ १ ॥
यथेन्द्रश्चतुरो मासान् तोयोत्सर्गेण भूगतम् ।
आप्याययेत्तथा लोकं परिहारैर्महीपतिः ॥ २ ॥
मासानष्टौ यथा सूर्य्यस्तोयं हरति रश्मिभिः ।
सूक्ष्मेणैवाभ्युपायेन तथा शुल्कादिकं नृपः ॥ ३ ॥
यथा यमः प्रियद्वेष्ये प्राप्तकाले नियच्छति ।
तथा प्रियाप्रिये राजा दुष्टादुष्टे समो भवेत् ॥ ४ ॥
पूर्णेन्दुमालोक्य यथा प्रीतिमान् जायते नरः ।
एवं यत्र प्रजाः सर्वा निर्वृत्तास्तच्छशिव्रतम् ॥ ५ ॥
मारुतः सर्वभूतेषु निगूढश्चरते यथा ।
एवं नृपश्चरेच्चारैः पौरामात्यादिबन्धुषु ॥ ६ ॥
न लोभाद्वा न कामाद्वा नार्थाद्वा यस्य मानसम् ।
यथान्धः कृष्यते वत्स ! स राजा स्वर्गमृच्छति ॥ ७ ॥
उत्पथग्राहिणो मूढान् स्वधर्माच्चलतो नरान् ।
यः करोति निजे धर्मे स राजा स्वर्गमृच्छति ॥ ८ ॥
वर्णधर्मा न सीदन्ति यस्य राज्ये तथाश्रमाः ।
वत्स ! तस्य सुखं प्रेत्य परत्रेह च शाश्वतम ॥ ९ ॥
एतद्राज्ञः परं कृत्यं तथैतत्सिद्धिकारकम् ।
स्वधर्मस्थापनं नृणां चाल्यते यत्कुबुद्धिभिः ॥ १० ॥
पालनेनैव भूतानां कृतकृत्यो महीपतिः ।
सम्यक् पालयिता भागं धर्मस्याप्नोति यत्नतः ॥ ११ ॥

अर्थ— पृथिवी की रक्षा के लिये राजा इन्द्र, सूर्य्य, यम, चन्द्रमा, वायु इन पांचों के रूपोंको धारण करे ॥ १ ॥

जैसे इन्द्र (मेघ) चार मास वर्षा करने से पृथिवी को प्रसन्न करता है इसी प्रकार उपहारों से राजा प्रजा को प्रसन्न करे ॥ २ ॥

जैसे सूर्य्य आठ मास किरणों से जल हरता है इसीप्रकार सूक्ष्म उपाय से राजा कर लेवे ॥ ३ ॥

जैसे यम पुण्यात्मा और पापी को समय पर मारता है इसी प्रकार दुष्ट और साधु को दण्ड देने में राजा सम होवे ॥ ४ ॥

जैसे पूर्ण चन्द्रमा के दर्शन से प्रजा को प्रसन्नता होती है इसी प्रकार जिस के दर्शन से प्रसन्न हो वह चन्द्रमा का व्रत है ॥ ५ ॥

SCDF

जैसे पवन सबभूतों में गुप्त होकर विचरता है इसी प्रकार पौर, मन्त्री और सम्बन्धियों में गुप्त दूतों के द्वारा राजा विचरे ॥ ६ ॥

अन्धे के सदृश जिस राजा का मन लोभ से, काम से, वा धन से नहीं खिचता वह राजा स्वर्ग को प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

अपने धर्म को त्याग कर कुमार्ग में चलते हुए मनुष्यों को जो अपने२ धर्म में स्थित रखता है वह राजा स्वर्ग को प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

जिस राजा के राज्य में वर्णों और आश्रमों के धर्म शिथिल नहा होते, हे पुत्र ! उस को इस लोक और परलोक में निर्विघ्न सुख प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

यही राजा के लिये परम कर्त्तव्य है यही सिद्धिकारक है जो मनुष्यों को अपने२ धर्म में स्थापन करना है क्योंकि मूर्ख पुरुष अपनी मूर्खता से इस को बिगाड़ते रहते हैं ॥ १० ॥

भूतों के पालन ही से राजा कृतकृत्य (कामयाब) होता है यत्न से भले प्रकार पालन करने वाला राजा प्रजा के धर्म का भागी होता है ॥ ११ ॥

अलर्क ने कहा हे माता ! आप ने कहा कि वर्णों और आश्रमों के धर्म का पालन करना क्षत्रिय का परम धर्म है आप कृपा करके मुझे वर्णों और आश्रमों के धर्म बतलावें ।

मातोवाच—

दानमध्ययनं यज्ञो ब्राह्मणस्य त्रिधा मतः ।
नान्यश्चतुर्थो धर्मोस्ति पुत्र ! तस्यापदं विना ॥ १ ॥
याजनाध्यापने शुद्धे तथा पूतपरिग्रहः ।
एषा सम्यक् समाख्याता त्रिविधा चास्य जीविका ॥ २ ॥
दानमध्ययनं यज्ञः क्षत्रियस्याप्ययं त्रिधा ।
धर्मः प्रोक्तः क्षितेरक्षा शस्त्राजीवञ्च जीविका ॥ ३ ॥
दानमध्ययनं यज्ञो वैश्यस्यापि त्रिधैवसः ।
वाणिज्यं पाशुपाल्यञ्च कृषिश्चैवास्य जीविका ॥ ४ ॥
दानं यज्ञोथ शुश्रूषा द्विजातीनां त्रिधा मता ।
व्याख्यातः शूद्रधर्मोपि जीविका कारुकर्म च ॥ ५ ॥
तद्वद्द्विजातिशुश्रूषा पोषणं क्रयविक्रयौ ।
वर्णधर्मास्त्विमे प्रोक्ताः श्रूयन्तां चाश्रमाश्रयाः ॥ ६ ॥
स्ववर्णधर्मात् संसिद्धिं नरः प्राप्नोति न च्युतः ।
प्रयाति नरकं प्रेत्य प्रतिषिद्धनिषेवणात् ॥ ७ ॥

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

यावत्तु नोपनयनं क्रियते वै द्विजन्मनः ।
कामचेष्टोतिभक्ष्यश्च तावद् भवति पुत्रक ! ॥ ८ ॥
कृतोपनयनः सम्यग् ब्रह्मचारी गुरोर्गृहे ।
वसेत्तत्र च धर्मोऽस्य कथ्यते तं निबोध मे ॥ ९ ॥
स्वाध्यायोऽथाग्निशुश्रूषा स्नानं भिक्षाटनं तथा ।
गुरोर्निवेद्य तच्चाद्यमनुज्ञातेन सर्वदा ॥ १० ॥
गुरोः कर्मणि सोद्योगः सम्यक् प्रीत्युपपादनम् ।
तेनाहूतः पठेच्चैव तत्परो नाऽन्यमानसः ॥ ११ ॥
एकं द्वौ सकलान् वापि वेदान् प्राप्य गुरोर्मुखात् ।
अनुज्ञातोऽथ वन्दित्वा दक्षिणां गुरवे ततः ॥ १२ ॥
गार्हस्थ्याश्रमकामस्तु गृहस्थाश्रममावसेत् ।
वानप्रस्थाश्रमं वापि चतुर्थं चेच्छयात्मनः ॥ १३ ॥
तत्रैव वा गुरोर्गेहे द्विजो निष्ठामवाप्नुयात् ।
गुरोरभावे तत्पुत्रे तच्छिष्ये तत्सुतं विना ॥ १४ ॥
शुश्रूषुर्निरभिमानो ब्रह्मचर्य्याश्रमं वसेत् ।
उपावृत्तस्ततस्तस्माद् गृहस्थाश्रमकाम्यया ॥ १५ ॥
ततः समां शुद्धकुलां तुल्यां भार्यामरोगिणीम् ।
उद्वहेन्न्यायतोऽव्यङ्गीं गृहस्थाश्रमकारणात् ॥ १६ ॥
स्वकर्मणा धनं लब्ध्वा पितृदेवातिथींस्तथा ।
सम्यक् सम्प्रीणयन् भक्त्या पोषयेच्चाश्रितांस्तथा ॥ १७ ॥
भृत्यात्मजान् जामयोथ दीनान्धपतितानपि ।
यथा शक्त्यन्नदानेन वयांसि पशवस्तथा ॥ १८ ॥
एष धर्मो गृहस्थस्य ऋतावभिगमस्तथा ।
पञ्चयज्ञविधानन्तु यथाशक्ति न हापयेत् ॥ १९ ॥
पितृदेवातिथिज्ञातिभुक्तशेषं स्वयं नरः ।
भुञ्जीत च समं भृत्यैर्यथाविभवमादृतः ॥ २० ॥
एषतूद्देशतः प्रोक्तो गृहस्थस्याश्रमो मया ।
वानप्रस्थस्य धर्मन्ते कथयाम्यवधार्यताम् ॥ २१ ॥
अपत्यसन्ततिं दृष्ट्वा प्राज्ञो देहस्य क्षीणताम् ।

SGDF

वानप्रस्थाश्रमं गच्छेदात्मनः शुद्धिकारणात् ॥ २२ ॥
तत्रारण्योपभोगश्च तपोभिश्चानुकर्षणम् ।
भूमौ शय्या ब्रह्मचर्य्यं पितृदेवातिथिक्रिया ॥ २३ ॥
होमस्त्रिषवणस्नानं जटावल्कलधारणम् ।
योगाभ्यासः सदाचैव वन्यस्नेहनिषेवणम् ॥ २४ ॥
इत्येष पापशुद्ध्यर्थमात्मनश्चोपकारकः ।
वानप्रस्थाश्रमस्तस्माद् भिक्षोस्तु चरमोऽपरः ॥ २५ ॥
चतुर्थस्य स्वरूपन्तु श्रूयतामाश्रमस्य मे ।
यः स्वधर्मोऽस्य धर्मज्ञैः प्रोक्तस्तात ! महात्माभिः ॥ २६ ॥
सर्वसङ्गपरित्यागो ब्रह्मचर्यमकोपता ।
यतेन्द्रियत्वमावासे नैकस्मिन् वसतिश्चिरम् ॥ २७
अनारम्भस्तथाहारो भैक्षान्नेनैककालिना ।
आत्मज्ञानावबोधेच्छा तथाचात्मावलोकनम् ॥ २८ ॥
चतुर्थेत्वाश्रमे धर्मो मयायं ते निवेदितः ।
सामान्यमन्यवर्णानामाश्रमाणां च मे शृणु ॥ २९ ॥
सत्यं शौचमहिंसा च अनसूया तथा क्षमा ।
आनृशंस्यमकार्पण्यं सन्तोषश्चाष्टमो गुणः ॥ ३० ॥
एते संक्षेपतः प्रोक्ता धर्मा वर्णाश्रमेषु ते ।
एतेषु च स्वधर्मेषु स्वेषु तिष्ठेत्समन्ततः ॥ ३१ ॥
यश्चोल्लङ्घ्य स्वकं धर्मं स्ववर्णाश्रमसंज्ञितम् ।
नरोन्यथा प्रवर्त्तेत सदण्ड्यो भूभृतो भवेत् ॥ ३२ ॥
ये च स्वधर्मसन्त्यागात्पापं कुर्वन्ति मानवाः ।
उपेक्षतस्तान्नृपतेरिष्टापूर्त्तं प्रणश्यति ॥ ३३ ॥
तस्माद्राज्ञा प्रयत्नेन सर्वे वर्णाः स्वधर्मतः ।
प्रवर्तन्तोऽन्यथा दण्ड्याः स्थाप्याश्चैव स्वस्वकर्म ॥ ३४ ॥

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

अर्थ—दान, अध्ययन, यज्ञ यह तीन धर्म ब्राह्मण के हैं, हे पुत्र ! विपत्ति के विना ब्राह्मण का चौथा धर्म नहीं है ॥ १ ॥

यज्ञ कराना, शुद्ध पुरुषों को विद्या पढ़ाना पवित्र पुरुषों से दान लेना यह तीन जीविकार्थ हैं ॥ २ ॥

दान, अध्ययन, यज्ञ क्षत्रिय के भी यही तीन धर्म हैं शस्त्रधारण करके पृथिवी की रक्षा करनी जीविका है ॥ ३ ॥

वैश्य के भी यही तीन धर्म हैं, वाणिज्य, पशुरक्षा और खेती, यह तीन जीविकार्थ हैं ॥ ४ ॥

दान, यज्ञ और द्विजातियों की सेवा यह तीन शूद्र के धर्म हैं, कारुकर्म (शिल्प विद्या) इसकी जीविका है ॥ ५ ॥

इसी प्रकार द्विजातियों की सेवा, पशु पालना, क्रय विक्रय (मोल लेना बेचना) यह भी शूद्र के धर्म हैं। यह वर्णों के धर्म हैं, आश्रमों के धर्म सुन- ॥ ६ ॥

अपने वर्ण के धर्म से ही पुरुष सिद्धि को प्राप्त होता है वर्ण धर्म से गिरा हुआ पुरुष सिद्धि को नहीं प्राप्त होता है, प्रत्युत निषिद्ध वस्तुओं के सेवन से मर कर नरक को प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

हे पुत्र ! जबतक द्विजाति का उपनयन नहीं किया जाता है तब तक खेलने. खाने और बोलने में कामचार (स्वतन्त्र) हैं ॥ ८ ॥

उपनयन करके ब्रह्मचारी गुरुके घर में बसे। वहां पर उसका जो धर्म है वह तू सुन ॥ ९ ॥

स्वाध्याय, अग्निहोत्र, स्नान सदा भिक्षा करके गुरु के अर्पण करके गुरु की आज्ञा से भोजन करे ॥ १० ॥

यत्न से गुरु सेवा करे, गुरु को भली प्रकार प्रसन्न करे गुरु के बुलावे पर पढ़े, गुरु के चरणों में तत्पर रहकर अन्य विषयों से चित्त को हटाता हुवा- ॥ ११ ॥

एक, दो वा सब वेदों को गुरुमुख से पढ़ आज्ञा ले गुरुदक्षिणा दे नमस्कार कर- ॥ १२ ॥

अपनी इच्छानुसार गृहस्थ वानप्रस्थ वा संन्यासाश्रम को ग्रहण करे ॥ १३ ॥

या गुरु ही के घर में ब्रह्मचर्य्य को पालन करता हुवा मृत्यु को प्राप्त होवे, गुरु के अभाव में उस के पुत्र के घर में और पुत्र के अभाव में गुरु के शिष्य के घर में शेष ब्रह्मचर्य्य को पूर्ण करे ॥ १४ ॥

अभिमान को त्याग कर सेवा करता हुवा ब्रह्मचर्य्याश्रम में बसे, गुरुकुल से समावर्तन करके गृहस्थाश्रम की इच्छा से अपने से पृथक् गोत्र और कुल वाली अपने सदृश रोग रहित पूर्णाङ्गी कन्या से गृहस्थ धर्म को पूर्ण करने के लिये विवाह करे ॥ १५, १६ ॥

अपने २ वर्णाश्रय के उचित कर्म से धन उपार्जन करके भक्ति से पितर, देवता, अतिथियों को भली प्रकार तृप्त करता हुवा अपने आश्रितों को पाले ॥ १७ ॥

भृत्य, पुत्र, जामि (मावसी, फूफी आदि) दीन, अन्ध, पतितों तथा पक्षि और पशुओं की यथाशक्ति अन्न दान से पालना करे ॥ १८ ॥

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

यह गृहस्थ का धर्म है वैसे ही ऋतु काल में स्त्रीसंग भी गृहस्थ का धर्म है, जहां तक सामर्थ्य हो पञ्च यज्ञ विधि को न त्यागे ॥ १९ ॥

पितर, देवता, अतिथि और सम्बान्धियों के भोजन कर चुकने पर नौकरों के सहित धनानुसार नाना प्रकार के भोजन करे ॥ २० ॥

यह गृहस्थाश्रम मैंने संक्षेप से कहा अब वानप्रस्थ का धर्म कहती हूं सो तू श्रवण कर॥ २१ ॥

पुत्र के पुत्र को देख कर और अपने देह की अवनति को देख कर मन की शुद्धि के लिये वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करे ॥ २२ ॥

वहां वन की वस्तुओं से निर्वाह करे, तप से शरीर को सुखावे, पृथिवी पर सोवे, ब्रह्मचर्य्य को पालन करता हुवा पितर, देवता, अतिथियों की सेवा करे ॥ २३ ॥

होम करे, तीन काल स्नान करे, जटा और वृक्षों की छाल को धारण करे, सदा योगाभ्यास करे और वनवासियों के साथ स्नेह करे ॥ २४॥

अपने पापों की शुद्धि के लिये और सर्वभूतों के उपकार के लिये यह वानप्रस्थ आश्रम है, इस से आगे अन्तिम आश्रम संन्यासी का है ॥ २५ ॥

अब चतुर्थ आश्रम का स्वरूप और धर्मज्ञ महात्माओं ने जो इस का धर्म कहा है सो तू सुन ॥ २६ ॥

सब के संग का त्याग, ब्रह्मचर्य्य, क्रोध न करना, इन्द्रियों को जीतना, एक स्थान में देर तक न रहना ॥ २७॥

किसी काम को आरम्भ न करना, एक काल भिक्षा के अन्न से भोजन करना, आत्मज्ञान की इच्छा और आत्मा का ध्यान ॥ २८ ॥

यह मैं ने तुझे चतुर्थ आश्रम का धर्म कहा है। अब वर्णों और आश्रमों के साधारण धर्म को तू सुन ॥ २९ ॥

सत्य, शौच, अहिंसा, अनसूया (हसद न करना), क्षमा, आनृशंस्य (किसी को दुःख न देना), अकार्पण्य (उदारता), आठवां सन्तोष, सब वर्णों और आश्रमों के यह संक्षेप से धर्म कहे हैं, इन धर्मों में और अपने २ वर्ण आश्रम के धर्मों में पुरुष सदा स्थित रहें ॥ ३० । ३१ ॥

अपने वर्ण आश्रम के धर्म को उल्लंघन करके जो पुरुष विरुद्ध आचरण करे उसको दण्ड देना राजा का धर्म है ॥ ३२ ॥

अपने धर्म का त्याग करके जो मनुष्य पाप करते हैं उन की उपेक्षा करने वाले राजा के यज्ञ, दान, आदि सब नष्ट होजाते हैं ॥ ३३ ॥

इसलिये अपने धर्म से विरुद्ध आचरण करने वाले पुरुषों को राजा यत्न से दण्ड देकर अपने २ कर्मों में स्थापन करे ॥ ३४ ॥

अलर्क ने कहा हे मातः! अब तुम मुझे गृहस्थ पुरुषों के वे कर्तव्य बतलाओ जिन के न करने से घर में दुःखों का बन्ध होता है और करने से मनुष्यों का उपकार होता है ॥

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

मन्दालसोवाच-

वत्स ! गार्हस्थ्यमादाय नरःसर्वमिदं जगत् ।
पुष्णाति तेन लोकांश्च स जयत्यभिवाञ्छितान् ॥ १ ॥
पितरो मुनयो देवा भूतानि मनुजास्तथा ।
कृमिकीटपतङ्गाश्च वयांसि पशवोऽसुराः ॥ २ ॥
गृहस्थमुपजीवन्ति ततस्तृप्तिं प्रयान्ति च ।
मुखं चास्य निरीक्षन्ते अपि नो दास्यतीति वै ॥ ३ ॥
सर्वस्याधारभूतेयं वत्स ! धेनुस्त्रयीमयी ।
यस्यां प्रतिष्ठितं विश्वं विश्वहेतुश्च या मता ॥ ४ ॥
ऋक्पृष्ठासौ यजुर्मध्या सामवक्त्राङ्गिरोऽधरा ।
इष्टापूर्तिविषाणा च साधुसूक्ततनूरुहा ॥ ५ ॥
शान्तिपुष्टिक्षीरघृता वर्णपादप्रतिष्ठिता ।
आजीव्यमाना जगतां साक्षया नापचीयते ॥६ ॥
स्वाहाकारस्वधाकारौ वषट्कारश्च पुत्रक !।
हन्तकारस्तथाचान्यस्तस्याः स्तनचतुष्टयम् ॥ ७ ॥
स्वाहाकारस्तनं देवाः पितरश्च स्वधामयं ।
मुनयश्च वषट्कारमुपजीवन्ति तत्स्तनम् ॥ ८ ॥
हन्तकारं मनुष्याश्च पिबन्ति सततं स्तनम् ।
एवमाप्याययत्येषा वत्स ! धेनुस्त्रयीमयी ॥ ९ ॥
तस्या उच्छेदकर्त्ता च यो नरोऽत्यन्तपापकृत् ।
स तमस्यन्धतामिस्रे तामिस्रे च निमज्जति ॥ १० ॥
यश्चेमां मानवो धेनुं स्वैर्वत्सैरमरादिभिः ।
पाययत्युचिते काले स स्वर्गायोपद्यते ॥ ११ ॥
तस्मात्पुत्र ! मनुष्येण देवर्षिपितृमानवाः ।
भूतानि चानुदिवसं पोष्याणि स्वतनुर्यथा ॥ १२ ॥

अर्थः-हे पुत्र ! गृहस्थाश्रम में स्थित होकर मनुष्य सारे जगत् को पालता है उस से वाञ्छित सुखों को प्राप्त होता है ॥ १ ॥

पितर, मुनि, देवता, अन्य जीव, मनुष्य, कृनि कीट, पतंग, पक्षि और पशु गृहस्थ ही से जीविका पाते हैं उसी से तृप्ति को प्राप्त होते हैं इस के मुख को देखते रहते हैं कि हमें देवेगा ॥ २, ३ ॥

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

हे पुत्र ! वेद रूपी गौ सब का आधार है जिस में सारा जगत् स्थित है और जो जगत् का कारण है ॥ ४ ॥

ऋग्वेद जिसकी पीठ, यजुर्वेद जिसका पेट है साम वेद मुख के स्थान और अथर्व वेद ओष्ठों के स्थान है, इष्ट पूर्त्त यज्ञ सींग हैं, सूक्त बाल (लोम) शान्ति दुग्ध और पुष्टि जिसका घृत है, वर्ण रूपी पादों पर स्थित है सारे जगत् को जीवन देती हुई भी दुर्बल नहीं होती ॥ ५ । ६ ॥

स्वाहाकार, स्वधाकार, वषट्कार, हन्तकार, यह चार उसके स्तन हैं ॥ ७ ॥

स्वाहाकार स्तन को देवता, स्वधाकार को पितर और वषट्कार को मुनि पीते हैं ॥ ८ ॥

हन्तकार रूपी स्तन को मनुष्य पीते हैं अर्थात् देव पूजा स्वाहा शब्द से, पितृ पूजा स्वधा शब्द से, मुनि पूजा वषट् शब्द से होती है अन्य सामान्य मनुष्यों को जो अन्नादि दिये जाते हैं वे हन्त शब्द से दिये जाते हैं इस प्रकार वेद रूपी धेनु सब को तृप्त कर रही है ॥ ९ ॥

जो पुरुष उसका उच्छेद (वेद मार्ग का भ्रंश) करता है वह अत्यन्त पापी है अन्धतामिस्र नाम नरक अर्थात् अज्ञान प्रधान योनियों को प्राप्त होता है॥ १० ॥

जो पुरुष इस धेनु से देवादि बछड़ों को समय २ दूध पिलाता है वह स्वर्ग (सुख) को प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

इसलिये हे पुत्र ! गृहस्थ को चाहिये कि प्रतिदिन देवता, ऋषि, पितर और मनुष्यों को अपने शरीर समान पाले ॥ १२ ॥

तथाच-एवं पुत्र ! गृहस्थेन देवताः पितरस्तथा ।
सम्पूज्या हव्यकव्याभ्यामन्नेनातिथिबान्धवाः ॥ १॥
भूतानि भृत्याः सकलाः पशुपक्षिपिपीलिकाः ।
भिक्षवो याचमानाश्च ये चान्ये वसता गृहे ॥ २ ॥
सदाचारवता तात ! साधुना गृहमेधिना ।
पापं भुङ्क्ते समुल्लङ्घ्य नित्यनैमित्तिकी क्रियाः ॥ ३ ॥

हे पुत्र ! घर में रहने वाले गृहस्थ को चाहिये कि सदाचारी और साधु (परोपकारी) बन कर नित्य उत्तमोत्तम अन्नों (भोजनों) से देवता, पितर, अतिथि, सम्बन्धि, सेवक, पशु, पक्षी, चींउटी पर्य्यन्त जीवों की और इस के घर में जो संन्यासी भिक्षा लेने आये हों उनकी नित्य पूजा करे जो गृहस्थ नित्य (सन्ध्या वन्दनादि) नैमित्तिक (गर्भाधानादि) कर्मों को त्याग कर भोजन करता है वह पाप करता है ॥ १, २, ३ ॥ अलर्क ने कहा हे मातः! आप ने नित्य नैमित्तिक कर्म बतलाये अब मैं सदाचार सुनना चाहता हूं जिसके करने से पुरुष इस लोक और परलोक में सुख पाता है ॥ मातोवाच-

गृहस्थेन सदा कार्य्यमाचारपरिपालनम् ।
नह्याचारविहीनस्य सुखमत्र परत्र वा ॥ १ ॥

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

यज्ञदानतपांसीह पुरुषस्य न भूतये ।
भवन्ति यः सदाचारं समुल्लङ्घ्य प्रवर्त्तते ॥ २ ॥
दुराचारोहि पुरुषो नेहायुर्विन्दते महत् ।
कार्यो यत्नः सदाचार आचारो हन्त्यलक्षणम् ॥ ३ ॥
तस्य स्वरूपं वक्ष्यामि सदाचारस्य पुत्रक !।
तन्ममैकमनाः श्रुत्वा तथैव परिपालय ॥ ४ ॥
त्रिवर्गसाधने यत्नः कर्त्तव्यो गृहमेधिना ।
तत्संसिद्धौ गृहस्थस्य सिद्धिरत्र परत्र च ॥ ५॥
पादेनार्थस्य पारत्र्यं कुर्यात् सञ्चयमात्मवान् ।
अर्धेन चात्मभरणं नित्यनैमित्तिकान्वितम् ॥ ६ ॥
पादञ्चात्मार्थमायस्य मूलभूतं विवर्धयेत् ।
एवमाचरितः पुत्र ! अर्थः साफल्यमर्हति ॥७.॥
तद्वत् पापनिषेधार्थं धर्मः कार्यो विपश्चिता ।
परत्रार्थं तथैवान्यः काम्योऽत्रैव फलप्रदः ॥ ८ ॥
प्रत्यपायभयात्काम्यस्तथान्यश्चाविरोधवान् ।
द्विधा कामोपि गदितस्त्रिवर्गस्याऽविरोधतः ॥ ९ ॥
परस्परानुबन्धांश्च सर्वानेतान्विचिन्तयेत् ।
विपरीतानुबन्धांश्च धर्मादींस्तान् शृणुष्व मे ॥ १० ॥
धर्मो धर्मानुबद्धार्थो धर्मो नात्मार्थबाधकः ।
उभाभ्यां च द्विधा कामस्तेन तौ च द्विधा पुनः ॥ ११ ॥
ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत् ।
समुत्थाय तथाचम्य प्राङ्मुखो नियतः शुचिः ॥ १२ ॥
पूर्वां संध्यां सनक्षत्रां पश्चिमां सदिवाकराम् ।
उपासीत यथान्यायं नैतां जह्यादनापदि ॥ १३ ॥
असत्प्रलापमनृतं वाक्पारुष्यं च वर्जयेत् ।
असच्छास्त्रमसद्वादमसत्सेवाञ्च पुत्रक ! ॥ १४ ॥
सायं प्रातस्तथा होमं कुर्वीत नियतात्मवान् ।
नग्नां परस्त्रियं नेक्षेत निन्दां कुर्यान्न कस्यचित् ॥ १५ ॥
पितृदेवमनुष्याणां भूतानां च तथार्चनम् ।

SGDF

कृत्वा विंभवतः पश्चाद् गृहस्थो भोक्तुमर्हति ॥ १६ ॥
उपयातादृते दोषं नान्यस्योदीरयेद्बुधः ।
प्रत्यक्षलवणं वर्ज्यमन्नमत्युष्णमेव च ॥ १७ ॥
गुरूणामासनं देयमभ्युत्थानादि सत्कृतम् ।
अनुकूलं तथालापमभिवादनपूर्वकम् ॥ १८ ॥
पन्था देयो ब्राह्मणानां राज्ञो दुःखातुरस्य च ।
विद्याधिकस्य गुर्विण्या भारार्त्तस्य यवीयसः ।
मूकान्धबधिराणाञ्च मत्तस्योन्मत्तकस्य च ॥ १९ ॥
उपानद्वस्त्रमाल्यादि धृतमन्यैर्न धारयेत् ।
उपवीतमलङ्कारं करकञ्चैव वर्जयेत् ॥ २० ॥
चतुर्दश्यां तथाष्टम्यां पञ्चदश्यां च पर्वसु ।
तैलाभ्यङ्गं तथा भोगं योषितश्च विवर्जयेत् ॥ २१ ॥
परदारा न गन्तव्याः पुरुषेण विपश्चिता ।
इष्टापूर्त्तायुषां हन्त्री परदारगतिर्नृणाम् ॥ २२ ॥
न हीदृशमनायुष्यं लोके किञ्चन विद्यते ।
यादृशं पुरुषस्येह परदाराभिमर्षणम् ॥ २३ ॥
अध्येतव्या त्रयी नित्यं भवितव्यं विपश्चिता ।
धर्मतो धनमाहार्यं यष्टव्यञ्चापि यत्नतः ॥ २४ ॥
यच्चापि कुर्वतो नात्मा जुगुप्सामेति पुत्रक ! ।
तत्कर्त्तव्यमशङ्केन यन्न गोप्यं महाजने ॥ २५ ॥
एवमाचरतो वत्स! पुरुषस्य गृहे सतः ।
धर्मार्थकामसम्प्राप्त्या परत्रेह च शोभनम् ॥ २६ ॥

अर्थ– हे पुत्र ! गृहस्थ को सदा आचार की पालना करनी चाहिये आचार हीन पुरुष को न इस लोक में सुख होता है और न परलोक में ॥ १ ॥

जो पुरुष सदाचार का त्याग करता है उस के किये हुवे यज्ञ, दान, तप कल्याणकारी नहीं होते ॥ २ ॥

दुराचारी पुरुष दीर्घायु नहीं होता एवं सदाचार में यत्न करना चाहिये सदाचार बुरे लक्षणों को दूर कर देता है ॥ ३ ॥

हे पुत्र ! मैं तुझे सदाचार का स्वरूप बतलाती हूं । तू एकमन होकर सुन और उसी प्रकार उनका पालन कर ॥ ४ ॥

SGDF

गृहस्थ को धर्म, धन और काम इन तीनों की सिद्धि में यत्न करना चाहिये तीनों की सिद्धि से गृहस्थों को इस लोक और परलोक में सिद्धि है ॥ ५ ॥

अपने आय के चतुर्थांश से परलोक का साधन जो धर्म उसका सञ्चय करे और आधे से नित्य नैमित्तिक कर्म करता हुवा कुटुम्ब का पालन करे ॥ ६ ॥

आय के चतुर्थांश का सञ्चय करता हुवा उस सञ्चित मूल धन को बढ़ाता रहे। हे पुत्र ! इस प्रकार वर्त्तने वाले पुरुष का धन सफल होता है ॥ ७ ॥

उसी प्रकार पापों को दूर करने के लिये और परलोक में सहायता के निमित्त बुद्धिमान् पुरुष धर्म करे इस लोक में फल सिद्धि के लिये सकाम कर्म भी करने चाहियें ॥ ८ ॥

त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, क़ाम) के साथ विरोध न होने से सकाम कर्मों को दो प्रकार का कहा है एक जो विरोध के भय से अर्थात् भीड़ पड़ने पर किया जावे और दूसरा जो विना विरोध के किया जावे ॥ ९ ॥

धर्म, अर्थ, काम, इन तीनों के परस्पर सम्बन्धी बातों को सोचे जिस प्रकार उनका परस्पर सम्बन्ध होना है वह तू सुन ॥ १० ॥

धर्म ऐसा करे जो धर्मानुकूल धन का पैदा करने वाला हो, ऐसा धर्म न करे जो अपने धन को हानि पहुंचाने वाला हो, धर्म और धन इन दोनों से युक्त काम को भोगे और काम से युक्त धर्म और धन को पैदा करे ॥ ११ ॥

ब्राह्म मुहूर्त्त में जागकर धर्म और अर्थ को सोचे तदनु उठकर स्नान कर पवित्र होकर पूर्व की ओर मुख करके आचमन करे ॥ १२ ॥

पूर्व सन्ध्या तारों के देखते हुए और पश्चिम सन्ध्या सूर्य्यास्त से आरम्भ करके नियम से उपासना करे, बड़े भारी दुःख के विना सन्ध्या का कभी त्याग न करे ॥१३॥

नीच पुरुषों से वार्त्तालाप न करे झूट और कठोर वचन न बोले, असत्य ग्रन्थ न पढ़े, झूठा झगड़ा और नीच पुरुषों की सेवा त्यागे ॥ १४ ॥

सायं प्रातः नियम से होम करे, परस्त्री को नग्न न देखे और किसी की निन्दा न करे ॥ १५ ॥

यथाशक्ति पितर, देवता और अन्य मनुष्यों की पूजा करके गृहस्थ को भोजन करना चाहिये ॥ १६ ॥

यावत् प्रबल कष्ट न पहुंचे तावत् दूसरे का दोष न बतलावे। केवल लवणमय (नमकीन) और उष्ण भोजन न करे ॥ १७ ॥

जब गुरु आवें तो उठकर आदर से आसन देवे और प्रणाम पूर्वक (अर्थात् “ नमस्ते ” कहकर) मृदु वचन बोले ॥ १८ ॥

ब्राह्मण, राजा और दुःखिया उनके लिये मार्ग छोड़देवे। विद्वान्, गर्भिणी और शिर पर भार लिये हुवे पुरुष, गूङ्गा, अन्धा, बधिर और उन्मत्त यह वय में छोटे भी हों तो उनके लिये रास्ता छोड़देवे ॥ १९ ॥

जूता, वस्त्र, माला, जनेऊ, आभूषण, घट, यह अन्य के वर्त्ते हुवे न वर्त्ते ॥ २० ॥

चतुर्दशी, अष्टमी, पौर्णमासी और अमावस्या में तैलमर्दन और स्त्रीसङ्ग त्याग देवे ॥ २१ ॥

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

बुद्धिमान् पुरुष कभी परस्त्री सङ्ग न करें, परस्त्री सङ्ग, पुरुषों के यज्ञ, दान और आयु का नाशक है ॥ २२ ॥

लोक में आयुनाशक ऐसा अन्य कर्म नहीं है जैसा परस्त्री सङ्ग ॥ २३ ॥

प्रतिदिन वेद को पढ़े, धर्म पूर्वक धन उपार्जन करे और यत्न पूर्वक यज्ञ करे ॥२४॥

जिस काम को करते हुवे आत्मा में जुगुप्सा (घृणा) न हो और जो कर्म महात्माओं के सन्मुख छिपाना न पड़े उसको निश्शङ्क होकर करे ॥ २५ ॥

हे पुत्र ! एवं विध सदाचार करते हुवे का धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति से इस लोक और परलोक में सदा यश होता है ॥ १६ ॥

इस प्रकार अलर्क की माता ने उसे अनेक धर्मशास्त्र और नीति शास्त्र पढ़ादिये ॥

माता से सुशिक्षित होकर पिता के सामने ही जब राज्य के बड़े २ काम करने लग गया तो राजा कुवलयाश्व अलर्क को राज्य दे तपोवन की यात्रा को उद्यत हुवे। पति के साथ मन्दालसा ने सोचा कि तीन पुत्रों को तो मैंने ब्रह्म विद्या का उपदेश किया जिस से वह मुक्ति को प्राप्त होंगे, अलर्क को गृहस्थ धर्म ही का उपदेश किया है जिस से वार २ जन्म मरण होते हैं, मन्दालसा का दूध पीकर क्या अलर्क अन्य माता का दूध पिवेगा, यह सोचकर एक पत्र पर एक उपदेश लिखकर बाजूबन्द में मढवाया और वन को चलते समय अलर्क को देकर कहा कि " हे पुत्र ! इस को भुजा में पहन लो, इस में एक सत् उपदेश है जब तुझे गृहास्थश्र में कोई असह्य कष्ट आवे तो इस में से पत्र निकाल कर पढ़लेना, तेरा कष्ट दूर हो जायगा, " यह कह कर मन्दालसा अपने पति के साथ वन को चली गई ॥

पिता के चले जाने पर, अलर्क ने भी न्याय से प्रजा का पालन किया, अनेक प्रकार के यज्ञ किये, धर्मात्मा और महात्मा पुत्र उत्पन्न किये, धर्म के अविरोध से अनेक विषयों को भोगते हुए अलर्क के वृद्धावस्था में भी वैराग्य उत्पन्न न हुवा ॥

पृथ्वी में भ्रमण करते हुए सुबाहु ने जब अलर्क की ऐसी दशा सुनी तो उस ने मन में सोचा, न जाने माता ने किस कारण इसे ब्रह्म विद्या का उपदेश नहीं किया, इस वृद्धावस्था में भी यदि इसने गृहस्थ का त्याग नकिया तो फिर उस को जन्म मरण के बन्धन में आना पड़ेगा। इस समय यह भोगों में आसक्त है उपदेश इस को फल नहीं करेगा, इसे कोई दुःख पहुंचाना चाहिये क्योंकि दुःख से वैराग्य होजाया करता है, यह सोचकर काशिराज से मिलकर कहा कि " हे राजन् ! मैं राजा कुललयाश्व का पुत्र हूं, पिता के वनवास समय मैं घर में नहीं था इसलिये पिता ने छोटे पुत्र अलर्क को राज्य दे दिया,राज्य का अधिकारी मैं हूं, तू मुझे सहायता देवे तो मैं युद्ध करके अपना राज्य प्राप्त करलूं " काशिराज ने सहायक होना स्वीकार करके अलर्क के पास अपना दूत भेजा ।

दूत ने जाकर राजा अलर्क से कहा कि काशीराज की आज्ञा है कि " राज्य सुबाहु को देदे नहीं तो शस्त्रबल से राज्य दिलाया जावेगा " ॥

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

अलर्क ने कहा " कि मैं भय से राज्य नहीं दे सकता भाई को यदि राज्य की इच्छा है तो वह मेरे से आकर मांगे मैं उसकी जीविका के लिये राज्य का एक बड़ा भाग उस को दे दूंगा ॥

दूत ने कहा कि " सुबाहु क्षत्रिय है। वह मांग कर नहीं राज्य लेवेगा, इसलिये या·तो युद्ध कर या उसकी शरणागत हो । राजा अलर्क ने युद्ध करना स्वीकार कर लिया। दोनो राजाओं की सेनाओं में चिर काल तक युद्ध होता रहा, एक वार राजा अलर्क सेना समेत दुर्ग (किले) में घिर गया, दुर्ग के भीतर जो अन्नादि सामग्री थी जब बहुत ख़र्च होगई तो अलर्क को बहुत शोक हुवा । एक दिन चिन्ता करते २ स्मरण आया कि माता ने मुझे जो भूषण दिया है उसको तोड़कर तो देखूं, जब देखा तो उस में से यह दो श्लोक निकले:—

सङ्गः सर्वात्मना त्याज्यः सचेत्त्यक्तुं नशक्यते ।
ससाद्भिः सह कर्त्तव्यः सतां संगो हि भेषजम् ॥ १ ॥
कामः सर्वात्मना हेयो हातुं चेच्छक्यते न सः ।
मुमुक्षां प्रति कर्त्तव्यः सैव तस्यापि भेषजम्॥ २ ॥

अर्थः— सर्वथा संग का त्याग करना चाहिये यदि नहीं कर सकते तो सत्पुरुषों का सङ्ग करना चाहिये क्योंकि सत्सङ्ग ही सङ्गरूपी रा । की औषधि है ॥ १ ॥

सर्वथा काम का त्याग करना चाहिये यदि नहीं कर सकते तो मुमुक्षा के प्रति काम करना चाहिये क्योंकि मुमुक्षा ही काम रोग की औषध है ॥ २ ॥

इन श्लोकों को पढ़कर अलर्क को निश्चय होगया कि दुःखों का मूल सङ्ग है और सङ्ग का त्याग सत्सङ्ग ही से होता है इसलिये सत्सङ्ग करना चाहिये यह निश्चय होते ही युद्ध का भार मन्त्रियों पर डाल महात्मा दत्तात्रेय जी के पास जा प्रणाम कर, कहा कि " हे ब्राह्मण ! मैं संसार के दुःखों से दुखित होकर आप की शरण में आया हूं, कृपा करके मेरे दुःखों को दूर कीजिये । राजा के प्रश्न को सुन कर ऋषि ने कहा " मैं आज ही तेरे दुःखों को दूर कर देता हूं । तू बतला कि तुझे क्या दुःख है ?॥

इस वचन को सुनकर राजा बोला कि "हे भगवन् ! विचार कर देखता हूं तो कोई भी दुःख नहीं है केवल ममता ही से दुःख प्रतीत हो रहा है ॥

ऋषि ने कहा कि " निःसन्देह जिस २ वस्तु में मम (मेरा) भाव होता है उस२ वस्तु के वियोग वा वियोग की सम्भावना से पुरुष को दुःख होता है जिस २ वस्तु में मम भाव·निवृत्त होता है उस २ वस्तु के वियोग से किसी प्रकार का भी दुःख नहीं होता इसलिये हे राजन् ! वस्तु मात्र से ममता का त्याग कर सर्व दुःख निवृत्त हो जावोगे" ।

यह कह कर ऋषि ने राजा को योग के साधन बतलाए, राजा के चित्त को शान्ति हुई उसी समय ऋषि को प्रणाम करके कहा "हे भगवन् ! काशिराज के बल और पराक्रम को धन्यवाद है जिस के भय से आज संग दोष के हरने वाला आप का संग मुझे मिला आप के चरणों को धन्यवाद है आप के वचन मेरे चित्तमें

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

स्थित हो गये हैं, सुबाहु, तथा काशिराज इन दोनों को उपकारी समझता हूं जिन की कृपा से आज आप का दर्शन मिला आप के वचनों से मेरा अज्ञान दूर होगया है आप की आज्ञा से दुःख रूपी वृक्षों के वन इस गृहस्थाश्रम को त्याग कर संन्यास आश्रम को धारण करना चाहता हूं"।

दत्तात्रेय महाराज ने कहा "हे राजन् ! ममता और अहंकार को त्याग करके विचर परमात्मा तेरी सहायता करेंगे"।

इस प्रकार ऋषि से आज्ञा पाकर राजा वहां पहुंचा जहां सुबाहु और काशिराज स्थित थे और कहा "हे काशिराज ! जिस राज्य के लिये तू युद्ध कर रहा है मैं ने उसको त्याग दिया है तू ग्रहण कर वा सुबाहु को देदे मुझे इस राज्य से कोई प्रयोजन नहीं है"

काशिराज ने विस्मित होकर कहा "हे अलर्क ! तेरी सेना का अभी पराजय नहीं हुवा क्या कारण है कि बल के होते हुवे भी तू राज्य का परित्याग करता है" अलर्क ने कहा महात्मा दत्तात्रेय जी के उपदेश से मेरे चित्त से शत्रु मित्र का भाव जाता रहा है मैं विना कारण युद्ध से प्रजा का नाश नहीं चाहता हूं मैं अब गृहस्थाश्रम को त्याग कर चतुर्थाश्रम को ग्रहण करके योगाभ्यास करूंगा"।

अलर्क के इस वचन को सुन सुबाहु, ने उठकर उसको छाती से लगालिया और काशिराज से कहा कि "हे राजन् ! मेरा प्रयोजन सिद्ध हुवा मैं अब वन को जाता हूं परमात्मा तेरा कल्याण करे तूने मेरा बड़ा भारी उपकार किया" काशिराज ने कहा "हे सुबाहो! तेरा कौनसा प्रयोजन सिद्ध हुवा तूने अलर्क से राज्य लेने के लिये यह युद्ध कराया था अब तू इस को क्यों नहीं ग्रहण करता" सुबाहु ने कहा "हे राजन् ! मेरी माता ने दूध के साथ ही अपने पुत्रों के मुख में ज्ञान डाला था मेरे दो भाई जीवन्मुक्त होगये हैं यह तीसरा भाई संसार के भोगों में फंसा हुवा था उसके छुडाने के लिये यह प्रयत्न किया था सो सिद्ध हुवा तू आनन्द से दोनों राज्यों को भोग मुझे राज्य की आवश्यकता नहीं है" दोनों भाइयो के इस चरित्र को देख कर सुबाहु, के सदुपदेशों से अहंता और ममता का त्याग कर अपने पुत्र को अपना राज्य और अलर्क के पुत्र को अलर्क का राज्य दे काशिराज भी वन को चला गया ॥

इस प्रकार मंदालसा देवी के सदुपदेशों से बहुत से पुरुषों का उद्धार हुवा ॥

इत्योम् ॥

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

प्राचीन वैद्यक सम्बन्धी शिक्षा तथा गुणकारी औषध

श्रीमान् कविराज कविरत्न पं० सीताराम जी शास्त्री वैद्यराज
रावलपिण्डी शहर लिखित

चन्द्रप्रभा वटि

कचूर, वच, नागरमोथा, चिरायता, देवदारू,हलदी, अतीस, दारुहलदी, पिपलामूल, चित्ता, तिवी, दन्ती, तेजपत्र, दालचीनी, मोटी इलायची, वंसलोचन, सब दो २ तोले धनिया, (त्रिफला) हरड़ बहेड़ा, आंवला, चव्य, वायबिडङ्ग, गजपीपल, सोहनमक्खी की भस्म, सोंठ, पिपली, काली मरिच, यवक्षार, सज्जीक्षार, सोंचललवण, सैंधालवण, बिडलवण, यह सब चार २ माशे लोह भस्म ४ तोला, कुंज्जा मिश्री ८ तोला * शुद्ध शिलाजीत १६ तोला, शुद्ध * गूगल १६ तोला।

इन सब औषधियों को मिलाकर कूट लेवे और एक एक माशे की गोली बना लेवे।

अनुपान–एक माशे से दो माशे तक केवल जल वा दूध के साथ खाई जाती है

गुण–यह वटि नियम पूर्वक सेवन करने से २० प्रकार के प्रमेहों, ८ प्रकार के मूत्र कृच्छ्र दोषों,४प्रकार की पथरियों, १३ प्रकार के मूत्राघात दोषों को नाश करती है, अन्त्रवृद्धि, पाण्डुरोग, कामलारोग, स्वांस, खांसी, मन्दाग्नि, अरुचि रक्तदोष,वात पित्त कफ से उत्पन्न हुई व्याधि अर्थात् सन्निपात दोष के दूर करने में विशेषतया लाभदायक है। बलकारक और रसायन है। इस के सेवम से पुरुष रोगों से मुक्त होते हैं ॥

---

* शिलाजीत को लोहे के पात्र में जल डालकर उष्ण करले और उस के मृत्तिकादि दोष दूर करके शुद्ध कर लें अर्थात् उसी जल में सुबेरे धूप में रखकर सायं समय ऊपर २ के जल को निथार लेवें कि जिस से शिलाजीत का जल निकल आवे और केवल मृत्तिका नीचे रह जावे, पुनः उसे दूसरे पात्र में डालें इसी प्रकार बारम्बार करें, एक मास में शिलाजीत बहुत अच्छी शुद्ध हो जावेगी ॥

* त्रिफले का काढ़ा बनाकर छानलेवें और फिर उस में गूगल उबालकर शुद्ध करलें ॥

(नोट) 'चन्द्र प्रभावटि वैद्यक की प्रसिद्ध प्रामाणिक औषध है और उक्त शास्त्री जी के औषधालय से बनी बनाई एक मास के सेवन के लिये ३) में मिल सकती है ॥

गर्भिणी का प्रतिमास कर्तव्य

प्रथम मास में गर्भिणी शुष्क पदार्थ न खावे,हलके और ठण्डे पदार्थों का सेवनकरे दोनों समयक्षुधानुसारठीकसमय पर जितना पचा सके उतना भोजनकरे, उष्ण दूध ठण्डा करके पीवे ॥

दूसरा मास–प्रथम मासानुसार बर्ते परन्तु दुग्ध का सेवन इस प्रकार करे कि दूध आध सेर जल डेढ पाव मुनक्का ६ दाने सौंफ़ जावत्री मुलहटी सब छः छः माशे डालकर दूध को उबाल ले ज-

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

व केवल दूध रह जाय तो मीठा मिलाकर पी लेवे बासी रोटी वा कोई बासी पदार्थ सर्वथा त्यागे ॥

तीसरा मास-प्रथम मासानुसार वर्ते , दूध में थोड़ा सा घी डालकर पीवे परन्तु जितना पचसके।

चौथा मास- दूध में मुलहटी डालकर पाव और पाचन शक्त्यनुसार मक्खन भी खावे।

पांचवां मास-घी और दूध का सेवन करे और विशेषकर पुराने चावलों का आहार अधिक उपयोगी है॥

छठे और सातवें मास-में दूसरे महीने के सदृश दूध ओषधियों के साथ तैय्यार करके किञ्चित् घृत डालकर पीवे ॥

आठवां मास-दूध में घृत मिलाकर पीवे- इस में विशेषकर हलका भोजन और एकान्त में बैठकर ईश्वर का ध्यान करे ॥

नवां मास- इस मास के दूसरे दिन स दशवें मास तक प्रसव काल है , रूक्ष, वातकारी, भारी , बहुत मरिच और अति लवणयुक्त पदार्थोंका त्याग करे और भोजन में बहुत मीठा भी न खावे , भयंकर कथाओं का सुनना विशेषकर हानिकारक है इस मास में अजीर्ण कभी न होना चाहिये ॥

गर्भिणीका सामान्य कर्त्तव्य।

बहुत भारी और भयानक शारीरिक चेष्टाओं का परित्याग करे लाल वस्त्र न पहिने, घोड़े आदिक की विषम सवारी भी न करे, मादक द्रव्य तथा मांस का सर्वथा परित्याग करे यहांतक कि उनकी गन्ध भी न लेवे, कुरूप और भयजनक रूपों से पृथक् रहे, श्वेत और स्वच्छ वस्त्र धारण करे, अति प्रसन्न और पवित्र रहे मैथुन, रात्रि में जागना, अत्यन्त शोक, खून निकलवाना मल मूत्रादि वेगों का रोकना, बहुत देरतक घुटनों के बल बैठना, इत्यादि क्रियाओंको सदा त्यागे, क्रोधजनक बातोंकासुनना, स्मशानमें एकला जाना, बहुत ऊंचा बोलना, नष्ट गर्भ की बातें सुनना, तैल मर्दन अथवा उबटन लगाना, बहुत ऊंची खाट पर सोना और मृत्तिका आदि खाना छोड़ देवे ॥

(नोट) आयुर्वेद शास्त्रानुसार जो महाशय किसी प्रकार की औषध अथवा सम्मति लेना चाहें तो उक्त पण्डित जी से पत्र व्यवहार करें ॥

SGDF
Sri Gaveshana Digital Foundation

नन्दलाल का गुलक़न्द बनफ़शा

(मुरब्बा बनफ़शा)

अत्युत्तम, स्वादिष्ठ, शीघ्र असर करने वाला, उपहार में देने योग्य ॥

हिमालय के पर्वतों पर ताज़े व उत्तम बनफ़शे से शुद्ध मिश्री में बड़ी सावधानी से केवल सूर्य्य किरण द्वारा वैद्याज्ञानुसार तैय्यार किया गया। कपाल, शरीर तथा पक्काशय की उष्णता, शुष्कत्व, और दुर्बलता के दूर करने में अद्वितीय है। चिरकाल की अजीर्णता चाहे किसी प्रकार की हो अवश्यमेव जाती रहती है। दिमाग़ और दृष्टि बहुत पुष्ट होते हैं, पेट को कोमल और निर्मल रखता है। खून की तेज़ी, पिपासा, सैादा, घबराहट, नज़ला, पीनस, खांसी, पुरानातप, पित्त, छाती वा गले की जलन, दर्द गुरदा, तिल्ली, मूत्र रोग दूर होते हैं, कमज़ोरी में बालकों के लिए विशेषतः आवश्यक है।

मूल्य टिन—	२ पौण्ड	१ पौएड	॥ पौण्ड	। पौएड	महसूल पृथक् ॥
	२)	१-)	॥-)	।-)	

व्यौपारियों के लिये विशेष दर है-शहद ख़ालिस एक वा आध सेर टिनों में बड़ा साफ़ मिलता है ॥

नन्दलाल निज्झड़, चम्बा—पंजाब

प्रशंसा पत्र

—:०:—

श्रीमान् ला० मुन्शीराम जी वकील जलन्धर मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल—मैं ने एक दिन आज़माया निस्संदेह ताज़ा बनफ़शा है अत्यन्त स्वादिष्ट क़ब्ज़ दायमी के लिए मैं ने परीक्षा करके रसायन पाया, अन्य औषधवत् शौच के पश्चात् कमज़ोरी आदि भान नहीं होती ॥

ला० चुन्नीलाल जी एम्० ए० जज लाहौर—अक्सीर का हुक्म रखता है ॥

पं० रामभजदत्त बी० ए० वकील व प्रधान आर्य्य प्र० नि० सभा पंजाब—ख़ालिस बनफ़शे का ख़ालिस मुरब्बा यदि मैं ने देखा तो आपका, मेरी राय में यह एक दुर्लभ वस्तु है ॥

ला० हंसराज जी बी०ए० प्रिंसीपल डी०ए०वी० कालेज लाहौर—मैं ने आपके बनफ़शे का गुलक़न्द दो तीन बार वर्ता है बड़ा खुशगवार और मुफ़ीद है ॥

ला० रौशनलाल जी बी० ए० बैरिस्टर व प्रधान आर्य्यसमाज लाहौर—लाभदायक सिद्ध हुआ ॥

SGDF
Sri Gangadhara Digital Foundation

प्रशंसापत्र ॥

बाबू मेहरचन्द जी बैरिस्टर गुरदासपुर—मैं तस्दीक़ करता हूं कि नन्दलाल निज्झड़ का मुरब्बा बनफ़शा अत्युत्तम है, अजीर्णता और दिमाग़ी रोगों के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ यह अति सावधानी से तैयार किया गया है ॥

बा० रामलाल जी बी० ए० वकील फ़ीरोजपुर—स्वादिष्ट, पाचन, और अन्य रोगों के लिये भी गुणकारी है, बहुत नफ़ीस है ॥

ला० आत्माराम जी भूतपूर्व मंत्री आ० प्र० नि० सभा पंजाब-नर्म जुल्लाब के लिये यह दिलपसंद औषध है ॥

बा० हरभजराय सहगल पेशावरी सेक्रेटरी लोकलफण्ड बन्नूं—दोनों लाभ तो इस में अवश्य हैं अजीर्णता दूर करता और थकान की दशा में दिमाग़ को बल देता है ॥

ला० भगवानदास जी वकील मुज़फ़्फ़रनगर—मुरब्बा बनफ़शा चि को आनन्द देता और कब्ज़ी दूर करता है ॥

बा० बिशाखिरामजी सबइन्सपेक्टर रेलवे बाघर कच्छ (बिलोचिस्तान) आप का बनाया हुआ मुरब्बा बनफ़शा अव्वल दर्जे का आनन्द देने वाला व दिमाग़ को पुष्ट करने वाला है ॥

ला० हरद्वारीलाल जी नारनौल (हांसी) वास्तव में आपका मुरब्बा लाभदायक है ॥

बा० चम्बाराम जी पोस्ट मास्टर जम्मूं—इस में उन से भी अधिक गुण हैं जो आप ने वर्णन किये ॥

हकीम काकाराम जी अफ़सर हिंदी दवाईख़ाना नाभा रियासत-इस कार्य्यालय सम्बन्धी हकीमों को दिखाया सब ने पसंद किया ॥

श्रीमान् राय श्याम बहादुर वकील चपरा—आप के मुरब्बा बनफ़शा से मुझे बड़ा लाभ हुआ ॥

पं० रूपलाल जी बी० ए० लाहौर—निहायत लाभदायक साबित हुआ, कब्ज़ी दूर करने वाला व सिर दर्द हटाने वाला है दिल को ताक़त देता है ॥

"कपास व तिजारत" लाहौर-दिल व दिमाग़ के लिये लाभदायक है ॥

"आर्य्य दर्पण" शाहजहांपुर—नज़र व दिमाग़ की कमज़ोरी और कब्ज़ी को दूर करने में बड़ा मुफ़ीद है ॥

नन्दलाल निज्झड़ चम्बा—पंजाब

SGDF
Sri Gurugobindsingh Digital Foundation